

UNIVERSAL
LIBRARY

OU 180100

UNIVERSAL
LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H 83 / M 67 Var. Accession No. G. H. 1568

Author मिश्र. गंगाप्रसाद - 1

Title विराग - 1. 1. 1 +

This book should be returned on or before the date last marked below

विराग

[प्रगतिशील मौलिक उपन्यास]

लेखक

गंगा प्रसाद मिश्र, एम० ए०, साहित्यरत्न
(संघर्षों के बीच, महिमा, सरोद की गत, नया खून,
बिगुल आदि के रचयिता)

प्रकाशक

हिन्दुस्तानी पब्लिकेशन्स, शाहगंज, इलाहाबाद

दूसरा संस्करण]

जनवरी १९४५

[मू० १।।।]

प्रकाशक—

गया प्रसाद तिवारी, बी० काम०,
अभ्युच्च हिन्दुस्तानी पब्लिकेशन्स,
शाहगंज, इलाहाबाद ।



मुद्रक—

गयाप्रसाद तिवारी, बी. काम
नारायण प्रेस, नारायण बिल्डिंग्स,
शाहगंज, इलाहाबाद ।

स्वर्गीय प्रेमचन्द जी

की

पुण्य स्मृति

को

सादर समर्पित

—
गंगा प्रसाद मिश्र

दो शब्द

पंडित गंगा प्रसाद मिश्र हिन्दी के पाठकों के लिए विल्कुल नये नहीं हैं। उन की कहानियाँ समय-समय पर पत्रों में निकलती रहती हैं। उनका यह पहला उपन्यास है। पं० गंगा प्रसाद मेरे शिष्य हैं। उनकी कृति को आलोचक की दृष्टि से देखना मेरे लिए रुचिकर नहीं। मैं तो उसे प्रीतिभरी दृष्टि से ही देख सकता हूँ। पर इसमें सन्देह नहीं कि उनमें उपन्यासकार के लिए साधन संपन्नता है। वस्तु-विन्यास की पटुता, चरित्र-चित्रण का कौशल, सूक्ष्म पर्यवेक्षण, भाषा की स्वच्छता आदि सब उनमें पर्याप्त मात्रा में विद्यमान हैं; और, निश्चय ही आगे चलकर इनमें पूरी चमक आ जायेगी। मुझे विश्वास है कि गंगा प्रसाद जी की प्रतिभा खूब विकसित होगी और एक दिन उनकी कृतियों में हम कला का सौंदर्य देख सकेंगे। इस शुभ कामना के साथ उनकी यह रचना जगत् के सामने जा रही है।

३०-११-४१
हिन्दी विभाग,
विश्वविद्यालय, लखनऊ

} डाक्टर पीताम्बरदत्त बड़धवाल
एम. ए., डी. लिट., एल-एल. बी.

प्राक्कथन

लगभग सात वर्ष हिंदी कहानी साहित्य की सेवा करते मुझे हो गए। आज मेरा पहला उपन्यास हिन्दी के पाठकों के सन्मुख आ रहा है। इतना मैं कह देना चाहता हूँ कि उनके सन्मुख मैं इसे धड़कते दिल से नहीं रख रहा हूँ। मुझे पूर्ण विश्वास है कि इससे उन का मनोरञ्जन होगा।

‘विराग’ को प्रगतिशील सामाजिक उपन्यास (Socio-political novel) कहा जा सकता है। जैसा इसका कलेवर है, उसके अनुरूप ही इसमें समाज के अधिकाधिक वर्गों का चित्रण नहीं है। किसी हद तक इसमें व्यक्ति प्रधान हो गया है। यथार्थ और आदर्श के बीच के पथ का अनुसरण करने का ही मैंने प्रयत्न किया है, दोनों ही की ज्यादाती मुझे नहीं जँचती। इसका कथावस्तु अथवा चरित्र-चित्रण अधिकतर अनुभूत घटनाओं और व्यक्तियों के आधार पर ही लिखा गया है, आसमान की ओर मुँह उठाकर कल्पना करने की आवश्यकता इसके लिए नहीं पड़ी।

‘विराग’ भारतीय विधवा की कहानी है। यों तो भारतीय विधवा एक निरीह दयनीय प्राणी है, इस उपन्यास में उसका यह रुख भी है, परन्तु यही प्रधान नहीं है, प्रधान है उस अबला का बल और अहमनीय शक्ति। समाज में विधवा को प्रथमदृष्ट

बनाने के साधन पर्याप्त मात्रा में उपस्थित रहते हैं, क्या पता है विराग भी उसी पथ की अनुगामिनी बनती। अचल के उच्च व उज्ज्वल चरित्र के प्रभाव ने ही उसे उन्नति की ओर अग्रसर किया है। मुझसे परिचित दो-चार पाठकों ने इस उपन्यास में अचल में मेरा प्राधान्य देखा है। यों तो लेखक अपने सब पात्रों में ही कुछ न कुछ होता है, शायद पूर्वार्ध के अचल में मैं कुछ आ भी गया हूँ परन्तु अपने इन मित्रों से मैं यह कहूँगा कि पहले वे यह देखें कि शुरू से आखिर तक अचल में मैं कितना नहीं हूँ, तब उन्हें ठीक ठीक पता चन जावेगा कि अचल में मैं कितना हूँ। दुख अचल और विराग दोनों ही का जीवन साथी रहा है, मेरे विचार से वह संसार में अवश्यम्भावी है और मनुष्य की उन्नति में जितना वह सहायक है उतना सुख और भोग नहीं। भारत में इस समय देश पर मर मिटनेवाले स्त्री-पुरुषों की आवश्यकता है, अचल और विराग के चरित्र वैसे ही हैं। यदि इस उपन्यास का पठनपाठन ऐसे कतिपय व्यक्ति पैदा कर सके तो मैं अपने इस उपन्यास के लिखने के श्रम को सार्थक समझूँगा, क्योंकि मैं उपयोगी कला का पक्षपाती हूँ जो भारतीय विचारधारा के अनुरूप ही है। पश्चिम का वह 'कला कला के लिए' वाला सिद्धान्त मुझे वर्तमान भारत की परिस्थितियों के अनुकूल नहीं दिखलाई देता।

इस उपन्यास की भाषा बोलचाल की और सीधी सादी है, शब्द-विन्यास की छटा इसमें नहीं है। सब प्रकार के प्रचलित शब्दों का प्रयोग इसमें हुआ है क्योंकि इसे औसत

दर्जे के पाठक के लिए लिखा गया है। भाषा अथवा कल्पना की उड़ान कुछ भी इसमें ऐसी नहीं हुई जो उस की समझ से परे हो।

इस उपन्यास के लिए 'दो शब्द' लिखने के लिए मैं पूज्य गुरुवर डाक्टर पीताम्बरदत्त जी बड़धवाल का आभारी हूँ और उन्हें हृदय से धन्यवाद देता हूँ। इसके प्रकाशन के साथ 'तरुण' सम्पादक श्री कृष्णानन्दन प्रसाद जी व श्री सत्यजीवन वर्मा 'भारतीय' जी के प्रति कृतज्ञता प्रकाश करना मेरा कर्तव्य है जिनके कारण यह कार्य सम्पन्न हो सका है।

२६-११-४१ }
लखनऊ

गङ्गा प्रसाद मिश्र

द्वितीय संस्करण की भूमिका

उपन्यास क्षेत्र में 'विराग' मेरा प्रथम प्रयास था, फिर भी मुझे यह देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि पाठकों ने उसका बहुत ही अच्छा स्वागत किया है। आलोचकों ने भी इसकी मुक्तकंठ से प्रशंसा की, श्रीयुत डाक्टर रामविलास शर्मा व श्रीयुत प्रकाशचन्द जी गुप्त ने उसे उच्च स्थान दिया, इससे मेरे कलाकार को उत्साह मिला है। अब इसका द्वितीय संस्करण निकलने जा रहा है, इसलिये मैंने इसे फिर से दुहराया है और यत्र तत्र काफी परिवर्तन कर दिये हैं। मुझे आशा है कि अनेक इस नये रूप में 'विराग' हिन्दी प्रेमियों को और भी पसन्द आयेगा।

श्री गया प्रसाद तिवारी जी को मैं इसे प्रकाशित करने के लिये धन्यवाद देता हूँ।

६-१-४५
भाऊलाल बाज्जार,
लखनऊ

}

गङ्गा प्रसाद मिश्र

आवाज सुनकर विराग ने दरवाजा खोला । देखा सामने से गली में स्थानीय बालसभा की टुकड़ी गाती हुई चली आ रही है । सब के सब लगभग नौ और बारह वर्ष के बीच में थे । मुख से तेज टपकता था और हृदय सच्ची भावनाओं से ओतप्रोत था । सब के पहले एक गेहुँवें रंग का बालक बड़े मीठे परन्तु जोरदार स्वर से गाता था :—

“आटा दाल चावल से भोली भर देना जी !”

और फिर सब उसका अनुकरण करते थे । उनके इस सम्मिलित स्वर में हृदय को आकर्षित करने वाली कैसी शक्ति थी ! जिन्हें कांग्रेस के कार्य से सहानुभूति थी वे तो दंते ही थे लेकिन औरों का हृदय भी इस स्वर पर पसीज जाता था । कुछ लड़के सिर्फ गाते ही थे कुछ बड़ी बड़ी चादरों के कोने पकड़े आटा, दाल, चावल और वस्त्र इकट्ठा कर रहे थे ।

मोहल्ले की सब स्त्रियाँ निकल निकल कर अपने दरवाजों पर खड़ी हो गई थीं । एक बोली, “तिरंगे झण्डे वाला गीत गाओ !”

जो लड़का सबके पहले गाता था फौरन ही बोला—“पहले आटा तो लाकर दीजिए !”

यह सुनकर कोई स्वयं ही अन्दर चली गई और किसी ने

वहीं से खड़े-खड़े महरी को आवाज़ लगा दी। सिर्फ़ विराग जैसी की तैसी खड़ी मन में सोचती रही—“इसके मुँह की बनावट मेरे मुरारी से कितनी मिलती है और वैसा ही तेज भी है।” इतने में वह लड़का विराग को वैसे ही खड़ी देखकर उसके पास आया और बोला—“आप भी तो कुछ दीजिए !”

विराग ने ज़रा वनकर कहा—“मैं क्यों देने लगी।”

लड़के को यह बात सुनकर जैसे बड़ा आश्चर्य हुआ, बोला—“क्यों ! आप क्या न देंगी ? यह तो देश के वास्ते माँगा जा रहा है। हमारे हज़ारों गाँवों से आए हुए वालंटियर, अगर आप न देंगी तो खायेंगे क्या ? जब वे भूखे रहेंगे तो विलायती कपड़ों की दूकानों पर धरना कैसे दिया जायगा ? धरना न दिया जायगा तो हमारे देश का रुपया बराबर विलायत न जाता रहेगा। नहीं, यह नहीं हो सकता, आपको कुछ न कुछ ज़रूर देना पड़ेगा।”

विराग ने कहा—“लेकिन, यह मेरा घर जो नहीं है। मैं तो बाहर से आई हूँ। कोई किसी के यहाँ आता है तो आटा-दाल बाँध के थोड़े ही आता है और फिर मुझे मालूम ही कहाँ था कि लखनऊ में अब भले आदमियों के लड़के गली-गली आटा-दाल माँगते फिरते हैं नहीं तो यह भी करती।”

यह कहकर उसने आँचल से अपना मुँह छिपा लिया। उसे बातों में बड़ा मज़ा आ रहा था।

लड़का बोला—“यह आप खूब कह रही हैं। आटा-दाल न सही रुपया पैसा दीजिए, हम लोग वह भी तो लेते हैं।”

विराग ने हँसते हुए एक अठन्नी उसके हाथ पर रख दी ।

लड़का बोला — “कल अपने दफ्तर से आपको इसकी रसीद बनवा के ला दूँगा ।”

“यही मैं भी कहनेवाली थी कि कचालू न उड़ा जाना ।”

इतने में विराग का चचेरा भाई सदन उस लड़के से आकर बोला—“अचल, देख मैंने साढ़े पाँच आने इकट्ठे किए हैं । तूने बहन से कुछ लिया नहीं ?”

अचल ने प्रसन्न होकर उसे अपनी जेब से अठन्नी निकाल कर दिखाई ।

“बहन ने दी है ! अच्छा आओ चलें ।”

विराग बोली—“सदन, आज तुम दिन भर घूमें हो, घर न आओगे ?”

सदन—“अभी तो बहुत कम इकट्ठा हुआ है, आज तो शाम तक ही छुट्टी मिलेगी ऐसा मालूम होता है ।”

अचल बोला—“दश के काम में बाधा नहीं देना चाहिए ।”

विराग ने हँसकर दरवाजा बन्द कर लिया, पर अन्दर जाते ही उसका मन उदास हो गया । बार-बार मन में सोचती थी, ‘इम्तहान के पीछे मुरारी को वहाँ छोड़ आई हूँ पता नहीं छोटी बहू कैसे रक्खें ।’

२

चंचल नेत्रों में लहराता हुआ एक समुद्र, यौवन की स्वाभाविक लाली से फूटे से पड़ते हुए अंग, काले केश और

उन्नत वृत्तस्थल लिए हुए विराग सोलह वर्ष की अवस्था से ही विधवा है। इसलिए नहीं कि उसके भाग्य में ही ऐसा बदा था, इसलिए नहीं कि पण्डित ने मुहूर्त गलत विचार था, बल्कि इसलिए कि उसके विषय में सच पूछा जाय तो तदबीर ही ऐसी की गई थी। क्योंकि इस चारों चरणों से आए हुए कलियुग में तदबीर के सारे किलों पर तदबीर अधिकार जमाए ले रही है और ज्योतिष शास्त्र को गलत साबित हुए तो आज जमाना हो गया। जब से ज्योतिषाचार्यों के लाखों मीन-मेख लगाकर ब्याह पक्के करने पर भी विधवाओं की तादाद सधवाओं की संख्या से बढ़ने का जोरदार प्रयत्न करने लगी।

यह तदबीर थी विराग के संरक्षक चाचा का और सब की भाँति सम्पत्ति के गुण को सर्वश्रेष्ठ गुण समझना। इस प्रकार धन की कसौटी पर कसकर विराग के लिए उसके चाचा ने पुण्यस्थान काशी में एक वर ग्वाज निकाला। लड़के के बारे में सुना गया कि उसका चरित्र कुछ ठीक नहीं है, पर विराग के चाचा ने उसे रईसों का एक आवश्यक गुण बताकर टाल दिया।

अपनी ससुराल काशी में आकर विराग ने पति को ठीक वैसा ही पाया जैसा कि उसके बारे में सुन रक्खा था। अपने पिता की कमाई हुई सम्पत्ति को वह दोनों हाथों से खूब होम करता था। अनगिनतियों लुच्चे और वेश्याएँ उसकी बदौलत गुलछर्रे उड़ाने थे। भाई-भाभियों के समझाने पर हिस्सा बाँट कर देने की धमकी देता था। महीनों विराग से उससे देखा-देखी

न होती थी। नतीजा इसका वही हुआ जिसके लिए सब को डर था। वह एक बड़े ही विषम रोग से ग्रसित होकर चल बसा और विराग सोलह वर्ष की उम्र में एक बच्चा गोद में लिए हुए विधवा हो गई।

विराग विधवा हो गई और उसका बच्चा अनाथ, परन्तु दुनिया का पहिया जैसा का तैसा ही घूमता रहा। लोगों के राग-रंग में कोई फर्क न आया। उसकी जेठानियें अब भी उसी भाँति अठखेलियाँ करतीं। अब भी उनके पति उनके लिए सेन्ट की शीशिऐँ और बेले के गजरे लाने और वे छम-छम करती अपने पति के शयन कक्ष की ओर सुगन्ध उड़ाती चली जातीं। घर का निकृष्ट काम करती हुई विराग के हृदय पर साँप लोट जाता। उसके हृदय की धड़कन की गति तीव्र हो जाती। उसके मष्तिष्क की दशा विकृत हो जाती और वह आठ-आठ आँसू रोती हुई अपने जलते हुए बिछौने पर सारी रात तड़पती रहती। जब तक पति जीवित था कम से कम उसकी प्रतीक्षा का ही सहारा था। रात उसकी राह देखते ही कटती थी। कभी-कभी साक्षात् हो जाने की भी संभावना थी पर अब तो जीवन समाप्त होने पर ही निस्तार था। •

पति की मृत्यु के समय बच्चा दो ही वर्ष का था। उसके खाने पीने और वस्त्र का भी ठीक प्रबन्ध न रह पाता था। विराग देखती कि उसके जेठों के लड़के खूब दूध-जलेबी उड़ाते और सनप्रूफ और ब्लेज़र के कपड़े ढाँटे घूमते, इधर उसका

फूल सा सुकुमार बच्चा पैसे-पैसे की चीज़ के लिए तरस जाता और ठड में सी-सी करता घूमता ।

अपने जीवन के ये पाँच-छः वर्ष विराग ने बड़ी मुश्किल से काटे थे । अब मुरारी आठ वर्ष का हो गया था और अग्रजों स्कूल के तीसरे क्लास में पढ़ता था । उसके ताऊ उसकी पढ़ाई का खर्च सम्हालते थे । स्त्रियाँ घर में इसी के पीछे चखचख लगाए रहती थीं । किसी का रुपये के व्यर्थ फूँके जाने की शिकायत थी और किसी का मुरारी के कूढ़मग्न होने की ।

विराग यह पञ्चायत सुनते-सुनते परेशान हो गई थी । वाक्य-बाणों के चलाने में चतुर उसकी जिठानियों ने उसका हृदय छेद-छेद कर चलनी बना डाला था । उसका मन हाँता था कि अपने मुरारी को लेकर वह कहीं अलग जा बसे और जो कुछ दो तीन हजार का गहना और दो चार सौ रुपया उसके पास पति की देन के स्वरूप में बाकी रह गया था उससे ही अपना गुज़र-बसर करे ।

इन आए दिन आनेवाले संकटों ने विराग की भावना पर बड़ा ज़बर्दस्त प्रभाव डाला था । अकारण ही उसके जीवन का कण्टकाकीर्ण कर देनेवाला यदि इस सृष्टि में कोई ईश्वर है तो उसके ऊपर से उसका विश्वास धीरे-धीरे उठा जा रहा था । वह बैठी मन में सोचा करती, 'माता के गर्भधारिणी होने के पश्चात् ही पिता का स्वर्गवास हो गया और चार वर्ष का छोड़कर माता चल बसी, यह मेरे बचपन के किस पाप का प्रभाव हो सकता था । अपने लड़कपन में कभी चाचा-चाची

की मर्जी के खिलाफ काम नहीं किया, चचेरे भाइयों और बहिनों से कभी ईर्ष्या न की और भूलकर कभी कुचाल न चली। यौवन का आगमन होते ही ब्याह हुआ, और इतना दुष्चरित्र पति मैंने अपनी इस सच्चरित्रता के पुरस्कार-स्वरूप पाया। फिर भी मैंने कभी परपुरुष की ओर दृष्टिपात न किया, सदा उन्हें ही ईश्वर का स्वरूप समझा, लेकिन ईश्वर ने मुझे उससे भी वंचित कर दिया। अब यदि उनकी याद ही में मैं सुखपूर्वक अपना जीवन व्यतीत करना चाहती हूँ तो परमेश्वर इसमें भी तो बाधा देता है। मैं कैसे समझूँ कि ईश्वर न्यायशील है? मेरे जीवन का कोई कार्य भी तो उसके दयासागर दीनबन्धु और भक्तवत्सल होने का प्रमाण नहीं है। मुझे तो उसने सच्चे मार्ग पर चलने के बदले में दुख ही दिया है फिर मैं किस लिए उसकी तारीफों के पुल बाँधूँ? क्योंकि उसे करुणा-सिन्धु विशेषण से विभूषित करूँ? मेरे लिए तो वह पाषाण-हृदय, निष्ठुर और अन्यायी ही है। जिन्होंने उससे ऐश करने का लाखों की दौलत पाई है, वे उसको ऋद्धि-सिद्धि-दायक कहें, जिनकी, अनगिन्ती पाप कर्म करने पर, नित्य नए छलछन्द रचने पर, गरीबों और असहायों को व्यर्थ सताने पर, वृद्धि हांती जाती है वे उसके गणिका और अजामिल को तारने की कथाओं को सच्ची घटनाएँ समझें पर जिनको होम करने के बदले में हाथ जलने का प्रसाद मिलता है वे कैसे उसके गुण गावें? उनका ईश्वर की प्रशंसा करना आडम्बर और लोंक-दिखावा से खाली नहीं हो सकता।'

३

शान-शौकत, फ़जूलखर्ची, लोक दिखाया और बाह्य आडम्बर. जो कि आधुनिक भारत को पतन की ओर ले जाने में विशेष रूप से सहायक सिद्ध हुए हैं—अचल के खानदान के खास गुण थे ।

बरमा की लड़ाई खूब ज़ारों पर छिड़ी हुई थी । अंग्रेज़ी सेना को विजय का कोई मार्ग न सूझता था और रसद धीरे-धीरे कम हो रही थी । पीछे लौटने में विशेष कुशल न मालूम होता था, इसलिए अंग्रेज़ी सेना-नायक किंकर्तव्यविमूढ़ हो रहे थे ।

ऐसे कठिन समय में जब कि सिपाहियों को अपने पड़ाव के बाहर क़दम रखने की मनाई थी एक छोटी सी टुकड़ी का नायक अपने सिपाहियों सहित कानून का उल्लंघन करके पड़ाव के बाहर चुपचाप निकल गया और बरमा के राजा के किले के पिछवाड़े चतुरता से पहरेदारों की नज़र से बचता हुआ पहुँच गया । वहाँ पहुँचते ही उसने एक आदमी को चोर दरवाज़े से किले के अन्दर जाते देखा और इसके फेंके हुए एक भाते ने उसका काम तमाम कर दिया । फ़ुर्ती से वह युवक अपने सिपाहियों को लिये हुए, बन्दूकों सीधी किये, आगे बढ़ता गया और एक क्षण में वह ठीक उस जगह था जहाँ बरमा का राजा अपने मन्त्रियों के साथ बैठा युद्ध के विषय में सलाह कर रहा था । इस सकरे रास्ते से आते हुए पचास आदमी ही राजा को बहुत से दिखाई पड़े । राजा उठकर भागना चाहता था पर

युवक ने कहा — “यदि आप जीवन से हाथ नहीं धोना चाहते हैं तो आत्म समर्पण कर दें वरना मैं गोली मारने पर मजबूर होऊँगा ।”

राजा ने आत्म समर्पण कर दिया । सिपाहियों में से एक ने किले के बुर्ज पर चढ़कर अंग्रेजी झण्डा फहरा कर विगुल बजा दिया । फाटक भी खोल दिया गया था । बन्दी राजा को उत्त युवक भीमसेन ने अंग्रेजी सेनापति को सौंपा । सिपाहियों ने करोड़ों रुपये का लूट का माल इकट्ठा कर रक्खा था । अंग्रेजी सेनापति ने भीमसेन को रिसालदार का ओहदा दिया और लूट में से इच्छानुसार वस्तुएँ ले लेने को कहा । परन्तु भीमसेन ने लिया एक चौरासी मन का अष्टधातु का घंटा और कुछ नहीं । कहा — “सोना चाँदी रुपया पैसा सब नष्ट हो जायगा. वस यही तो बाकी रह जायगा ।”

अंग्रेजी सेनानायक ने उसे तेईस गाँव भेंट में दिए ।

रिसालदार भीमसेन धाकड़ ब्रह्मण थे । उनकी सबसे बड़ी ख्वाहिश थी कुलीन घरानों से सम्बन्ध करने की । उनके गाँवों को देखकर कुलीनों की भी लार टपक पड़ी । रिसालदार ने अपनी पाँच लड़कियों में से एक के लिए वर ढूँढा जो बीस विस्वा कान्यकुब्जों में था और बिगड़ा हुआ रईस । रिसालदार से गाँव पाकर भाँग-बूटी एक बार फिर केसर और मलाई के साथ छनने लगी । थोड़े ही दिनों में गाँव पर काफ़ी कर्ज़ हो गया ।

उनके पुत्र ने भी उन्हीं की बनाई हुई लीक पर कदम रक्खा

—यानी फ़ज़ूलख़र्ची का दामन पकड़े रहे। भाँग धतूरे से तो उन्हें स्नेह न था पर इस वान की बड़ी ख्वाहिश थी कि चार लोग उनकी वाहवाही करें। मित्रों के यहाँ तोहफ़े भेजने में उन्हें विशेष आनन्द आता था। खाने की बढ़िया चीज़ें और मसालेदार तरकारियों से वे अपने पड़ोसियों का भोजन स्वादिष्ट बनाए रखते थे। उनकी पत्नी के डाले हुए अचार की तारीफ़ करते हुए सामने के घर में रहने वाला कसाई कभी न आघात था। बाहर जाते तो अपने मित्रों की पत्नियों के लिए साड़ियाँ और बच्चों के लिए खिलौने लाना कभी न भूलते। नतीजा इसका यह हुआ कि उन्हें गाँव बेचना पड़ा। अब नौकरी का सहारा था, कचहरी में भाग्यवश जगह मिल गई जहाँ आमदनी अच्छी थी। वे रईसी के ठाठ तो न रहे पर खाने कपड़े की चिन्ता छूट गई।

बच्चे बहुत हुए पर बच्चे चार लड़के ही, अचल उनमें सबसे छोटा था। बड़े दो लड़कों को पढ़ाया, छोटे दो अभी बच्चे ही थे। लड़के अभी पढ़ लिखकर किसी लायक भी न हुए थे कि आप चल वसे। उनका सन्दूक ढूँढा गया तो निकला पाँच रुपए का एक नोट। रुपए का मतलब उन्होंने खर्च करने की चीज़ समझा था और जोड़ने के शब्द का उनके मस्तिष्क-कोष में स्थान न था। समुराल वालों ने किसी तरह रुपए का प्रबन्ध किया तो लाश उठी।

बड़े लड़के के सरकारी नौकरी पा जाने से पाँच प्राणियों के कुटुम्ब की किसी भाँति गुज़र होने लगी। माँ को आठवाँ पुत्र अथवा सबसे छोटा होने के कारण अचल सबसे प्रिय था।

चाहती थी कि वह उसके सामने होशियार हो जाता । पर भगवान को पता नहीं क्यों ऐसी बातें मंजूर नहीं होतीं । अचल अभी सात वर्ष का भी मुश्किल से हो पाया था कि माँ का संग्रहणी हो गई । मृत्युशय्या पर पड़े हुए उसने पुत्रवधू को बुलाकर अचल को सौंपा और उसे पुत्र समझ कर परवरिश करने को कहा ।

माँ की मौत हो जाने पर अचल की भी आँखें कुछ जल्दी खुलने लगीं । अनाथ बच्चे कुछ जल्दी चेतन्य और समझदार होते ही हैं । भाई-भाभियों का वर्ताव उसे कुछ ताखा और कटु होता दिखाई पड़ा । माँ के जीवन में रूठने पर अचल उनसे गुस्सा होकर कहता था—“तू मर जा, हम भय्या-भाभी के पास रहेंगे और दूध रोटी खायेंगे ।” माँ हँसकर कहती—“अरे जा ! आठ-आठ आँसू रोएगा । कोई कौड़ी को भी न पँछेगा ।”

माँ की वह हँसी की बात आजकल अचल को सच होती हुई दीख पड़ी । भय्या-भाभी के लिए अचल की वह बालकों की चंचलता, शैतानी और बदमाशी में बदल गई । जिस वाक्चातुर्य पर रीझ कर लोग उसके बैरिस्टर और जज होने की भविष्यद्वाणी करते थे वही अब गुस्ताखी और जवाँदराजी कही जाने लगी ।

रात हो चुकी थी; घर में लगभग सब लोग खाना खा चुके थे । अचल के भाई साहब खाना खाकर पलँग पर पड़े हुए पत्नी से डेली रिपोर्ट सुन रहे थे । वह बताती जा रही थी कि आज तरकारी काट लेने को कहने पर किस देवरानी ने किस तरह का

मुँह बनाया, कौन भी अपनी फटी धोती दिखाकर बोली कि मेरे लिए तो साल भर से धोती जोड़े ही नहीं आए हैं। कौन से देवर साहब धी और लकड़ी लाने के लिए कहने पर 'क्या हमी ने नौकरी लिखाई है' कहकर चले गये, और कौन से पानी पीने के लिए कुछ न मिलने पर एकदम आपे से बाहर हो गए।

इसी समय अचल चुपचाप पैर दवाता हुआ जीने से अपने पढ़ने के कमरे की ओर बढ़ा। दोनों छोटी भाबिएँ अपने जेठ-जेठानी को खाना खिलाकर अब खुद चिराग के धीमे उजियाले में जेठ के पास ही के कमरे में बैठे होने के कारण फुसफुसाकर बातें करती हुई भोजन कर रही थीं। अचल को देखते ही एक बोली—“छोटे ! आओ पहले रोटी खा लो तब पढ़ने बैठना, वे चौके में ढँकी रखी हैं तुम्हारे लिए।”

अचल को इस समय रांटी खाने की उतनी फिक्र नहीं जितनी मार खाने से बचने की। कांग्रेस के वालंटियरों के लिए आटा इकट्ठा करने में आज इतनी देर हो गई थी। चाहता था कि किसी तरह पढ़ने के कमरे में आकर बैठ जाय। होंठों पर उँगली रखता हुआ धीरे से बोला—“चुप !”

पर पास ही के कमरे में बैठी हुई बड़ी भाभी साहब के तेज कानों से यह बातचीत छिपी नहीं। बोली—“मालूम होता है छोटे आया है। सबरे रांटी खाके गया था तबसे पता नहीं कहाँ रहा, छुट्टी के दिन तो घर में इसका मुँह ही नहीं दिखाई देता।”

भाई साहब ने ज़ोर से आवाज़ लगाई—“छोटे !”

छोटे को जैसे काठ मार गया, बड़ी मुश्किल से गले में से

आवाज़ निकली—“जी !”

“यहाँ तो आना ।”

छोटे अपराधी की भाँति कमरे में दाखिल हुआ ।

“अब तक कहाँ रहे ?”

छोटे चुप ।

“मैं कहता हूँ अब तक कहाँ रहे ?”—भाई साहब ने कड़क कर कहा ।

भाभी साहब ने कहा—“रहा कहाँ, वहीं काँग्रेस का आटा माँगता होगा ।”

भाई साहब ने कहा “क्यों बे ?”

“जी हाँ ।”

भाई साहब ने ताव खाकर कहा—“और मैंने तुमसे मना किया था न कि ज्यादा देशभक्ति के फेर में न पड़, नहीं तो मेरी नौकरी भी ले मरेगा । पेट का भी ठिकाना न रह जायगा तब काँग्रेस वाले घर भर को रोटी देने आवेंगे ?”

भाभी साहब ने कहा—“अरे तुम तो कहते ही रहने हो, वह तो वही करेगा जो उसकी समझ में आता है ।”

भाभी साहब के इन शब्दों ने भाई साहब के क्रोध में घी का काम किया । उठे और अचल की गर्दन पर धक्का देकर बोले—“निकल यहाँ से नात्थायक ! हम लोगों की रोज़ी लेने पर भी लगा है । हाँते ही माँ-बाप को खा गया, अब हम पर दाँत है ।”

भाभी साहब कह रही थीं—“बताओ, इतनी दफ़े समझाया जाता है, उसके ध्यान ही में नहीं चढ़ता है । जब सरकारी हुकुम

है कि सरकारी नौकरी करनेवाले के घर का कोई काँग्रेस में हिस्सा लेगा तो वह नौकरी से वर्ख्तास्त कर दिया जायगा, फिर वावा ! तू इतनी दफे कहे जाने पर सुनता क्यों नहीं है ! या तो भाई इनको घर में रखकर काँग्रेस में खूब काम ही करवा ले और नौकरी से छूट के फाके करे या जो अपना पेट पियारा होय तो इनसे कहे कि तुम्हारा रास्ता अलग, हमारा रास्ता अलग ।”

भाई साहब उधर अचल को घसीटे घर के बाहर ढकेल लिए जा रहे थे और दोनों छोटी भाभिण्ँ खाना बन्द किए आँसू बहाती हुई अचल की दुर्गति देख रही थीं । मन में सोचती थीं, ‘दिन भर का भूखा प्यासा घर आया था । अब इस वक्त जाड़े में बाहर निकाला जा रहा है, रात कैसे काटेगा । ये दोनों तो बिल्कुल कसाई हैं । अभी कोई बीच में कुछ कहें तो सिर के बाल चुचवावे ।’

भाई साहब अचल को घर के बाहर ढकेल कर हाँफते हुए चारपाई पर आकर गिर पड़े । भाभी साहबा चालू थीं—“ये मरे काँग्रेस वाले ! इसी तरह बैठे-बैठे हुल्लड़ मचाया करते हैं । इस गाँधी ने लोगों को बेवकूफ बना के अपना उल्लू कैसा सीधा किया है । अपने लड़कों को तो मिलें खुलवा दीं, लाखों का चन्दा डकार गया है अब फिर उधियाया है । मालूम होता है और रुपए की जरूरत पड़ी है ।”

अचल दिन भर की दौड़-धूप से बिल्कुल थक गया था । चबूतरे पर यों ही पड़ रहा । सोचता था, “और देशों में तो सुनते हैं लोग देश का काम करने वालों की बड़ी इज्जत करते

हैं। हे भगवान ! बड़ी ठण्ड है ! रात कैसे कटेगी ! क्या इन लोगों को रात भर दया ही न आएगी !”

४

विराग को यह पूर्णतया विश्वास था कि दुनिया में जितने संयम-नियम और व्रत के उपदेश दिए जाते हैं ये उन्हीं लोगों के दिमाग की उपज होती हैं जिनकी इन्द्रियाँ एक बार पूर्णतया तृप्त हो चुकी होती हैं। उसकी समझ में यह बात आती ही न थी कि कोई आजीवन संयम कर ब्रह्मचर्य का पालन कर सकता है। वह मन में सोचा करती थी—‘लोग कहते हैं संयम और नियम में अलौकिक सुख है लेकिन लौकिक सुख तो नहीं। अब तो सबको लौकिक सुख की चाह है अलौकिक सुख का जमाना चला गया। आजकल के लोगों को तो उसमें संकट ही दिखाई देता है। कितने लोग आजकल अपनी वासनाओं पर नियन्त्रण रख सकते हैं। लाखों में एक आध मिलना मुश्किल हो जायगा। हाँ उपदेश देने को सब बड़े बारहाँ हैं।’ उसके हृदय में ये विचार उठते तो अवश्य थे लेकिन किसी के सामने भी इन समाज विद्रोही भावनाओं को प्रकट करने में उसे संकोच होता था, सोचती थी कहीं उसकी सच्चरित्रता पर लोग संदेह न करने लगे।

इन भावों को किसी पखेरू की भाँति उसके मस्तिष्का-काश में चकर काटने के कारण उसके विचार-वायुमण्डल में उथल-

पुथल मची रहती थी। नतीजा यह हुआ था कि विधवा होने हुए भी विराग मुग की इच्छा को अपने हृदय से न निकाल सकी थी। अब भी अच्छा पहनने ओढ़ने की उसकी इच्छा होती थी; स्वादिष्ट और मसालेदार भोजन से अब भी उसे घृणा न थी; खेल-तमाशे और राग-रंग देखने को अब भी उसका हृदय मचल उठता था। पति-विहीना और नवयौवना होने पर भी वह रिश्ते के देवरों से हँसी और चुहल करने से बाज्र न आती थी।

उसका यह रंग-ढंग घर के नौकर के बड़े लड़के मन्नीलाल ने ध्यानपूर्वक देखा और उसे अपने मतलब निकालने को कुछ मम्भावना देख पड़ी। मुन्नी लाल कहार का लड़का होते हुए भी उन शूद्र भावनाओं को अपने पास फटकने तक नहीं देता था जिन्होंने उसके जाति-भाइयों को उच्च जाति के लोगों के हाथों में कठपुतली बना रक्खा है। वह अपनी आत्मा को किसी बड़ी जाति वाले की आत्मा से किसी प्रकार निम्न नहीं पाता। इसी कारण उसे किसी की नौकरी करने से सख्त नफ़रत थी।

वह सिनेमा में पान बेचता था, दूकान रखकर नहीं, थाल में ले जाकर। आमदनी अच्छी हो जाती थी। इसी लिए ठाठ-बाट में, सफाई में, किसी बाबू से कम न रहता था और खर्चा भी सबसे पांच जूता बढ़कर, क्योंकि परिवार में कोई न उससे एक कौड़ी मांग सकता था और न वह किसी को दे हो सकता था।

मुन्नीलाल के दोस्त कहिये तो, अफसर कहिए तो, सब कुछ सिनेमा के गेटकीपर सज्जाद मियाँ ही थे। वह उनकी बड़ी इज्जत करता था कि वह इतने ऊँचे ओहदे पर होते हुए भी उस पर मेहरबानी रखते थे। सज्जाद मियाँ की इस नज़-रे-इनायत की वजह थी मुन्नीलाल का ऐसे मुहल्ले में रहना जिसे रूप की खान कहा जा सकता था। उन्होंने एक आध बार मुन्नीलाल को अपने घर बुलाकर किसी खानगी से साक्षात करा के और उसे अपनी खाला की लड़की बताकर अपना एहसान भी लाद दिया था। अब वे अक्सर मुन्नीलाल से आग्रह किया करते थे कि यह उनसे किसी से मुलाकात करावे और मौके बेमौके अपने एहसान की दुहाई देने में भी न चूकते थे।

मुन्नीलाल इस एहसान के भार से दबा जाता था। जबसे उसने विराग को देखा था उसके हृदय में कुछ आशा का संचार हो आया था। वह और विराग करीब करीब बराबर उमर के ही थे और बचपन से एक ही घर में रहे थे। रोज़ की बातचीत और उठना-बैठना। विराग की बुढ़िया चाची के सामने वह नंगा ही घूमा था। उनके हृदय में यह बात उठ ही न सकती थी कि मुन्नीलाल कोई छलकपट उनके साथ कर सकता है। दूसरे लोगों के लिए वह काफी वाकचतुर और चालाक था और उसकी चाल-ढाल की आलोचना करने पर वह—“चोर साधु लम्पट अज्ञानी, जस आपुन तस सब जग जानी”—कहकर उनकी बोलती बन्द कर देता था।

उस दिन मुन्नीलाल बैठा हुआ विराग और चाची से कह रहा था—“ऐसा अच्छा खेल है चाची कि क्या बात है। मैं तो कहूँगा कि माया मच्छीन्द्र के ऐसा फिल्म न अब तक बना है न बनेगा, धर्म की ऐसी विचित्र महिमा उसमें दिखाई गई है कि पापी से पापी आदमी के हृदय में भी यह खेल देखकर अच्छे ख्याल पैदा हो ही जाते हैं। क्या बताऊँ आपको तो देख ही नहीं पड़ता है नहीं तो मेरी तो बेहद मंशा थी कि आप यह खेल देखें। इसी लिए मैं यह पास भी लाया था। बड़े भैया जी माल खरीदने कानपुर न चले गए होते तो वह जरूर देखते।”

विराग का मन भी, खेल की इतनी प्रशंसात्मक आलोचना सुनकर देखने को हो आया था, पर अपनी तरफ से कहने में हिचक होती थी।

इतने में चाची बोल पड़ी—“विराग को दिखा ला भैया! मैं तो कुछ देख ही नहीं पाती हूँ, मैं अपनी तकदीर को क्या करूँ।”

“तो मैं अकेली किस के साथ चली जाऊँगी?”—विराग ने बनकर कहा।

मुन्नीलाल चुप रहा। वह सोचता था ‘इस समय उतावली प्रकट करने से मामला बिगड़ जाने की सम्भावना है, अपनी तरफ से कुछ न कहो।’

चाची ने स्नेह से कहा—“अकेली क्यों? यहाँ से मुन्नीलाल ले जायगा और जनाने दर्जे में ले जाकर बैठा ल देगा। खेल खतम होने पर यहाँ तक भेज जायगा। बस ठीक हो जायगा।

मुन्नीलाल तो घर का आदमी है, कोई पराया थोड़े ही है, मुझे तो जहाँ कहीं जाना होता है मुन्नी को ही साथ ले जाती हूँ। अब इसका बाप तो बहुत बुढ़ा हो गया है और फिर न जल्दी चल पावे न किसी से ठीक से बात कर पावे।”

विराग ने मन ही मन प्रसन्न हो कर कहा—“अच्छा देख आऊँगी।”

चाची ने कहा—“हाँ जरूर देख आओ, उसमें कुछ बुरी बात थोड़े ही है, लौट के मुझे कहानी सुनाना।”

विराग मुस्करा दी।

मुन्नीलाल ने कहा—“अच्छा मैं बखत पर आकर ले जाऊँगा, विराग बहन आप तयार रहिएगा।” और बल्लियों उछलते दिल से वह सज्जाद मियाँ को खुशखबरी सुनाने चल दिया।

×

×

×

तीन मिनट, चार मिनट और पांच मिनट भी जब खेल खत्म होने को हो गए तो विराग के मन में थोड़ी बहुत घबड़ाहट हो गई। ‘अब मैं इतनी रात को अकेले घर कैसे जाऊँगी और मान लो कोई जान पहचान का रास्ते में मिल गया तो मन में क्या सोचेगा कि इतनी रात को यह अकेली कहाँ से चली आ रही है। मेरी भी मति पर क्या पत्थर पड़े थे जो मैं उस उचक़े के साथ चली आई। अभी इन्टरवल के बाद तक तो यहीं पान की थाली लिए मड़राता रहा अब पता नहीं मुझे बैठा के कहाँ मर रहा जाके।’

हाल बिल्कुल खाली हो गया, अब विराग ने सोचा 'यहाँ इस तरह अकेली कब तक बैठी रहूँगी, चल्तूँ फिर रास्ते में जैसी बीतेगी देखी जायगी, न होगा जरा सा धूँघट ही काढ़ लूँगी, लेकिन कहीं रास्ता न भूल जाऊँ।' विराग ने चलने को अभी चढ़र सम्हाली ही थी कि सज्जाद मियाँ—ताड़ के से लम्बे सीकिया पहलवान, गोश्त शायद बदन में छटाँक भर भी मुश्किल से ढूँढ़े मिले, गालों की जगह पर गड्ढे ही गड्ढे और आँखें राजपूताने के कुँए से भी गहरे में, फिर भी सुरमे से लैस; पान खाते खाते ओंठ काले पड़ गए हैं और इस जोर के जाड़े में भी बदन पर एक ढीली मोहरी का पैजामा और बेलदार तनजेब का कुर्ता ही है—आकर सामने खड़े होगए। विराग को एक नज़र में ही जैसे पी लेने की कोशिश सी करते हुए उन्होंने पूरी शराफत से कहा--“आपके बारे में बहुत दिन से सुनता चला आ रहा हूँ, आज नियाज़ हासिल करके किस्मत खुल गई, वल्लाह क्या हुस्न पाया है आपने !”

विराग जैसे शरम से अपनी जगह पर गड़ गई। हाथ ने अपने आप ही सिल्क की चादर को घसीटकर मुँह ढक लिया।

सज्जाद मियाँ ने थोड़ी देर इन्तज़ार किया कि शायद उनकी बात का कोई जवाब मिले फिर बोले—“अब बराए मेहरबानी थोड़ी देर के लिए मेरे गरीबखाने को रौनक अफ़ोज़ कीजिए। पिछवाड़े के दरवाज़े से निकल चलिए बहुत पास है। महज़ दस कदम, वहाँ और कोई है भी नहीं।”

अब विराग के तेवरों पर बल पड़ गए—“कौन हो जी तुम, बेहूदा बक रहे हो। मैं अपने नौकर के इन्तज़ार में थी, हटो सामने से, मुझे घर जाने दो।”—कहने को तो तैश में सन्मान को धक्का पहुँचने के कारण विराग इतना कह-गई पर उसका दिल धक् धक् कर रहा था, ‘कहीं यह हाथा पाई करने लगे तो क्या हो, खैर भगवान का सहारा है।’

डॉट सुनकर सज्जाद मियाँ की अफीम का रंग कुछ कुछ ढलने लगा। अपने हाथों को मलते हुए बोले—“आपसे मेरे बारे में मुन्नीलाल ने बताया तो होगा।”

अब असली माजरा विराग ने समझा। इस समय तक वह बाहर जाने के लिए काफी आगे बढ़ चुकी थी, पर सज्जाद मियाँ अपनी जगह पर वैसे के वैसे ही विराग ही वाली कुर्सी की लाइन में खड़े थे। उसे बाहर जाते देखकर उनके हवाई महलों की ईंट से ईंट बजने लगी। ज़रा अपना हाथ फैला के, आजिजी से, गोया मचलते हुए वे बोले—“अब तो आपको इस गरीब के झोपड़े को एक लहमे के लिए पाक करना ही पड़ेगा।”

विराग मियाँ की ढीली ढाली बातचीत और सिलाबिल रंग-ढंग देखकर समझ गई कि मुमकिन है यह पुराना पापी हो पर इसके दिल से मालूम होता है भलमंसी की बू बिल्कुल चली नहीं गई है; जोर से बोली—“ये भी कोई मनमानी घर-जानी है कि किसी की बहू बेटी से ऐसी बेहूदा बातचीत करते हो, आखिर तुम्हारे भी मां बहन है कि नहीं! हटो रास्ते से, नहीं मैं चिल्लाती हूँ।”

सज्जाद मिथ्याँ बिचारे अलग हट गए और विराग सिर पर पैर रखकर सिनेमा हाल के बाहर भागी। सड़क पार करके विराग अपने घर वाली गली में पहुँची तो उसके दम में दम आया। लुकती-छिपती जान पहचान वालों की नज़र से बचने की चेष्टा करती हुई वह घर की ओर बढ़ी जा रही थी कि उसने पास ही के चबूतरे पर किसी को कुछ नींद में बकते हुए सुना। उसे डर मालूम हुआ पर आवाज़ पहचानी हुई थी, आटा मांगने वाला सदन का साथी अचल। सोचने लगी—‘इस जाड़े में यह यहाँ कैसे पड़ा हुआ है,’ पास आकर बोली—“कौन है, अचल ?”

अचल सोया नींद में था, चौंक कर बोला—“अरे बहन, तुम इस बख़्त अकेली कहाँ से आ रही हो ?”

विराग ने कहा—“तुम जाड़े में कैसे यहाँ पड़े हो भाई ?”

अचल—“काँग्रेस में काम करने की वजह से घर से निकाल दिया गया हूँ।”

विराग—“अच्छा आओ मेरे घर चलो।”

अचल—“और मार पड़ेगी, वैसे चाहे सबेरे घर में आने भी दें।”

विराग—“नहीं, यह भी कोई बात है ? आखिर तुम रात भर क्या यहीं पड़े रहोगे। चलो मैं सबेरे तुम्हें यहाँ आके भेज जाऊँगी।” यह कह के उसने अचल का हाथ पकड़ा, देखा तो उसकी देह गरम हो रही थी, बोली—“चलो नहीं तुम्हारी ताब-यत ख़राब हो जायगी।”

अचल का हाथ पकड़े हुए विराग घर पहुँची। चाची इन्तज़ार ही कर रही थी, बोली—“क्यों बेटी, मुन्नीलाल कहाँ ? तमाशा कैसा था, क्या नाम था उसका—माया-मुख्न्दर ?”

“भाड़ में जाय मुन्नीलाल, उसका नाम मत लेना मुझसे, ज़रा इस बखत मुझसे यह सब न पूछो नहीं तो कुछ अण्ड बण्ड मेरे मुँह से निकल जायगा।”

धम धम विराग ऊपर चढ़ गई। लैम्प जला के उसने अचल को खाट पर बैठा दिया और ओढ़ने को शाल देती हुई बोली—“भूखे तो तुम हो ही, पर मेरे यहाँ यह छोड़ के और कुछ खाने को नहीं है।”—यह कहके उसने लड्डुओं के डब्बे से लड्डू निकाल के उसके दोनों हाँथों में रख दिए और अपने पीने के लिए रखे हुए दूध की चाय स्टोव पर बनाने लगी।

रास्ते में बताई हुई अचल की दो एक बातें सुनके विराग का हृदय सहानुभूति से ओतप्रोत हो गया। ‘हे भगवान, पता नहीं मेरे मुरारी को वे लोग कैसे रखते हों।’ बोली—“क्यों जी जब वह तुम्हें घर से निकालने लगे तो तुमने उनसे कहा नहीं कि अब काँग्रेस में काम करने न जाऊँगा।”

अचल के पेट में लगभग बारह घंटे के बाद अन्न का दाना पहुँचा था, चैतन्यता लौट आई थी, बोला—“यह मैं कैसे कह सकता था! क्या मैं उनके कहने से काँग्रेस का काम छोड़ दूँगा। जब छोड़ना नहीं है तो झूठ क्यों बोलूँ।”

विराग को उसकी बात सुनके हँसी आ गई, बोली—“अरे

भाई तुम तो ऐसी साधू लोगों की ऐसी बातें करने लगते हो कि मेरी समझ में ही नहीं आती है। आजकल दुनिया में मौके-मौके पर अपना मतलब देख के झूठ भी बोलना होता है।”

अचल बोला—“नहीं यह मैं नहीं मानता बहन ! बात ही तो आदमी को आदमी बनाती है, बात ही तो आदमी का चरित्र होती है। जिसकी बात का ठिकाना नहीं उसके चरित्र का भी ठिकाना नहीं।”

विराग के दिल पर इन शब्दों ने सीधी चोट की। एक क्षण के लिए वह गम्भीर हो गई फिर मुस्करा कर बोली—“अचल ! भाई तुम मुझे बहुत अच्छे लगते हो। लेकिन देखो सबके सामने तुम इस तरह बात न किया करो। अच्छा अब ठीक से ओढ़ के सो रहो, सबेरे मैं तुम्हें चल के पहुँचा आऊँगी।”

५

गांधी इरविन समझौता हुआ, काँग्रेस ने सत्याग्रह आन्दोलन स्थगित कर दिया। विलायती कपड़े की दूकानों पर धरना देना बन्द हुआ, शराब और ताड़ी की हौलियों पर पिकेटिंग हटी, नमक कानून फिर अबाध्य गति से पालन किया जाने लगा और पुलिस वालों की ड्यूटी बहुत दिनों बाद फिर कुछ आराम की हुई।

अचल ने यह सब देखकर जैसे एक बार ठंडी साँस ली।

उसे ऐसा मालूम हुआ जैसे आन्दोलन उसे उन्नति करने का मौका देने के लिए ही एक बार ठहर गया है। जब तक आन्दोलन जारी था नहीं-नहीं करते हुए भी वह कुछ न कुछ कर ही आता था और भाभी साहब तेज शिकारी कुत्तों की भाँति इसकी खुशबू सूँघकर घर में प्रति दिन कलह मचवाया करती थीं।

तेरह वर्ष का अचल आठवें दर्जे में पढ़ता था और अपनी परीक्षाओं में कभी अनुत्तीर्ण न होता था पर भाभी साहब अपने प्रत्येक तर्क से यह साबित करने का प्रयत्न करती थीं कि एक तो आजकल वैसे ही पढ़ाने का कोई मूल्य नहीं है, बड़े-बड़े बी० ए०, एम० ए० मारे-मारे घूमते हैं फिर अचल ऐसे लड़के को जिसको दुनिया भर की खुराफातों से छुट्टी ही नहीं मिलती है, मान लो उन्होंने इन्ट्रेंस पास भी कर लिया तो आखिर कौन से डिप्टी कलेक्टर हो जायेंगे। करेंगे तो आखिर कोई छोटी मोटी नौकरी ही न। इसलिए वे आए दिन अपने पति से आग्रह किया करती थीं कि वे अचल पर अपना रुपया क्यों व्यर्थ नष्ट कर रहे हैं, आजकल जब अपने पैदा किए हुए किसी को कुछ नहीं दे देते हैं तो यह तो पराए हैं। इन्हें तो कोई छोटी मोटी नौकरी करा दी जाय तो जान छूटे।

भाई साहब की जान आफत में थी। वे जानते थे कि समय कितना खराब लगा है। पहली बात तो अचल की अभी उमर ही क्या थी जो वह कहीं नौकरी कर सकता, दूसरे बिना इन्ट्रेंस पास किए किसी भले आदमी को पेट भरने लायक

कोई ढंग की नौकरी तो मिल न सकती थी । आखिर अचल को वे इस तरह किस खाई खन्दक में ढकेल देते ।

भाभी साहब इन प्रस्तावों को प्रतिदिन पेश किया करती थीं इसके भी कई कारण थे । भाई साहब की तनखाह का जो कुछ हिस्सा अचल की फ़ीस, किताबों और कपड़े-लत्तों में खर्च हो जाता था यही भाभी की चिन्ता का कारण था क्योंकि इतनी ही रकम उनके ठाट-बाट और शक की बीमारी के इलाज में कम हो जाती थी ।

अचल के जीवन का छकड़ा इन रोड़ों काँटों के बीच से ढूँढ़-ढूँढ़ करके चला जा रहा था कि एक दिन एक विचित्र घटना घटी :—

महात्मा गान्धी ने अछूत आन्दोलन का बिगुल बजाया था और काफ़ी दिनों की शान्ति के बाद फिर देश में जीवन की एक लहर फैल गई थी । बड़े-बड़े रईसों ने—जिन्होंने कभी घर में मनो कूड़ा इकट्ठा हो जाने पर भी यह न जाना कि भाड़ू कैसे पकड़ी जाती हैं और नया नौकर आने पर ही जिनके घर की सफ़ाई हो सकी, घर की नाली में कीचड़ इकट्ठा होने पर महीनों जिनके यहाँ बिना मेहतर सफ़ाई न हो सकी—सड़कों पर भाड़ू लगाई, नालिँ साफ़ कीं और मैला उठाया । बड़े-बड़े ज्ञानी ध्यानियों ने बैठकर अछूतों के साथ सहभोज में भाग लिया ।

अचल और उनकी बाल सभा के सदस्यों ने अपने उत्साह प्रदर्शित करने के लिए यह प्रस्ताव किया कि वे लोग दो तीन अछूतों को लेकर शहर के बाहर बाग़ में अपने सब साथियों के

साथ जाकर साथ-साथ कच्चा खाना बनाएँ और खाएँ ।

प्रस्ताव के अनुसार मोहल्ले के सब लड़के साइकिलों पर दो-दो, तीन-तीन अपने मोहल्ले के एक साहब के बाग में डालीगंज के आगे खेलते-कूदते पहुँचे । किसी ने अपने घर में कानों कान खबर न होने दी कि वह लोग किस मकसद से और कहाँ जा रहे हैं ।

बाग के माली ने पहुँचते ही इन लोगों को दूध पिलाया और लड़के इधर उधर दौड़-दौड़ कर बाग की छानबीन करने लगे । खिन्नी और फालसे की भरमार थी, कोई अपनी टोपी में तोड़कर इकट्ठा कर रहा था और कोई धोती के पल्ले में । छोटे-छोटे लड़के फालसे के पौधों के बीच में बैठे वहीं आनन्द से पके-पके तोड़कर खाते थे । बड़े लड़के छीना भपटी में लगे हुए थे । कोई अपनी टोपी में इकट्ठा करते हुए कहता था—मैं तो अपने मास्टर साहब के लिए इकट्ठा कर रहा हूँ और कोई अपने छोटे भैया के लिए । इसी बख़्त एक तीसरा आके उनकी टोपी लेके जोरों से भागता और फिर जोरों की दौड़ होती, इधर से उधर और उधर से इधर । कैसी फुर्ती थी और कैसा आत्मविश्वास । बाग का अधबैसू माली फूलों के पौधों की क्यारिँ बचाएरहने के लिए इन लोगों से कहते हुए अपने मन में सोचता था ‘अब तो हमारे लिए यह सब जैसे सर्कस के खेल की तरह मुश्किल हो गया । अब दस गज इसी तरह दौड़ना चाहें तो हाथ मुँह बिना दूटे न रहे । भगवान यह भी उमर कैसी अच्छी है । कभी हम लोग भी इसी तरह बिजली को मात करते थे ।

कुछ लड़के घास में बैठे हुए कविता पढ़ने में होड़ लगा रहे थे। पहले की कविता का अन्तिम अक्षर जो होता उसके सामने की पार्टी का कोई लड़का उसी अक्षर से प्रारम्भ होती हुई कविता पढ़ता। कैसा समाँ बँधा हुआ था। एक से एक जोरदार देशभक्ति के तराने सुनाए जा रहे थे। कोई किसी-किसी किसान की दुखद दशा और ज़मींदार के अत्याचारों का वर्णन कर रहा था तो कोई किसी मजदूर की पत्नी के कष्टों का।

दूसरी ओर अचल एक आम के पेड़ पर बैठा हुआ मीठे स्वर से गाना गा रहा था और उसके साथी सब बिना वाह-वाह किए हृदय ही में उसकी प्रशंसा करते हुए एकाग्र चित्त से सुन रहे थे। कण्ठ का स्वाभाविक दर्द और लोच उन्हें बेसुध किए हुए था।

माली ने इस बीच में बुढ़ू और पराग के लिए खाना बनाने को सामान जुटा दिया था। बड़ी-बड़ी हंडियों में बुढ़ू ने दाल और तरकारी ईंटों के चूल्हों पर चढ़ा दी थी। पराग आटा गूँध कर बाटी बना रहा था जिसमें बहुत से सिखे अनसिखे लड़के उसका साथ देने का प्रयत्न कर रहे थे। कण्डों से अहरा लगा दिया गया और बाटियाँ सिकने को उसमें रख दी गईं।

लड़के इस बीच में भूखे हो आए थे और कुएं के पानी से नहा कर खाना बनाने वालों के आगे पीछे घूम रहे थे।

बाटी सिक जाने पर ढाक के पत्तों की अपने ही हाथों से गूँथी हुई पत्तलों पर खाना परसा गया। ताज़ी तोड़ी तुरई और परवल की तरकारी, अरहर की दाल, करौंदे की चटनी और

थोड़े बहुत घी के साथ बाटियों ने थोड़ा बहुत किस किसाते हुए भी कैसा मजा दिया था जो आज तक कभी घर पर खीर और मोहन भोग में न मिला था । पन्द्रह बीस जने पराग और बुद्धू को बीच में बैठाए खूब छीना भपटी कर कर के खा रहे थे । घर में यह बात कहाँ आ सकती है । न यहाँ चौके के छूत होने का डर है न किसी के आँखें लाल करने का ।

माली की बीबी नज़रिया की महतारी अपनी भोपड़ी से ठुड़ी पर हाथ रक्खे बड़े आश्चर्य से यह तमाशा देख रही थी और अपनी बिटिया से कह रही थी — “अरे ई गांधी महात्मा ने तो धरम नष्ट कर दिया रे । लोग उहका देश भगत बतावत है और ऊ है सरकार का आदमी । सबका किरिस्तान बनावै पर लगा है । देखो ई लड़कन मां बाम्हन खत्रो कायथ ठाकुर सबै तो हैं तौन उन डोमन का बैठाए अस भ्रष्टाचार मचाए हैं, भगवान अब तो तू परलय करि देतेव तबहीं ठिकात ।”

खाने के बाद भूला भूलने की ठहरी । बुद्धों की तरह आराम का ख्याल ही किसी के दिल न उठा । एक बड़े से बरगद के पेड़ में बड़े मोटे से रस्से का, पटरा रख के भूला डाला गया । भूले पर खड़े-खड़े कोई पैंग बढ़ा के फुनगी की पत्ती तोड़ने का प्रयत्न कर रहा था और कोई अपने साथी की टोपी उतारने की ।

इसके बाद माली ने कुएँ के पानी में फालसे का शर्बत घोल-घोल कर सब को पिलाया । बर्फ की दिल जलाने वाली ठण्डक उसके सामने मात थी कम्पनियों का बनाया हुआ शर्बत उसकी

ताजगी के आगे पानी भरता था ।

अब घर जाने की ठहरी और सब साइकिल पर वैसे ही लड़के भागे ।

लड़के मोहल्ले में पहुँचे तो मालूम हुआ कि दानी के छोटे भाई ने साथ ले जाने से इन्कार करने की वजह से खफा हो कर इन लोगों के बाग के कार्यक्रम की खबर प्रत्येक घर में दे दी थी । अब सब अपनी-अपनी खैर मनाने लगे, इस संकट ने सब की सिट्टी-पिट्टी भुला दी ।

किसी के घर में पहुँचते ही खूब अपशब्दों और गोलियों की बौछार हुई, किसी का दाँ एक लप्पड़ से सत्कार हो गया और किसी की माँ ने गुस्से के कारण लड़के को देखते ही बेबसी से सिर पीट लिया और ऐसी रोवा-धोई मचाई जैसे किसी आत्मीय की मौत हो गई हो ।

पर अचल के यहाँ का प्रोग्राम इतना मुख्तसर न था, वहाँ इस बात का बड़े जोरों से तूमार बाँधा गया था । दरवाजे पर ही भाभी साहवा खड़ी मिलीं, पहले उन्होंने बहस छेड़ी लेकिन जब अपनी दाल गलती न देखी तो बोलीं—“अच्छा ऊपर आओ अभी दो चार लातें पड़ेंगी तो सारी चतुरता भूल जाएगी ।”

भाई साहब भरे हुए बैठे थे; अचल को देखते ही तलबी हुई; पूछा—“तुमने भी बुद्धू और पराग के हाथ की बनाई रोटी खाई है ।”

अचल ने कसाई के सामने के बकरे की भाँति काँपते हुए

कहा— “जी हाँ ।”

भाई साहब बल खाते उठे और बेंत उतार कर सड़ासड़ अचल की देह पर बरसाने लगे । थोड़ी देर तो अचल दर्द और पीड़ा अनुभव करता हुआ तड़पता रहा पर बाद में बेसुध हो गया । चिल्लाना और तड़पन भी बन्द हो गई और आँखें मुँद गईं तब भाई साहब पर से क्रोध का भूत उतरा । हाथ रोक कर खाट पर बैठ के हाँफने लगे ।

इस मामले में छोटी भाभियों की भी सहानुभूति अचल के प्रति न थी । ब्राह्मण की बेटियों को यह बात कैसे अच्छी लग सकती थी कि उनके घर का कोई अछूत का बनाया हुआ भोजन करे, कोई अचल को बचाने न उठी, कुछ मानसिक भावों के कारण और कुछ जेठ के डर से ।

सब किस्सा खतम हो जाने पर बड़ी भाभी ऊपर आई और भाई साहब से बोलीं—“तुम आखिर इसके पीछे इतना परेशान क्यों होते हो । बेकार अपने मन को दुख देते हो और कोई मतलब इससे नहीं निकलता । इसको तो जो काम करना है यह करता ही है । अब इस वखत कैसा बना हुआ पड़ा है ।”

भाई साहब—“इसको घर का कोई बर्तन या घड़ा न छूने देना और दूर से रोटी देना । क्या बताऊँ इन्ट्रेन्स का इम्तहान इतना क़रीब न होता तो मैं इसको घर से निकाल के ही दम लेता । इस वखत तो मेरे ही सब रुपए पर पानी फिर जायगा ।”

६

मुरारी के बनारस से आने पर विराग ने उसमें बहुत काफ़ी परिवर्तन देखा, शारीरिक मानसिक सभी प्रकार का । पाँच ही महीने मुरारी से अलग रह कर विराग ने देखा कि उसने अपना मुरारी खो दिया है । उसकी वह कोमल भावनाएँ पता नहीं कहाँ चली गई थीं, स्वभाव में एक अजीब प्रकार का चिड़चिड़ापन दिखाई पड़ता था । लड़कों की वह चंचल वृत्ति और चपलता जो उनका स्वाभाविक गुण है और जिस पर माता पिता न्योछावर रहते हैं मुरारी में से बिल्कुल लुप्त हो गई थी और उसका स्थान गम्भीरता ने ले लिया था । विराग के भाई सदन और मुहल्ले के लड़कों की शिकायत थी कि मुरारी उन लोगों से मिलता जुलता ही नहीं है या तो अकेला अपना कमरा बन्द किए पड़ा रहता है या बहुत दूर एकान्त में घूमने चला जाता है ।

मुरारी की यह एकान्तवासिता उसका नित्य प्रति पीला पड़ता हुआ चेहरा विराग के हृदय को प्रतिक्षण सालता था । उसे सब तरफ़ अन्धकार होता हुआ दिखाई देता था । लड़के आ आकर खबर सुनाते कि मुरारी स्कूल पढ़ने ही नहीं जाता है । घर से किताबें लेकर किसी बाग़ बगीचे में एकान्त में बैठा रहता है और स्कूल की छुट्टी होने के वक्त घर लौट आता है । विराग के सामने आते हुए जैसे उसे घबड़ाहट सी होती है और वह सदा उससे मुँह छिपाए-छिपाए घूमता है ।

विराग ने दो एक बार मुरारी को पकड़ कर उसे अपनी बाँहों में कसकर उसके दुःख और चिन्ता का कारण जानना चाहा पर सब व्यर्थ। वह छुड़ाकर भाग जाता था, कहता था—“मुझे क्यों व्यर्थ में परेशान करती हो मुझे कोई कष्ट नहीं है, मैं बिल्कुल अच्छा भला हूँ।”

विराग सोचती थी कि अचल मुमकिन है इसे ठीक कर दे। उसका साथ मुमकिन है इसे अच्छे रास्ते पर ले आवे। पर अचल इधर दिखाई ही नहीं पड़ता था। सदन से पूछने पर मालूम हुआ कि उसका आजकल इन्ट्रेंस का इम्तहान हो रहा है इसी वजह से वह दिखाई नहीं पड़ता है।

दो चार दिन बाद इम्तहान खत्म हो जाने पर अचल आया। विराग को उसे देखकर आशा का इतना संचार हुआ कि भावों के परिपाक के कारण उसके आँसू निकलने लगे। उसकी बात-चीत चाल-ढाल देखकर विराग को अचल में बहुत विश्वास और श्रद्धा हो गई थी। विराग उसके साथ अपने ऊपर वाले कमरे में गई जहाँ आज से तीन वर्ष पहिले वह अचल को रात में लाई थी। उसने अचल को हाथ पकड़ कर कहा—“अचल ! देखो तुम मुझे बहन कहते हो तुम्हारा कर्ब है कि तुम संकट में मेरी बाँह पकड़ो। तुम्हारे ऊपर मुझे जितना विश्वास है उतना बड़े बूढ़ों पर नहीं है इसीलिए तुम्हारी मैं इतने दिनों से खोज में थी। जब से मैं छः महीने के लिए मुरारी को बनारस में छोड़ आई थी पता नहीं वह कैसा हो गया। वह ऐसा उड़ा-उड़ा घूमता है कि मैं उसका अन्त ही नहीं पाती हूँ।

मुँह ऐसा सूख गया है कि जैसे देशभर की चिन्ता उसी को हो । मालूम नहीं उसे कुछ अन्दरूनी बीमारी है या क्या है जो दिन पर दिन ऐसा दुबला होता चला जाता है । मेरी तकदीर में पता नहीं अभी क्या-क्या देखना बदा है ।” — इतना कहते-कहते विराग रो पड़ी ।

अचल बड़ा दुखी हुआ । उसने ढाढ़स बँधाते हुए विराग से कहा—“खैर आप इस मामले में चिन्तित न हों । मैं पूरी कोशिश मुरारी को ठीक रास्ते पर ले आने की करूँगा । यह कोई ऐसी घबड़ाने वाली बात नहीं है । अनजान में बहुत से लड़के छोटी उमर में कुछ ऐसी बुरी आदतों के शिकार बन जाते हैं जो उनकी तन्दुरुस्ती को गारत कर देती है । लेकिन यह सब होता अज्ञान के कारण ही है अगर वे लोग जानें कि इन बातों से इतनी बुराइयाँ पैदा हो जाती हैं तो भूल कर इनके पास न फटकें । आप इस मामले में अब अधिक चिन्ता न करें मैं दो ही चार रोज़ मुरारी का साथ करके उसे ऊँच-नीच समझा कर ठीक कर दूँगा ।”

विराग ने सन्तोष की साँस ली ।

अभी विराग एक संकट से उबर ही न पाई थी कि दूसरा आ पड़ा । विराग के चचेरे भाई रामजी का इस बीच में विवाह हो गया था । जब तक रामजी और उनकी माँ यानी विराग की चाची अकेले थे उन्हें विराग से बहुत काफ़ी सहारा था । वह करीब-करीब घर का सारा ही इन्तजाम करती थी । रामजी अपनी कमाई का एक बड़ा हिस्सा विराग के हाथ में लाकर रख

देता था और उसी से वह घर का इच्छानुसार खर्च चलाती थी ।

रामजी की बहू शान्ति के मिजाज की और उसके नाम के लक्षणों में उत्तर दक्षिण का अन्तर था, यानी शान्ति तो उसके पास फटकने तक नहीं पाती थी, जहाँ कहीं वह चार दिन के लिए भी जाती एक न एक बवाल खड़ा कर देती । यहाँ आकर उसने पहली ही बार अपनी चचेरी ननद का कुटुम्ब का कर्ता-धर्ता होना वक्र दृष्टि से देखा ।

शान्ति बहू उन बिगड़े रईसों के खान्दान की लड़की थी जिनके यहाँ से रुपया पैसा और उदारता नष्ट हो जाने पर सम्पत्ति के दुर्गुण, ऊपरी दिखावा, शान शौकत, हुकूमत और दुच्चापन ही रह जाता है । शान्ति बहू ने आते ही विराग के प्रबन्ध की त्रुटियाँ रामजी को समझाना शुरू कर दीं ।

रामजी बेचारे दो-चार दर्जे पास, कटपीस का छोटी पूँजी लगाकर काम करने वाले शान्ति बहू को पाकर अपने जीवन को धन्य समझते थे । बला से लोगों के ख्याल में शान्ति बहू में घमण्ड की मात्रा बहुत ज्यादा थी और तहजीब वा छोटे-बड़ों का कायदा बिल्कुल न था उन्हें ऐसी कोई शिकायत न थी । वे अपने इष्ट मित्रों से शान्ति बहू की प्रशंसा करते कभी न थकते थे । जब दो-चार बार शान्ति बहू ने इस प्रकार विराग की शिकायत की तो उन्होंने कोई शक करने की गुञ्जाइश न समझी, और मन में सोचने लगे 'शान्ति बहू रईस के घर की लड़की है, उसने बड़े-बड़े घरों का प्रबन्ध देखा है, उसके मन

को विराग का प्रबन्ध अच्छा न लगना स्वाभाविक ही है ।' नतीजा यह हुआ कि एक दिन उन्होंने विराग से शान्ति बहू के कथनानुसार खुल्लमखुल्ला कह दिया—“बहन हमारा तुम्हारा गुजारा अब अधिक दिनों एक साथ नहीं हो सकता । जितने दिन निभ सका हमने निभाया अब तुम्हें चाहिए कि अपने लिए कहीं अलग ठौर करो ।”

विराग को यह बात सुनकर कुछ अधिक आश्चर्य नहीं हुआ । उसे इसकी आशंका बहुत पहले ही हो उठी थी । उसने एक ठण्डी साँस ली, कहा—“बहुत अच्छा भैया,” और अपनी कोठरी में चली गई ।

चाची ने यह सुनकर अपना सिर पीट लिया, बहुत रोई भींकी और चिल्लाई—“तू अपनी विधवा बहन को चार दिन रहने को ठौर नहीं दे सकता । लोग तो दूसरों की ज़िन्दगी की ज़िन्दगी पार कर देते हैं ।” पर जब दोहरी डाँट पड़ी—“तुम्हें इन सब बातों से क्या मतलब, चुपचाप खाओ और पड़ी रहो । हमें अपने बाल-बच्चों के वास्ते भी तो कुछ सोचना विचारना है कि जितना कुछ कमाते हैं सब ऐरे-गैरों को खिला दें और बाद में हमारे बच्चे दर-दर भीख माँगें ।”—तो वे भी मन मार कर बैठ रहीं और सोचने लगीं कि अब चुप रहने में ही खैरियत है, दूसरी बार कुछ कहने पर मुमकिन है यह लोग मुझे भी घर से निकाल बाहर करें ।

विराग के घर से अलग किए जाने की बात उनके जाति भाई और पड़ोसी वृद्ध राजेश्वर प्रसाद को मालूम हुई । राजेश्वर

प्रसाद उन सज्जनों में हैं जो अपनी जिन्दगी के पहले हिस्से में सब प्रकार से जाल कपट और कुकर्म करके वृद्धा अवस्था में लोक-परलोक के विचार के प्रतिक्षण मस्तिष्क के मड़राने के कारण, इन सब कार्यों पर कलई करना चाहते हैं। राजेश्वर बाबू ने पहले कितना छल करके लोगों की जायजादें हड़प लीं, न जाने कितनों को उल्लू बना के उनका रुपया मार लिया, शायद यही सब सोच-विचार करके अब वे काफ़ी दान-धर्म करते हैं और किसी के साथ भी नेकी करने का मौका नहीं चूकते थे। उन्होंने विराग को बुलाकर कहा—“बेटी मुझे मालूम हुआ है कि रामजी ने तुम्हें घर से अलग होने को कहा है। यह कोई उसका दोष नहीं है, अब ज़माना ही ऐसा लगा है। तुम लोग मेरे सामने खेल कूद कर इतने बड़े हुए हो। मेरे लिए जैसे मुन्नू, गौतम और तुलसा हैं वैसे ही तुम लोग हो। मुझे यह कैसे सहन हो सकता है कि तुम लोग जिन्होंने अभी दुनिया देखी नहीं, भले बुरे का ज्ञान नहीं है, जाकर अजनबियों के बीच में रहो। न जाने कौन आदमी कैसा हो और तुम्हारे साथ कैसी गुजरे ? इसलिए मेरी राय तो यह है कि तुम पुराने मकान में नीचे के हिस्से में आकर पड़ी रहो। उधर एकान्त का एकान्त है और हम लोगों की देख-रेख भी रहेगी। दूसरी जगह जाओगी थोड़ा बहुत किराया भी देना ही पड़ेगा और पता नहीं कैसे आदमी से पाला पड़े।”

अन्धा क्या चाहे ? दो आँखें। विराग को मुँह माँगी मुराद मिल गई। उसे इस परिस्थिति को सुलभाने का कोई तरीका न

सूफ पड़ता था। राजेश्वर बाबू का प्रस्ताव सुन कर मुँह माँगी मुराद मिल गई। फौरन् ही जाकर कमरे और दल्लान की सफाई की और मजदूरों से अपना सामान उठवाकर लारक्खा।

अब खर्चा चलाने का सवाल था। जो कुछ दो चार हजार की लेई पूँजी अपने पास रह गई थी अगर उसमें से सीधे-सीधे निकाल के खाया जाता तो आखिर वह कितने दिन को होती। उसे सीने पिरोने का काम खूब आता था, इस संकट के समय में उसने इसका ही प्रयोग करना चाहा। ब्याह में मिली रखी हुई मशीन की एक बार फिर सफाई हुई और उसमें तेल दिया गया। मोहल्ले पड़ोस की स्त्रियों में जाकर एक बार कह आई कि जनाने और बच्चों के कपड़े उसे ही सिलने को दिये जायें। स्त्रियों ने हामी भरी और उसकी परिस्थिति पर हृदय के गहरे पदों से सहानुभूति प्रदर्शित करते हुए शान्ति बहू के क्रांतिमयी होने का अपना-अपना अनुभव खूब नोन मिरच लगा कर वर्णन किया।

इस प्रकार राजेश्वर बाबू के ज़ेरसाए सिलाई के सहारे विराग अपना और मुरारी का किसी प्रकार गुज़र बसर करने लगी।

७

मुरारी का साथ करने में अचल को बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ा। मुरारी बड़ा चिड़चिड़ा था और ऐसी बेरुखी से बात करता था कि अचल के आत्मसम्मान को बढ़ा

धक्का पहुँचता था और उसका मन होता था कि वह फिर कभी मुरारी का मुँह न देखे, पर विराग की बात याद करके उसे फिर मुरारी के पास जाना पड़ता था । 'जब अचल मुरारी के कमरे में जाकर बैठता तो वह कहीं उठकर चल देता और जब वह कहीं घूमने का प्रस्ताव करता तो यदि वह कहीं घूमने जाता भी होता तो अपना यह विचार स्थगित कर देता । लेकिन अचल ने उसका पीछा न छोड़ा, वह उसके साथ लगा ही रहा, आखिर मुरारी भी उससे कहाँ तक भागा-भागा फिरता । धीरे-धीरे उन दोनों में घनिष्टता बढ़ने लगी ।

अचल ने देखा कि मुरारी इतनी थोड़ी ही अवस्था में बड़ा कमजोर हो गया है । थोड़ी सी दूर तक चलने में ही वह हाँफने लगता है । सुन्दर चित्रों और खेल तमाशों का उसे भी बड़ा चाव है पर व्यायाम और दौड़-धूप के खेलों से वह घबड़ाता है और कभी उनके पास तक नहीं फटकता । बैठे-बैठे उसकी हथेलियों से पसीना निकला करता है और जब तक अत्याधिक उद्विग्न हो उठता है । अचल की समझ में बात आ गई कि उसने मुरारी के विषय में जो सोचा था वह ठीक ही था । वह ऐसी आदतों का शिकार हो गया था जिनमें पड़कर छोटे-छोटे लड़के अपने यौवन के आगमन पर पहले ही से कुठाराघात कर देते हैं ।

अचल जब उसके पास बैठता तो लड़कपन की इन आदतों की तीव्र आलोचना करता । वह उसे बताता कि किस प्रकार लड़के अज्ञान ही में इन सब बातों को करके बस क्षणिक सुख से

प्रेरित हो कर अपने जीवन का वास्तविक सुख सदा के लिए नष्ट कर देने हैं और भयंकर रोगों को बुला लेते हैं। मुरारी और अचल के एक साथ घूमने जाने पर या कमरे में बैठकर बातचीत करने के वक्त अचल अक्सर यही विषय छेड़ता। कभी-कभी मुरारी खीझ उठता। कहता—“आपके पास और कोई बात करने का विषय ही नहीं है जब देखिए तब मेरे सामने इन्हीं बातों का जिक्र किया करते हैं आखिर मुझे इन बातों के जानने से क्या प्रयोजन है ?”

अचल कहता—“भाई नाराज न हो, मेरा यह मतलब थोड़े ही है कि तुम इन बुरी बातों के आदी हो; परमात्मा न करे कोई भले आदमी का लड़का उनसे प्रसित हो। मैं तो तुम्हारे सामने इनका जिक्र इसलिए करता हूँ कि भारत के न जाने कितने नवयुवक अपना जीवन इन बातों में पड़ कर नष्ट कर डालते हैं और यही कारण है कि जिस देश में भीम अर्जुन और राणा प्रताप ऐसे वीर पैदा होते थे वहाँ नित्यप्रति नपुंसक गुलामों की संख्या बढ़ती जाती है। मेरा हृदय इस बुरी दशा को देखकर दुःखित होता है इसीलिए मैं इस विषय में इतनी अधिक बातचीत करता हूँ।”

महीने डेढ़ महीने बाद अचल को अपनी बात का कुछ असर मुरारी पर देख पड़ा। उसने देखा कि अब वह पहले की बनिस्बत स्वस्थ दिखाई देता है और धीरे-धीरे उसकी वह असामयिक गंभीरता और चिड़चिड़ापन दूर होने लगा। अचल अब जब व्यायाम करने जाता तो मुरारी को भी अपने

साथ ले लेता और उसे इसके फायदे बताता हुआ व्यायाम करने की सलाह देता ।

इम्तहान के बाद का समय इस प्रकार धीरे-धीरे कट आया । अब नतीजा मालूम ही होने वाला था, आजकल लगा हुआ था । अचल को अक्सर रात-रात भर नींद न आती थी । पर्वे सब अच्छे हुये थे पर बड़े जोर का खटका लगा था । पता नहीं परीक्षक किस समय किस ख्याल में बैठा हो, कौन सा उत्तर उसे पसन्द आवे न आवे ।

आज तेरह जून थी, शाम के वक्त मालूम हुआ कि शिमला में नतीजा मालूम हो गया है । दो एक लड़कों के पास हॉने के तार भी आए थे । अखबार के दफ्तरों के बाहर बड़ी भीड़ थी । कल सवेरे अखबार निकल जायगा । लड़कों का मन होता था दीवारें तोड़ कर अपना नतीजा जाकर देख लें ।

अचल रातभर बिस्तरे पर पड़ा करवटें बदलता रहा । तीन बजे के करीब आँख लगी थी कि अखबार वाला चिल्लाया “आ गया हाई स्कूल इन्टरमीडियट का रिजल्ट ।” दौड़कर दो आने में अखबार सड़क पर खरीदा और वहीं ज़मीन पर बिछाकर बिजली की रोशनी में अपना नाम खोजने लगा । काले-काले अक्षर कागज पर तैर से रहे थे । अपना रोल नम्बर आठ हजार नौ सौ सत्तर देखने के बजाय आठ हजार छ सौ सत्तर देखने लगा । वह लड़का फेल था । आँखों के सामने अँधेरा छाने लगा, पृथ्वी पैरों के नीचे से खसकने-सी लगी । फिर, गौर से देखा तो अपनी गलती मालूम हुई । अब अपना रोल

नम्बर दूँटना शुरू किया। वह पास था सेकन्ड डिवीज़न में।

दौड़ कर घर में खबर दी। भाई साहब जग गए थे, बड़े खुश हुए, उनका रुपया स्वारथ हो गया था। अचल कहने लगा—“मुझे फर्स्ट डिवीज़न की उम्मीद थी, आप पाँच रुपये जमा करके कापिएँ फिर से दिखवाइए तो बहुत मुमकिन है फर्स्ट डिवीज़न मिल जाय।”

भाई साहब हँसते हुए बोले—“मुझे तो तुम्हारे पास होने की ही उम्मीद न थी कहो तुमने तो सेकन्ड डिवीज़न पा लिया। बस यही बहुत है।”

छोटी भामियों ने कहा—“लल्ला मिठाई खिलाओ।” बड़ी भामी ने भी आज पाँव छूने पर आशीर्वाद दिया।

बधाई देने वालों की धूम थी। दोस्तों का ताँता लगा हुआ था। सबकी तरफ से मिठाई की फर्मायश थी।

आज बहुत दिनों बाद दोनों भाई साथ खाना खाने बैठे। भाई साहब कह रहे थे—“मैं तुम्हारे लिए नौकरी की कोशिश कर रहा हूँ; अब ज़रा और ठीक से कोशिश होगी। लेकिन जब तक नौकरी नहीं लगती, क्या करोगे; बैठे रहने से तो अच्छा है कि कालेज ही ज्वाइन कर लो।”

अचल ने कहा—“जी अच्छा, जैसा आप बतावेंगे, वैसा ही करूँगा।”

भाई साहब—“वैसे एफ० ए० में भर्ती होने में कितना खर्चा लगता है? कितने की किताबें लगती हैं और महीने में कितनी फीस पड़ती है?”

अचल इन प्रश्नों का उत्तर धीरे-धीरे देता रहा ।

बड़ी भाभी साहवा इन बातों को जैसे-जैसे सुनती गई उनके मिजाज का पारा धीरे-धीरे ऊँचा उठता गया । उनकी वृत्ति कुछ ऐसी स्वार्थमय व ईर्ष्यायुक्त थी कि वे अपने सिवाय और किसी की उन्नति नहीं देख सकती थीं । उन्हें अपने सन्तानहीना होने का अफसोस सबसे अधिक उस समय होता था जब कि वे किसी के लड़के को किसी भी प्रकार की तरक्की करते देखती थीं । यहाँ तक तो गनीमत थी कि उन्हें अपनी स्थिति पर दुःख होता लेकिन उनका दुःख उस व्यक्ति के प्रति, जिसके कारण उन्हें दुःख हुआ है, बहुत ही शीघ्र ईर्ष्या व घृणा में परिवर्तित होता था । फिर उनके स्वभाव में गम्भीरता की इतनी कमी और छिछलेपन की ऐसी अधिकता थी कि वे अपने इन भावों को छिपा बिल्कुल न सकती थीं । इसी प्रकार दो व्यक्तियों की बढ़ती हुई घनिष्टता भी उन्हें फूटी आँखों न सुहाती थी । उनके पास कोई आवे, बैठे, बातचीत करे और ठकुरसुहाती कहे तो वाह ! वाह ! वह बड़ा ही सज्जन है; लेकिन अगर कोई दूसरा किसी भी भाव से किसी के पास जाकर बैठता तो उन्हें फौरन् ही उनकी इस घनिष्टता में दुर्वृत्ति व दुराचार की दुर्गन्धि आने लगती थी ।

अचल इस समय दोनों प्रकार उनके क्रोध को उभाड़ने का कारण हुआ था । पास होकर और भविष्य के लिए ऊँचे-ऊँचे प्रस्ताव करके भी और विराग के यहाँ नित्य प्रति जाकर भी, जो उनकी आँखों में कुछ कम न खटकता था । थोड़ी देर तो वे

अचल और भाई साहब की बातचीत सुनती रही फिर धीरे-धीरे उनके मुख की आकृति विगड़ गई, भौंहें तन गईं और उन्होंने जोर से कहा—“कैसे मज्दों में कह रहे हैं, जो नौकरी न लगे तो कालिज ही में भर्ती हो जाना, बैठे-बैठे क्या करोगे—अरे तुम्हारे कोई सौ पचास लाख का तालुका है जो खर्चा बढ़ाते जा रहे हो। इसी सौ सवा सौ की तनख्वाह के बल पर, जिसमें इतने आदमियों का पेट भरना है। अरे ! कान खोल के सुन नहीं लेते हो वह कितना खर्चा बताता चला जा रहा है, और फिर भी कहते जा रहे हैं कालिज में भर्ती हो जाना। अरे भाई ! कालिज का खर्चा उठाना कोई तमाशा है !”

अचल की सारी प्रसन्नता व उत्साह का लोप हो गया। उसने अपना सिर नीचा कर लिया।

भाई साहब इस समय कुछ उतने गम्भीर न थे जितनी गम्भीर बात उनसे कही जा रही थी। हँस कर बोले—“वाह अब क्या मैं इतना कंगाल हो गया हूँ जो अपने भाई को पढ़ा न सकूँगा।”

भाभी साहब ने देखा कि उनकी बात खाली जा रही है तो तिलमला उठीं। उन्होंने कहा—“नहीं, तुम तो बड़े रईस जादे हो, पर पढ़ावे तो उसे जिसका पढ़ने में मन लगे। इसे तो रण्डी-मुण्डियों के पास बैठने से ही फुर्सत नहीं मिलती है, यह पढ़ेगा किस बखत ?”

भाई साहब अप्रतिभ और निरुत्तर हो गए और परिस्थिति की गम्भीरता अब उनकी समझ में आई। वे मन में सोचने

लगे 'देखें अब यह क्या कहती हैं ?' कि अचल का मुँह गुम्से से लाल हो गया, उसके ओंठ काँपने लगे ! उसे सबसे अधिक अपने चरित्र की निर्मलता का ही घमण्ड था उसने कहा—“यह क्या कहा भाभी आप ने ?”

“कहा क्या ? क्या कुछ झूठ कह रही हूँ जो मार लाल-पीले हुए जा रहे हो । बैठते नहीं हो विराग के पास जाकर घण्टों ? अखिर वह तुम्हारी कौन है, जो उसके पास रोज़ मुँह फूँकने जाते हो ।”

“कोई क्या किसी के पास कभी बैठता-उठता नहीं है जो आप इस तरह बुरी-बुरी बातें मुँह से निकालती हैं । फिर जब तक एक आदमी के बारे में अच्छी तरह से जान न ले चरित्र का दोष लगाना न चाहिए ।”

“अच्छा । अब जैसा तुम रास्ता बताओगे वैसी ही तो मैं बातचीत करूँगी । जिसकी तुम वकालत कर रहे हो, अपनी सगी, फिर, उसे तो मैं एक दफ़े रण्डी कहूँगी और तुम्हें बद-माश, जो तुम रोज़-रोज उसके पास जाकर बैठते हो ।”

“यह तो अपनी-अपनी वृत्ति है । मैं अच्छा हूँ तो उन्हें भी अच्छा समझता हूँ । आप भला तो जग भला । मैंने तो कोई बुराई की बात उनमें अब तक देखी नहीं इसलिए मेरे वास्ते तो वह अच्छी ही है । आपको अगर उनमें बुराई देख पड़ती है तो किसी का क्या दोष है ?”

भाभी आग बबूला हो उठीं—“यह तुम्हारी जुर्रत, तुम मुझ पर छीटा कस रहे हो । मैं बदमाश हूँ इसलिए तुम्हें और

उसे बदमाश बतौती हूँ । तेरी यह हिम्मत कि तू ऐसी बात मुझे कहे और इन महात्मा की मदूँ भी जो यह मुझे ऐसा बातें सुन-वावे । ऐसे भाई के मुँह में तो आग लगा दे ।”

भाई साहब कुछ न बोले । उनकी समझ में ही न आता था कि वे इस मामले में क्या कहें । न तो उन्होंने अपनी स्त्री को ही कभी इतनी अनौचित्यपूर्ण बातचीत करते सुना था न अचल को इतनी जवाबदेही करते ही । यह सब देखकर वे मौन ही रहे और मन में सोचते रहे । देखें, आखिर यह लोग आज किस हद तक बढ़ते हैं ।

अचल से विराग के प्रति लगाया गया लाँछन सहन न हुआ । बिगड़कर बोला “देखिए भाभी आप समझ बूझकर बात नहीं कर रही हैं, यह अच्छा नहीं है । मुझे आप चाहे जो कुछ कह लें, उन्हें आप कुछ नहीं कह सकतीं ।”

भाभी तेज्र पड़ती ही गई—“मैं तो पचास दफे कहूँगी, तू मेरा मुँह पकड़ लेगा । यह तो मेरी तकदीर है जो ऐसे आदमी के पाले पड़ी हूँ, जो यह सब बातें सुनती हूँ, नहीं तो तेरा इसी दम मुँह फूँक देती ।” यह कहते हुए वे चौके के बाहर एक दम मुँह लाल किए हुए आकर बैठ गई ।

अचल भी इस समय आपे में न रहा था । सुनते-सुनते वह थक गया था । भाभी के पास आकर बोला—

“आपके जो मन में हो उठा न रखिए । क्या करना चाहती हैं, मैं खड़ा तो हूँ ।”

भाभी ने पास ही खड़े अचल के पैर में जोर से हाथ मार-

कर कहा—“हट न यहाँ से, क्या मुझे खा लेंगा । यह अच्छा मेरे लिए कलपाने को पैदा करके छोड़ गई ।”

अचल के भाभी ने जिस हाथ से मारा था उसे पकड़ कर पीछे ढकेल दिया और बोला—“जाता हूँ तेरी यही मर्जी है तो यही सही ।”

भाभी अचल के हाथ पकड़ कर हटाते ही बदन ढीला करके गिर पड़ीं और बोलीं—“जा तेरी आधी रात को लाश निकले, असल बाप का होना तो आज से मेरे चौके में न आना । पाल-पाल हुइहौं जी का काल ।”—इतना कहके वह सिसक-सिसक के रोने लगीं । जैसे उन्हें किसी ने बड़ा भारी घाव मार दिया हो ।

अब भाई साहब के दिल पर चोट लगी । उन्होंने अचल को ऐसी लाल आँखों से देखा, जैसे अपनी आँखों की ज्वाला से उसे वहीं जला देंगे ।

अचल घर के बाहर निकल गया ।

८

विराग ने मुरारी का स्वास्थ्य कुछ सम्हलता हुआ देखा तो उसकी जान में जान आई । उसे इन दिनों कुछ-कुछ शान्ति और चैन का अनुभव होने लगा था; क्योंकि मुहल्ले पड़ोस से सिलाई के लिए इतने काफ़ी कपड़े मिल जाते थे कि दोनों माँ-बेटों का रोटी-कपड़े का खर्चा बखूबी निवटा जाता था । जबसे चाची के घर से निकल कर वह राजेश्वर बाबू के घर में

चली आई थी तबसे शान्ति बहू के नित्यप्रति खंडे किए जाने वाले भगड़ों से भी छुट्टी मिली थी ।

कुछ दिन इस प्रकार बीते । विराग राजेश्वर बाबू के खान्दान में गंगा-जमुना के जल की भाँति मिला गई । उसे प्रतिक्षण यह प्रतीत होता था कि वह राजेश्वर बाबू के परिवार की कितनी अधिक ऋणी है जिन्होंने उसे इस संकट के समय में उबार लिया है । इसलिए वह उनके दुःख-सुख में उनके कुटुम्बियों से भी अधिक सम्मिलित होती और सब प्रकार से उनसे सहानुभूति प्रगट करने में न चूकती ।

राजेश्वर बाबू के बड़े लड़के मुन्नू बाबू ठीक वैसे ही थे जैसे रईस लोगों के साहबजादे हुआ करते हैं—यानी खाने-पीने के एक हृद तक शौकीन, दरियादिल खर्चाच और ऐयाश ! घर में उनकी पसन्द के खिलाफ उनकी पत्नी बिल्कुल तहजीब और सभ्यता से दूर और सुन्दरता की किसी परिभाषा के अन्तर्गत न आने वाली थी । नतीजा यह हुआ था कि उन्हें बाज़ार का सहारा अपनी काम-पिपासा को शान्त करने के लिए लेना पड़ता था । इस कर्म का फल भी उन्हें जल्दी ही उठाना पड़ा था कि अभी जवानी ढलने भी न पाई थी कि वे विषम रोगों से ग्रसित हो गए थे ।

जिन दिनों विराग ने आकर उनके घर में रहना शुरू किया था वे बहुत काफ़ी बीमार थे । डाक्टर पर डाक्टर आते थे और इंजेक्शनों की भरमार थी । सभ्यता के नाते, विराग जिस दिन से इस घर में आई थी दिन में दो तीन बार उनकी

तबियत का हाल पूछने जाती थी । उनसे खुद से तो वह बोलती न थी लेकिन सिर ढाँक कर उनकी पत्नी वगैरह से वह हाल अवश्य पूछ आती थी ।

मुन्नू बाबू के विषाक्त हृदय में विराग का यह सभ्यता का बर्ताव प्रेम की उतावली के रूप में परिणत हो कर पहुँचा । दो चार दस बार सोचने पर उन्हें इस बात का पूरी तौर से विश्वास हो गया । अपनी सुन्दरता व रसिकता का वे स्वयं ही इतना दम भरते थे कि उन्हें इस मामले में मुतलक शक न रहता था कि कोई भी हृदययुक्ता रमणी उन्हें देखकर उन पर मुग्ध न हो जायगी । इसलिए वे अपने खातिर नहीं विराग ही के खातिर उसके परिणय का प्रत्युत्तर देने का अवसर पाने की ताक में रहने लगे ।

अच्छे होने पर ही उन्हें इस बात का मौक़ा मिल पाया । रात का वक्त था, साढ़े नौ बजे के करीब समय हो गया था । विराग भोजन बनाकर तालटेन धीमी किए हुए, सिनेमा देखने गए हुए मुरारी की प्रतीक्षा कर रही थी । वह खाट पर लेटी हुई थी कि उसने देखा मुन्नू बाबू सीढ़ी से दबे पैर उतरते चले आ रहे हैं । वह सिर ढाँक कर खाट से उतर कर अलग खड़ी हो गई और मन में सोचने लगी 'ये आखिर इतनी रात को यहाँ किस काम के लिए आ सकते हैं ?'

इतने में मुन्नू बाबू ने एक कागज़ का टुकड़ा उसके पैरों के पास फेंक दिया और उल्टे पैर जिधर से आए थे उसी ओर को लौट गए । अब विराग के जी में धक से हुआ । उसने

कागज उठाकर उसके पत खोले और लालटेन की रोशनी तेज करके पढ़ने लगी —

प्राण प्रिये विराग,

कितने दिनों से तुम्हारे लिए मेरी हृदय में प्रेम की आग जल रही है। मैं कब से अपनी इस भावना को तुम पर प्रगट करने का उतावला हूँ जानती हो ? जब से तुम इस बार बनारस से इस विश्वमोहन रूप में आई हो। लेकिन मुझे डर था कि कहीं तुम मुझे पापी या दुराचारी न समझो। मुझे महज तुमसे दो-दो बातें करने की आकांक्षा है और एक प्रेम पूर्ण दृष्टि की; इससे अधिक और कुछ नहीं। सिर्फ इतने के लिए मेरी यह लाखों की सम्पत्ति तुम्हारे चरणों पर न्योछावर है। इसे प्रलोभन न समझना यह मेरे हृदय का सच्चा उद्गार है। अपनी इस आकांक्षा को लिए मैं तुम्हारे सामने करबद्ध नत्त हूँ। अब यह तुम्हारी इच्छा पर है कि मुझे डुबा दो या पार कर दो।

तुम्हारे प्रेम में व्याकुल

तुम्हारा ही

“मुन्नू”

विराग पत्र पढ़ कर तड़प उठी। उसका स्वभाव कुछ ऐसा था कि जब तक अपनी भावनाओं को भुलाए रहती थी उसके मन में थोड़ी बहुत शान्ति रहती थी। जब तक कोई ऐसी उत्तेजक घटना न हो जाती थी उसका मन अपने दायरे में रहता था लेकिन जहाँ कोई असाधारण बात हो जाती तो उसका मन इधर उधर से चक्कर काटकर उसकी सुसुप्त काम

पिपासाओं को जाग्रत कर देता । विराग ने इस समय जैसे ही पत्र पढ़ा उसे अपनी परिस्थिति पर बड़ा ज़बर्दस्त दुःख हुआ । वह सोचने लगी, 'यदि आज मैं विधवा न होती; इस प्रकार असहाय न होती तो किसका दम था कि मुझे इस प्रकार के बुरे प्रस्ताव को लेकर पत्र लिखता । मेरा पति यदि आज जीवित होता तो इस बात को जानकर या तो वहीं जीवित रह जाता या ऐसी कुचेष्टा करने वाला ही ।' इसके बाद ही उसकी भावनाएँ, यह सोचते-सोचते कि यदि उसका पति जीवित होता तो उसका जीवन कैसे आनन्द से कटता, विकृत हो गईं और वह कामाग्नि से व्याकुल हो कर पड़ रही ।

इतने में मुरारी आ गया । आजकल वह दूसरे ही रूप में था । अब वह साल भर पहल वाला पीत वर्ण और दुर्बल हाथ पैरों वाला मुरारी न था । उसकी कुछ ऐसी आदत थी कि वह हर मामले में हृद तक पहुँच जाता था । अचल ने उसके दुबले शरीर को ठीक करने के लिए उसे कसरत करने की सलाह दी । कहाँ तो वह इसके बिल्कुल खिलाफ़ बातों में पड़ा हुआ था कहाँ उसे कसरत में ऐसा मज़ा आया कि इसकी हृद कर दी । घर में कसरत करते-करते अखाड़े की धुन सवार हुई । दोनों बख़्त ज़ोर करने जाने लगा और सामने भैंस दुहाकर दूध पीता था । विराग ने देखा मलमल के कुर्ते से मुरारी के बदन की कान्ति फूटी सी पड़ती थी और गले में काले डोरे से बँधा सोने का गंडा ऐसा फबता था कि क्या बात है । मन में आया कि एक बार मुरारी से मुन्नु बाबू की हरकत का ज़िक्र कर दे तो उन्हें

अपनी आशिकमिजाजी का पूरा मज्जा मिल जाय, परन्तु शराफत और बदनामी के डर ने उसकी जुवान रोक ली। वह मन में सोचने लगी, 'मेरे कहते ही यह आग बबूला हो जायगा और बहुत मुमकिन है कि मुन्नु बाबू पर कोई ऐसा घातक प्रहार कर दे जो उनकी जान पर बन आए। तब भी तो मेरी ही मट्टी पलीद होगी। यह बँध जायगा और यह किस्सा शहर के आदमी-आदमी की जुवान पर होगा। मैं इतना रुपया कहाँ से लाऊँगी जो इसकी पैरवी हो सकेगी। इतने मँहगे मोल मैं प्रतिकार न लूँगी।'

मुरारी ने कहा—“माँ मैं कितनी देर से खड़ा हूँ, तुम देखती नहीं हो। क्या सोच रही हो? मुझे बड़ी जोर की भूख लगी है।”

विराग सोचती चली जा रही थी—‘मैं घोर कलियुग की स्त्री हूँ, द्रोपदी और राजपूतनी वीराँगना नहीं हूँ जो आत्मसन्मान के लिए खून की नदिऍँ बहा दें। मेरे लिए तो मेरा लाल.....’

मुरारी की बात से विचार-धारा टूटी। फौरन हड़बड़ा कर उठी और बोली—“अभी आई, बेटा!” और चौंके की तरफ झपटती हुई चल दी।

खाना खत्म हो जाने पर कुल्ला करते हुए मुरारी ने कहा—“आज तुमको क्या हुआ है माँ? जब से मैं आया हूँ एक दफे भी नहीं बोली हो आखिर ऐसी कौन सी फिक्र तुम्हें सवार हो गई?”

विराग ने गंभीरता से भरे हुए कंठ से कहा—“तुम्हें ही

अगर मेरी चिन्ता होती तो फिर रोना ही किस बात का था !”

मुरारी माँ के कंठ की गंभीरता देखकर चौंका । ‘माँ तो इस तरह कभी नहीं बोलती; उसके ओठों पर तो मुस्कराहट और शब्द सदा साथ ही साथ आते हैं । आज ज़रूर उसका हृदय दुःखित है । उसे अपनी लापरवाही पर अफ़सोस हुआ ।’ बोला—“मुझे बताओ न माँ तुम क्या चाहती हो ? आखिर मैंने तुम्हारी आज्ञा को कब टाला है । हाँ, मुझे इतनी दुनियादारी नहीं आती जो मैं यह समझ लूँ कि दुनिया मुझसे क्या चाहती या तुम मुझसे क्या चाहती हो । तुम मुझे बताओ कि तुम्हारी चिन्ता का क्या कारण है, फिर देखो मैं उसे दूर करता हूँ या नहीं ।”

इतनी समझदारी की बातें मुरारी के मुँह से निकलती देखकर विराग ने उसके मुँह पर दृष्टि डाली । दृढ़ विचारों को वहाँ केन्द्रित देखकर एक बार हृदय फिर मचल उठा कि मुन्नु बाबू की बात का कच्चा चिट्ठा बयान कर दे; परन्तु इस बार भी मस्तिष्क बाजी ले गया । वह वांली—“मैं चाहती हूँ कि यह मकान छोड़ कर कोई ऐसा छ़ांटा-मोटा मकान किराए पर लें जहाँ एकान्त हो, औरतों की पञ्चायत से छुट्टी मिले और कुछ शान्ति का अनुभव हो ।”

“बस इतनी सी बात”—मुरारी ने ठट्ठा मार कर हँसते हुए कहा,—“मैंने समझा था कोई बड़ी भारी बात कहोगी । आज ही मुझ से गिरधारी पहलवान कहते थे कि काटन मिल के पास

बस्ती बहुत बढ़ गई है, वहाँ एक अखाड़ा खोलना चाहता हूँ। हिन्दुओं को संगठित करने का वहाँ अच्छा मौका है। फिर शागिर्द भी बहुत होंगे खर्चेपाने की कमी न रहेगी। मुझसे कहने लगे—अगर तुम साथ देओ तो काम बखूबी चल सकता है लेकिन इतनी दूर रह कर कुछ नहीं हो सकता, वहीं रहना पड़ेगा। मैंने “हाँ” “न” कुछ न कहा, कहा—सोच के जवाब दूंगा।”

“और किराया कहाँ से लाओगे बाबू साहब ? पहलवानी से रेंटिएँ नहीं चला करतीं। यहाँ तो जान पहचान है मैं माँग-जाँच कर भी बख़्त पर काम चला लेती हूँ वहाँ किसके आगे हाथ फैलाऊँगी ? तुम तो कभी कुछ करोगे नहीं।”

“इसकी सबकी तुम परवाह न करो। ये मेरे जिम्मे रहने दो। तुम वहाँ चलने की हामी भरो इस सब का इन्तज़ाम मैं करूँगा। हाँ एक बात पहले से बताए देता हूँ तुम्हें ऐसी संगिन साथिनें वहाँ न मिलेंगी। वहा तो मिल के बेचारे मजदूर, मिस्त्री और कारीगर ही रहते हैं। उनकी गन्दी स्त्रियों में तुम्हारा मन कैसे बहलेंगा !”

“अच्छा व्यर्थ की बकवास तो करो नहीं, सबेरे जा के मकान तय कर आना। जितना जल्दी यहाँ से निकास हो जाय उतना ही अच्छा।”

बिछौने पर लेटते हुए मुरारी ने जैसे अपने आप ही कहा—
“मैंने कहा—पता नहीं आज क्या हो गया जो माँ ऐसा मुँह बनाए है।”

विराग ने एक ठंडी साँस ली और चढ़र में अपने पैर फैलाए। मुझ बाबू की वह हरकत उस तक ही रह गई, मुरारी उससे अनभिज्ञ ही रहा। स्त्रियों के इस हृदय-कोष में पता नहीं कितनी ऐसी घटनाएँ छिपी रहती हैं जो पुरुषों के कान में पड़कर रक्तपात का बायस हों। स्त्रियों की यह सहन करने की और बात को दबाने की प्रवृत्ति संसार की शांति की बहुत बड़ी पोषक है।

६

अचल घर से निकला तो उसकी आँखें आँसुओं से डब-डबायी हुई थीं। उसे आज दुनिया में अपना कोई दिखाई न दे रहा था जिसके पास बैठ कर वह अधिक नहीं, अपनी रोटी की चिन्ता से ही मुक्त हो जाय। घर से आज उसे दूध की मक्खी की भाँति निकाल कर फेंक दिया गया है। अब सूरज चाहे जितनी संसार पर आग उगले, हवा लूह का का चाहे जितना भीषण रूप धारण करके शीतलता को विलकुल भूल जाय पर उसे आश्रय के लिए कोई स्थान नहीं है। इस संसार में अपना कहने को एक फुट ज़मीन नहीं। वह पार्क के जलते हुए फाटक को अपने हाथ से खोलते हुए एक बार अपने पिता और पुरुषों को कोसने लगा 'इन्हीं लोगों की फचूल खर्ची ने तो मुझे आज कौड़ी का तीन-तीन कर दिया, नहीं तो घर में किस बात की कमी थी। वो लोग तो मजो उठा कर चल दिए मेरे लिए आज खाने के भी लाले पड़ रहे हैं। ऐसे पिता के नाम पर हजार बार

लानत जो इस प्रकार संतान को पैदा करके संसार में ठोकरें खाने को छांड़ दे। अपनी तरफ से सन्तान के सुख का प्रबन्ध करना तो अलग रहा उनकी जो मौरूसी जायजाद हों उसे भी चाट पोंछ कर बराबर कर दे। मैं तो ऐसे पिता पर लानत ही भेजूँगा। प्रशंसा, तर्पण और श्राद्ध तो वे करें जिनके पूर्वज उनके मौज करने का कुछ इन्तजाम कर गये हों।'

लूह में जलते भुनते अचल के मस्तिष्क में घन्टों इसी तरह उसके खून को उवाल देनेवाले विचार आते जाते रहे। माता, पिता, संसार, ईश्वर सभी तो आज उसके क्रोध के पात्र थे। दुपहरिया धीरे-धीरे ढल रही थी पर अब दूसरा संकट सिर पर सवार होता जाता था। गर्मी के पहाड़ से दिनों में भूख भी जल्दी ही सताती है और फिर बेकार आदमी पर तो सभी वृत्तियाँ अपना-अपना दाँव गाँठती हैं।

अब अचल से भूख के मारे बिल्कुल न रहा गया तो वह पार्क से निकल कर चला, पर समझ ही में न आता था कि कहाँ जाय। पैसे बिना तो बड़ा से बड़ा बज़ार भी कुछ नहीं दे सकता। थोड़ा सोचने विचारने पर विराग की याद आ गई। 'उनके यहाँ चलना ही ठीक है, वे तो कभी भी बिना कुछ खिलाए घर के बाहर आने नहीं देती।' इस बात ने ही मन को बड़ा सन्तोष दिया, बड़ी तेज़ी से वह विराग के घर की ओर बढ़ा।

विराग के घर पहुँच कर अचल ने कुछ और ही रंग देखा। घर का सारा सामान मुरारी और विराग बाँध रहे थे। पसीने

से तर-बतर मजदूर उसे ठेले पर ले जाकर रखते थे। कमरे की श्री बिगड़ी हुई थी। तस्वीरें और सजावट का सामान हट जाने से दीवारों पर छेद ही छेद हो गए थे। किसी-किसी जगह का चूना और पलस्तर भी निकल गया था। जैसे किसी स्त्री के सांहाग के चिह्न उतर गए हों।

अचल को देखते ही मुरारी हाथ जोड़ कर खड़ा हो गया और मैले कपड़ों को गठरी में बाँधती हुई विराग अचल के अभिवादन का प्रत्युत्तर दे कर मुस्कराती हुई बोली—“तुम बड़े अच्छे मौके पर आ गए भैया। हम लोग आज इस मकान को छोड़ कर काटन मिन के पास क्वार्टरों में जा रहे हैं। यहाँ से दूर जरूर है पर कभी-कभी आया करना। मुरारी, भैया को पता बता दे मकान का।”

मुरारी बताने लगा—“वह बशीरत गंज का जो चौराहा है उससे बाईं तरफ जाने वाली सड़क पर करीब दो सौ कदम चल कर दाहिने तरफ को महाबीर जी का मन्दिर है उसके पास ही हम लोगों का अखाड़ा खुदा है और उसके ठीक सामने ही वाला मकान है।”

अचल ने कहा—“हाँ मैं समझ गया। बहन मेरे वास्ते कुछ काम बताती हो तो मैं तैयार हूँ।”

“तुम्हारा हमेशा सहारा है भैया, जब जरूरत होगी तुम्हीं को याद करूँगी। इस वक्त तो सब सामान भेजा जा चुका। वहाँ आया करोगे ना ?”

“जरूर, जरूर !”, अचल ने कहा—“अच्छा अब चलता

हूँ ।”

गली में धीरे-धीरे कदम रखते हुए अचल चलता चला जाता था । मन में उथल पुथल मची हुई थी और सिर और पेट भूख की वजह से दुखने लगे थे । ‘दुनिया भी कैसी उलटी है’ उसकी विचार धारा बह उठी ‘इसमें जितना कार्य संचालन होता है मनुष्य की आवश्यकता के ठीक विरुद्ध । पानी समुद्र पर खूब बरसेगा और रेगिस्तान में सूरज तपने की हद कर दिखावेगा । जिनको हजारों की आमदनी है उनके लड़के भी कम से कम सौ दो सौ रुपए की नौकरी पावेंगे और जो भूखों मर रहे हैं उन्हें लाख योग्यता रखने पर भी कोई टके को न पूछेगा । मैं खाना खाकर निकलूँगा तो सभी मेरे सामने मिठाइयाँ रखेंगे पर आज जब भूख से जान निकली जा रही है तो कहीं सूखी रोटी का भी सहारा नहीं दिखाई देता ।’

“छोटे—छोटे, तू तो सुनता भी नहीं भाई ।” अचल ने सिर घुमाकर देखा, रामलाल की माँ खड़ी उसे बुला रही है । चिक उठाकर अन्दर गया और हाथ जोड़े ।

“जीते रहो, पास हो गया न, बड़ी खुशी हुई । रामू दूकान से आया तो उसने बताया । कहता था, अचल से मिल कर मिठाई का तगादा करना है ।”

अचल ने हाथ जोड़कर कहा—“हाँ आप लोगों के अशीर्वाद से—”

“लेकिन क्यों रे आज तेरा मुँह उतरा उतरा क्यों है ? आज तो तुझे गुलाब ऐसा खिला होना चाहिए ।”

“कहाँ ? नहीं तो । धूप में चलकर आया हूँ इसलिए चाहे जो कुछ हो ।”

“ये बात तो नहीं है, खैर चल अन्दर कुछ नाश्ता कर ले, अन्नपूर्णा भी बैठी खा रही है ।” यह कह कर उसने सामने के दरवाजे पर से पर्दा हटाया ।

अन्नपूर्णा ने कहा — “आइए भाई साहब, आप ने तो मुँह मीठा कराया नहीं हमारी तरफ़ से ही सही ।”

अचल की निगाह सामने पड़ी, अन्नपूर्णा एक तश्तरी में मिठाइएँ रखे खा रही थी । मन एक बार मचल उठा, भूख का वेग जैसे दुगुना हो गया । पर उसने कहा—“नहीं इस वक्त तो माफ़ी दें मेरा पेट भरा हुआ है ।”

सभ्यता, शराफ़त, दुनियाबी तरीके हमें कितना आढम्बर और झूठ सिखाते हैं । सभ्यता जितनी बढ़ी हुई है उसमें उतनी ही कृत्रिमता है ।

माँ ने कहा—“आज इनका मन कुछ ठीक नहीं मालूम होता है । देखती नहीं मुँह कैसा उतरा हुआ है और फिर बताते भी नहीं, न जाने क्या बात है !”

अचल ने कहा—“अच्छा, अब आज्ञा दीजिए । फिर कभी आऊँगा ।”

“जाने को कैसे कहूँ बेटा । लेकिन ज़रा दुकान होते जाना, रामू मिलने को बड़ा उतावला था ।”

अमीनाबाद के चौराहे पर रामलाल की टोपी की दुकान है—राष्ट्रीय टोपी भंडार । भारतीय स्वतन्त्रता के इतिहास में

इस दुकान को वही स्थान मिलना चाहिए जो मैडम और मिस्टर डिफार्ज की शराब की दुकान को फ्रांस की राजक्रान्ति में प्राप्त था। मज्जा यह है कि डिफार्ज की दुकान में तो लोग खरीदार बन कर ही जा सकते थे यहाँ नंगे सिर रहने वालों की ही बैठक ज्यादा है। असेम्बली के एम० एल० ए०, अखबारों के सम्पादक और लेखक, कांग्रेस के नेता, सोशलिस्ट और कम्युनिस्ट पार्टी के पोषक, किसानसभा के उत्साही कार्यकर्ता, मिल यूनियन वर्कर, किसान और मजदूर सभी तो यहाँ आ-आकर बैठते हैं।

दुकान एक छोटा मोटा ठीक-ठीक कहा जाय तो तर्कालय बनी रहती है। किसी न किसी मसले पर आपको वहाँ पहुँचने पर बहस छिड़ी हुई दिखाई देगी। साथ ही दुकानदारी भी होती जाती है। रामलाल टोपी दिखाता जाता है, ग्राहकों से बड़ी सहूलियत से बात भी करता जाता है और बहस में भी हिस्सा लेता जाता है। बहस करने वाले लोग, ऊँच-नीच, अमीर-गरीब हिन्दू-मुसलमान का ख्याल किनारे रख पास ही रखी साम्यवादी सुराही से पानी उँडेल कर पीते हैं और फिर नई ताकत से—कांग्रेस गहारी कर रही है या नहीं—यह तय कर बैठते हैं।

अचल दुकान पर पहुँचा तो शाम के छः बज रहे थे। अभी बिल्कुल टंडा न हुआ था इसलिए दुकान पर भीड़-भाड़ न थी। रामलाल बैठा एक चिट्ठी टाइप कर रहा था, अचल को इस तरह चुपचाप आकर बैठे जाते देख बोला—“क्यों मेरे यार पास होने के दिन यह मुहर्रमी सूरत बनाई है !”

अचल ने कोई जवाब नहीं दिया। भूख ने इस वक्त उसे

व्याकुल कर दिया था, उससे मुँह से आवाज निकल ही न संकी, गला भर आया और अश्रुमय नेत्रों से वह रामलाल की तरफ देखकर ही रह गया ।

रामलाल कुछ ऐसा वैसा नहीं है । एफ० ए० तक पढ़ा हुआ, कांग्रेस आन्दोलन में कई बार जेल की हवा खाए हुए, घाट-घाट का पानी पिए हुए और दुनिया का रवैय्या समझने वाला । अचल को वह होनहार समझता और उससे स्नेह करता था । उसे इस प्रकार मूक देख कर वह चिट्ठी मशीन पर जैसी की तैसी छोड़कर उसके पास आकर बैठ गया । स्नेह से कन्धे पर हाथ रख कर उसने कहा—“आज कैसे हो रहे हो भाई ? कुछ घर में भगड़ा हुआ है क्या ?”

अचल रामलाल की आत्मीयता से परिचित था, उसके प्रश्न का उसने सम्मति सूचक सिर हिला कर उत्तर दिया ।

पलक मारते ही सारा माजरा समझ गया—“अच्छा चलो पहले नाश्ता कर लें मुझे ज़रा भूख लगी है ।”—उसने अचल का हाथ पकड़ कर उठाते हुए कहा । अचल उससे नहीं न कर सका, उठकर उसके पीछे-पीछे चल दिया ।

दूकान में आग्रह कर करके भर पेट खिला देने के बाद रामलाल ने कहा—“तुम्हारे पास होने की दावत तो यों खतम हुई । अब मुझे बताओ घर में क्या हुआ है ?”

अचल ने भाभी से जो कुछ बात-चीत सबेरे हुई थी रामलाल को कह सुनाई । सुनकर उसने कहा—‘लेकिन भाई साहब ने तो तुमसे कहा नहीं कि तुम घर से निकल जाओ । तुम्हारी

राय हो तो उनसे एक दफे पूछ लूँ ।”

“यह सब तमाशा अब कुछ नहीं होना है”—अचल ने दहता से कहा । “तुमसे मैं कुछ माँगता थोड़े ही हूँ जो तुम इतना व्याकुल हुए जाते हो तुमने पूछा तो मैंने बता दिया ।”

रामलाल ने कुछ गम्भीरता और कुछ हँसी के साथ कहा—
“देखो अलच मैं भैया भाभी नहीं हूँ, मुझसे अकड़ोगे तो मैं यहीं अमीनाबाद के चौराहे पर तुम्हें इतनी मार मारूँगा नि तुम्हें छटी का दूध याद आ जायगा । सीधे-सीधे यह नहीं कहते कि भैया से अब बात करने की जरूरत नहीं । तुम्हारी मन्शा नहीं है न सही ।”

अचल के मुख पर एक क्षीण मुस्काराहट की रेखा आ गई और वह मुँह फेर कर दूसरी ओर देखने लगा ।

“मेरे घर का दरवाजा तुम्हारे लिए हमेशा खुला है । मजे में रहो और खाना खाओ ।” कहते-कहते रामलाल ने अचल के मुँह पर का भाव पढ़ कर कहा—“और अगर यह पसन्द न हो तो तुम मर्चेन्ट्स एसोसियेशन के दफ्तर में रह सकते हो । खाने के लिए पैसे मैं तुम्हें देता रहूँगा, जब तक तुम्हें कुछ काम नहीं मिल जाता है । यह बात पसन्द है ?”

अचल ने कहा—“हूँ ।”

१०

“खूब ! खूब !! ये चारों खाने चित्त, वाह मेरे मुरारी; कुशती हो गई ।”—कहकर गिरधारी पहलवान ने दौड़ कर मुरारी को

कन्धे पर उठा लिया ।

अखाड़े में शोर मचा हुआ था, कोई दाँव के साफ होने की तारीफ़ करता था और कोई फुर्ती की । रसूल धीरे धीरे उठकर आया और अपने उस्ताद के पास सिर नीचा करके खड़ा हो गया । “जा बे तूने तो आज मज्जे के अखाड़े की नाक कटवा दी ।” उस्ताद कल्लन ने उसकी तरफ़ तिरछी नज़र से देखकर कहा ।

रसूल भेंपा हुआ तो था ही, उस्ताद का बात सुनकर आग बबूला हो उठा । “बातें करना और जीज है उस्ताद और कर दिखाना और । मैं तो यह जानता हूँ कि मेरी जगह आप ही होते तो सिवाय आसमान देखने के और कुछ कर नहीं सकते थे । देखते नहीं थे मैंने उसे नीचे दबा के नकतोड़ से आधा चित कर लिया था कि वह जैसे विजली हो गया । मेरी तो समझ ही में नहीं आया कि उसने क्या किया ।”

“खिसियानी बिल्ली खम्भा नोचे, वह कल का लौंडा हमको इस दाँव पर चित्त फेंक देता ! जा बे शरमाता तो है नहीं, मुँह-जोरी करता है ।”

“खैर उस्ताद को तो क्या फेंक देता !” एक दूसरा पट्टा बोला, “लेकिन यह दाँव उसका है बहुत रवाँ । रसूल जब तक उसे नीचे लाया कैसा मरगिल की तरह बना रहा और जैसे ही इसने उसकी कनपटी के नीचे से चित करने को हाथ डाला क्या फेंका है उसने हाथ दबा के !”

“अब यहाँ से चलना मत यहीं मरते रहना,” रसूल ने

बिगड़ कर कहा ।

“तू अपना मुँह काला कर ना शरमदार के बच्चे । मैं तो जाऊँ पहले पच्चीस रुपए उसे गिन आऊँ ।”—उस्ताद ने झुंझला कर कहा ।

रसूल ने करीम के साथ चलते हुए कहा—“देखता है करीम इन्हीं उस्ताद ने हमारी बदौलत सैकड़ों बार रुपए जीते, तब तो कुछ नहीं, आज कैसे लाल पीले हो रहे हैं । या खुदा मुझे कभी ऐसी अकल न देना कि दुश्मन को भी पहलवानी करने की राय दूँ ।”

रुपए देते हुए कल्लन उस्ताद ने कहा—“ठोक बजा ले भाई गिरधारी । ये लड़का तो बड़ा कसदार है, देखने में सीकिया और है बिल्कुल ततैया मिर्चा ।”

गिरधारी के इशारे पर मुरारी ने कल्लन उस्ताद को आदाब बजाया ।

“जीते रहो भाई, बड़े होनहार हो । यह अखाड़ा तुम जमा दोगे । हमारे यहाँ से हर मंगल दो एक छोटी जोड़े माँग लिया करो तो तुम्हारे अखाड़े पर मजमा हो जाया करेगा और तुम्हें लड़ने वाले मिलेंगे ।”

“आप ही की मेहरबानी पर मुनहसिर है ।”—मुरारी ने आज्ञिजी से कहा ।

“अब आज हमारी तुम्हारी भी दो-दो बातें हो जाय मुरारी”—गिरधारी पहलवान ने कहा ।

“बातें होना क्या है मैंने तो आपसे पहले ही बता दिया

के आँसू निकलने को हुए। वह वहीं पड़ी हुई चारपाई पर बैठ गया। विराग कपड़ा सीने की मशीन के पास, जिससे वह अभी तक काम कर रही थी, बैठती हुई बोली—“ज़रा ठंड हो तो मुझे शर्बत पिलाऊँ मैंने अपने घर पर अनार का शर्बत तयार किया है।”

शर्बत पिलाने के बाद विराग ने कहा—“अब यह बताओ अचल तुम इतना आज उदास क्यों हो ?”

अचल इस समय तक काफ़ी संयत हो चुका था। दिमाग का वह भावावेश कम हो गया था। उसने गंभीरता से कहा—
“बहन क्या बताऊँ इधर घर से बिल्कुल जवाब हो गया है। मैं आजकल मज़दूर सभा के दफ़्तर में रहता हूँ, खाने-पीने तक का कुछ ठीक नहीं और एफ० ए० में भर्ती होने का इरादा कर लिया है। रुपया है नहीं वहाँ करीब पचास साठ रुपए की ज़रूरत है। इस वजह से तबीयत बहुत परेशान है।”

विराग ने कहा—“भैया अगर मेरी ठीक-ठीक राय पूछो तो वैसे तो विद्या जितनी हासिल की जाय उतना ही अच्छा है पर भैया सब बातें अपनी हालत देख कर करना चाहिए। तुम आखिर इतना रुपया कहाँ से लाओगे कि एफ० ए० की पढ़ाई और अपने रहन सहन का खर्च सम्हाल सको। मैं तो यह देखती हूँ कि जिनके यहाँ सौ-सौ डेढ़-डेढ़ सौ का महीना आता है वे भी लड़कों की पढ़ाई में रो मरते हैं। तब तुम इतना खर्च कैसे उठा सकोगे भाई ? तुम तो भाई अब कहीं नौकरी तलाश करो और आनन्द से रहो, किस भ्रष्ट में पड़ना चाहते हो ?”

अचल से यह बात बहुत लोग कह चुके थे। उसे यह उपदेश सुनना बहुत खलता था। वह चुपचाप बैठा सुनता रहा, जब विराग ने अपनी बात खत्म कर दी तब भी वह कुछ न बोला।

विराग ने कहा—“क्यों क्या सोचते हो ? मेरी बात जँचती नहीं क्या ?”

“हाँ, मैं तो पढ़ने का तय कर चुका हूँ। चाहे जितनी ही मुसीबत भेलना पड़े, मैं इस बार रुपया जुटा कर नाम अवश्य लिखाऊँगा।”

“तब तो फिर ठीक ही है”—विराग ने कहा—“मैं क्या बताऊँ, मैं तो मुरारी से इतना तंग आ गई हूँ ! न कुछ करना न धरना, दिन नए-नए उत्पात जाता करता है। आमदनी कुछ है ही नहीं खर्चा ही खर्चा है। मेरे पास तो जो कुछ था सब मुरारी ने फूँक ताप डाला अगर यही हाल रहा तो थोड़े दिन में रोटियों के भी लाले पड़ जायँगे। भगवान ने मुझे इस लायक ही नहीं बनाया कि तुम्हारी कुछ मदद कर सकूँ। नहीं तो मेरे लिए तुम और मुरारी कुछ और हों।”

अचल ने बहुत रूखेपन से उत्तर दिया—“आपने यह कैसे समझ लिया कि मैं आपसे कुछ मदद चाहता हूँ, मुझे जो करना है वह तो मैं अपने ही बल पर करूँगा। क्या सब से माँगता थोड़े ही फिरूँगा।”

विराग बिल्कुल श्रीहत हो गई। उसने कहा—“मैं यह कहाँ कह रही हूँ कि तुम मुझसे कुछ माँग रहे हो। यह तो मेरी

अपनी भावना थी। फिर भैया अचल मेरे लिए न तुम्हीं सब में हो, न तुम्हीं को मुझे सब में समझना चाहिए। मैंने तो अपने मन से कहा कि मेरे पास इस वक्त रुपया तयार नहीं है जो तुम्हें दे सकूँ। अगर तुम कर सको तो मेरे पास एक नत्थ है उसे।”

अचल ने कहा—“नहीं-नहीं बहन, मुझे यह सब कुछ नहीं चाहिए। अच्छा मैं चलता हूँ।”

विराग के मुँह की बात मुँह में ही रह गई और अचल उठकर चल दिया। वह उसकी मुँह की ओर ताकती ही रह गई। अचल मन में सोचता जाता था ‘कैसे मतलब के हैं सब लोग। अपनी बात पड़ती है तो कैसी खुशामद करते हैं और दूसरे की दफे, ये तोता चश्मी। मुझे नत्थ दिखाती हैं, लाके दे देतीं तो वह भी जानता, अब ऐसी कंगाल हो गईं हैं कि इनके पास दस पाँच रुपए भी नहीं है। ये सब न देने की बातें हैं। खैर, यह वक्त क्या हमेशा इसी तरह बना रहेगा? हर्गिज नहीं।”

१२

जब से घर में खाना बन्द हुआ था अचल को रोटी खाने को बहुत कम मिलती थी। दो एक बार रामलाल के साथ उसके घर खाना खाने गया था तभी रांटी मिली थी नहीं तो अक्सर पैसे मिलने पर बाज़ार में आकर पूरी खाता था। अभी तक हांटल की रोटी उसने कभी न खाई थी, परन्तु यह रोज-

रोज पूरी खाना कब तक चल सकता था। उसका पेट खराब हो गया। दिन भर पेट में कुसकुसाहट होती और सिर में दर्द होता। इसके अलावा पैसे मिलने की समस्या बड़ी बेढब थी। वह हिन्दी के एक अखबार के दफ्तर में जाकर अंग्रेजी से खबरें अनुवाद करता था। जब कभी वहाँ काम अधिक होता और इसे मिल जाता तो चार छः आने से भेंट हो जाती, जब ये पैसे मिल जाते तब तो पेट का ठिकाना लग जाता, नहीं तो पानी पीकर ही समय गुज़ारना होता।

रहता वह मिल वर्क्स यूनियन के दफ्तर में था। रामलाल ने इसका इन्ताज़ाम कर दिया था। रामलाल इस बीच में किसी लीडर के साथ देहातों में सभाएँ करने चला गया था। एक दिन आया तो देखा कि अचल दफ्तर के कमरे में चटाई पर बहुत सुस्त पड़ा हुआ है। उसे अपनी गलती का ख्याल आया 'मैंने इसके लिए कुछ ठीक नहीं किया। देश भर का ठेका लिए घूमता हूँ और घर में अपना दोस्त बिना खाने के पड़ा है। मैंने इससे कहा था कि खाने के मैं पैसे दे दूँगा और फिर चलते बखत याद ही न रही।'।

रामलाल के कदमों की चाप तो अचल ने सुनी पर उसने मुँह घुमाकर देखा नहीं। दफ्तर में दिन भर ही जाने कितने आदमी आया करते हैं। इतने में उसके पास बैठते हुए रामलाल ने उसके कंधे पर हाथ रख कर कहा—“कैसे लेटे हो अचल ?”

“पेट में दर्द हो रहा है”—अचल ने कहा।

कि जोड़ लड़ाके रुपया ले लेना और बात है पर मैं यह उस्तादी की कमाई नहीं खाऊँगा ।”

“क्यों भाई, उसमें क्या बुराई है ज़रा हमें भी तो बताना ?”

“बुराई हो चाहे न हो, मुझे यह पसन्द नहीं है कि किसी ने अखाड़े में क़दम रक्खा नहीं कि बस उसके पीछे पड़ गए ।— भाई शागिर्द हो जाओ तो तब कुछ ढंग से सिखाया जाय । सवा रुपया, लंगोट, और महावीर जी के लड्डू मंगल को ले आना ।—हर मंगल को मट्टी का पैसा तहसीलने लग गए । बताइए यह अखाड़ा खोला है कि आमदनी का ज़रिया बनाया है । वाह री धाँधली ।”

“तो तुम अखाड़ा खूब चलाओगे”—गिरधारी ने मुँह बिचका कर कहा ।

“क्यों ! तुम्हें मेरे अखाड़ा चलाने के बारे में शक है ?”

“नहीं मैं यह नहीं कहता कि तुम्हारे अच्छे उस्ताद होने में या पट्टों की ज़ोर कराने के मामले में मुझे कुछ शक है । मुझे शक है तुम्हारी इन्तज़ाम करने की क़ाबलियत के बारे में । इस मामले में तुम अभी अपनी उमर के माफ़िक ही कम जानकारी रखते हो । अगर तुम, पैसे की वक़्त और इसे जिस प्रकार भी मिल सके हासिल करने की ज़रूरत है, यह नहीं जानते तो तुम दुनिया को ही नहीं जानते हो ।”

“मुझे पैसे की वक़्त जानने की न ज़रूरत है न मैं वह जानना ही चाहता हूँ ।”

“तो तुम उसके जाने बिना कुछ कर भी नहीं सकते । बिना पैसे के किसी छोटी से छोटी बात का इन्तजाम नहीं हो सकता यह तो इतना बड़ा आखाड़ा है ।”

“मैं कहता हूँ कि जब तक आप लोग कुछ करके न दिखाएँ आपको किसी से कुछ माँगने का हक ही क्या है । वहाँ आपके गनेशगंज वाले अखाड़े में मैं जोर कराता था तो यह हाल कि गर्मी में तो मारे लोगों के कहीं तिल धरने को जगह न मिले पर जाड़े के दिनों में एक भी आदमी अखाड़े में लंगोट पहन कर उतरने वाला न दिखाई दे । आखिर यह सब क्या है ? इसी तरह आप, साल में चार महीने जोर कराके जो आवे उसे पैसों के सवालों से परेशान कर कर के देश में तन्दुरुस्त नौ-जवानों की तादाद बढ़ाने चले हैं ?”

“देखो मुरारी तुम अभी लड़के हो, दुनिया का रंग ढंग तुमने नहीं देखा । महज्जा ऊँचे ऊँचे ख्याल तुमने जान लिए हैं, लेकिन अभी तुमने यह नहीं जाना है कि दुनिया में इन ख्यालातों पर अमल किस तरीके से किया जाता है । दुनिया का तरीका वह है कि बातचीत के वक्त पर खूब लम्बी चौड़ी हाँको, एक से एक ऊँचे सिद्धान्तों और आदर्शों की दुहाई दो लेकिन जब अमल करने की बात आवे तो सबसे पहले अपना उल्लू सीधा करने की फेर में रहो । यही आजकल का मूल मन्त्र है । जो इसे जानता है उसी पर भगवान की भी कृपा होती है । इसलिए मेरी बात यह ध्यान में रखो कि अगर अखाड़ा जमाना चाहते हो तो पैसे की तरफ़ वैसी ही तवज्जह रखो जैसी मैं

विराग]

रखता हूँ वरना न तुम्हारा ही काम चल सकता है न ।
का ही ।”

“तो मेरा रास्ता और है और तुम्हारा और”—कह कर
मुरारी चल दिया ।

११

अचल ने घर से सम्बन्ध तोड़ दिया पर अब उस अपना
जीविका निर्वाह करने के लिए बड़ी कठिनाइयाँ भेलनी पड़ती
थीं । इधर पढ़ने का भूत भी उसके सिर पर सवार था । कहाँ
तो उसकी इच्छा यह थी कि इन्ट्रेंस पास कर लेने के बाद वह
पढ़ना लिखना छोड़ कर नौकरी करेगा और इच्छानुसार जीवन
व्यतीत करेगा, कहाँ अब उसे पढ़ने की ही धुन सवार हो गई ।
वह बार-बार मन में कहता, ‘अगर पढ़कर एक दिन इन लोगों
को बड़ा आदमी बन कर न दिखा दिया तो संसार में कुछ न
किया । भाभी साहबा समझती हैं कि बिना उन लोगों की
सहायता के मैं पढ़ ही नहीं सकता हूँ । मैं उनके इस मुगालते को
दूर करके ही मानूँगा ।’

जहाँ तक तय करने की बात है तय कर लिया पर आखिर
उसके लिए साधन भी तो होना चाहिए । एफ० ए० की भर्ती के
लिए फीस और किताबों की ही चोट करीब सौ रुपये के थी ।
इतने रुपये आते तो कहाँ से ? अचल का मस्तिष्क प्रति क्षण
परेशानी और उत्सुकता से व्याकुल रहता । उसकी समझ में
कोई तरीका इतने रुपये इकट्ठा होने का न आता था ।

विराग की ओर से कुछ उसे ऐसा विश्वास सा बँध गया था कि वह किसी दुख सुख के पड़ने पर अपना सहायता का हाथ उसके निमित्त बढ़ा सकती है। एक दिन इसी विचार के बहुत जोर मारने पर वह यह सोचकर कि बहुत सम्भव है कि उसकी कठिनाई को सुनकर वह उसकी सहायता करे, विराग के घर की ओर भरी दुपहर में चल दिया। पसीने से तर बतर रास्ते में वह सोचता चला जाता था 'अभी विराग बहन ने मुरारी की साइकिल खरीदने की जिद्द नगद रुपया तय्यार न होने पर अपनी दो अंगूठिँ बेंच कर पूर्ण की थी। घड़ी के लिए उस दफे, सूद पर रुपए उधार लेकर मुरारी को दिए थे। क्या मुझे इतनी जाँ और सख्त जरूरत पर वह दस पाँच रुपए की मदद भी न देंगी ? नहीं अवश्य देंगी।'।

आशा का आगमन होते ही अचल में एक नई स्फूर्ति आई। वह ज़रा और तेज़ी से विराग के घर की ओर बढ़ा। मुरारी के बताए हुए पते से मकान ढूँढ़ने में अचल को कोई कठिनाई न पड़ी। दरवाज़े पर पहुँच कर उसने आवाज़ दी। मुरारी घर में न था, विराग ने अचल की आवाज़ पहचान कर दरवाज़ा खोला - "बाह भैया इतने दिन तो जैसे भुला ही दिया और आए भी तो इतनी धूप में। न सिर पर टोपी न छाता ही लिए हो। ऐसी तेज़ धूप में तुम लोग किस तरह ऐसे निकल पड़ते हो। न हो एक हैट ही मोल ले लो। खड़े क्यों हो आओ बैठो न !"

बहुत दिनों बाद इतनी सहानुभूतिपूर्ण बातें सुनकर अचल

“क्यों क्या खाया था ?”

“परसों पूरी खाई थी ?”

“तो आजकल पूरियाँ उड़ती हैं । पैसे कहाँ मिले थे ?”

“नरसों ‘उदय’ से अनुवाद के चार आने पैसे मिले थे उसी की परसों पूरियाँ खाई थी तब से पेट में दर्द हो रहा है । परसों से फिर ‘उदय’ में काम मिला नहीं तो कुछ खाया भी नहीं लेकिन पेट का दर्द नहीं जाता है ।”

“तो तुम पूरी ही क्यों खाते ?”

“तो और क्या खाऊँ ?”

“क्यों ? रोटी । क्या होटल में रोटी खाने से तुम्हें परहेज है ?”

“नहीं परहेज तो नहीं है लेकिन मैं कभी वहाँ गया नहीं ।”

“कभी—तुम घर से अलग भी तो नहीं हुए । अब तो यह नई-नई मुसीबतें सामने आवेंगी ही । तुमको मैं एक चिट्ठी मनोरमा होटल के मैनेजर के नाम लिखे देता हूँ । वह लेकर चले जाओ, वहाँ खाना खा लिया करना । मैं महीने पर उसका हिसाब चुकता कर दिया करूँगा ।”

अचल ने कहा—“लेकिन पहले पेट का दर्द तो ठीक हो तब रोटी और पूरी का सवाल पैदा हो ।”

“अच्छा तो मैं पहिले तुलसीराम वैद्य के नाम चिट्ठी लिखे देता हूँ ।” यह कह कर वह कलम दवात लेकर चिट्ठी लिखने बैठा ।

वैद्य जी के लिए चिट्ठी लिखकर उसने कहा—“अचल यह वैद्य जी के लिए चिट्ठी ले लो । लगे हाथ लाओ होटल को भी चिट्ठी लिख दूँ ।”

इतने में जीने से धम-धम करता हुआ एक आदमी ऊपर चढ़ आया । पसीने से वह लथपथ था और होश-हवास बिल्कुल गुम थे । कमरे में आकर उसने कहा - “रामलालजी हैं ?” और रामलाल को खड़े देखकर बोला—“अरे सुनिए पेपर मिल में मालिकों ने मज्दूरों में भगड़ा करा दिया है, पुलिस भी यूनियन के मज्दूरों को मार रही है आप जल्दी चलिए ।”

रामलाल ने कहा—“मैं एक बहुत जरूरी चिट्ठी...।”

“वाह साहब वाह ! आप भी क्या बातें करते हैं, वहाँ लोगों की जानें जा रही हैं और आप यहाँ चिट्ठी लिखने बैठ रहे हैं ।”

रामलाल ने कहा—“अच्छा भाई चलता हूँ । अचल मैं लौटकर लिख दूँगा ।” और वह जीने से उतर गया ।

अचल चिट्ठी लेकर शाम को वैद्य जी के यहाँ से दवा लाया और कमरे में आकर लेट रहा ।

सबेरे उठा तो बड़ी जोर से भूख लगी हुई थी । नहा कर बाहर निकला तो भूख की कमजोरी के मारे चलते न बनता था । चलते-चलते बाजार के उस स्थान पर पहुँचा जहाँ होटल थे । छोटे-छोटे कई भोजनालय जिनमें घर गृहस्थी से वंचित लोग कम पैसा देकर उबाला हुआ भोजन करके पेट की आग शान्त करते हैं । अचल को उस ओर मुखातिब होते हुए देखकर

एक महाराज ने कहा—“क्यों बाबू जी भोजन करियेगा ?”

“क्या रेट है तुम्हारे यहाँ का ?” अचल ने पूछा

“एक खूराक का तीन आना और वैसे ६ रुपए महीना ।”

“अच्छा ! शुरू में कितना जमा करना होता है ?”

“तीन रुपए मिले बिना तो बाबू हम लोग माहवारी के हिसाब से खिला नहीं सकते हैं, उसमें हमें नुकसान हो जाता है ।”

अचल ने कहा—“अच्छा, मालूम हो गया”—और वहाँ से चल दिया । मन में सोचता था—‘तीन रुपए मेरे पास तीन जनम भी होंगे या नहीं इसमें शक है । होटलों के ये छोटे-छोटे देहाती शोषक भी जनता की ओर कम क्रूर नहीं है । देहातों के कुछ पक्के पोढ़े लोग शहर में आकर छोटा-छोटा भोजनालय खोलते हैं । ग्राहक बढ़ते-बढ़ते इसी से सौ पचास रुपए महीने कमाकर ये लोग देहातों में ज़मींदारी खरीद कर वहाँ कृषकों के जान लेवा बनते हैं । होटल में दो तरकारी, दाल, चावल, फुलका, चटनी दिखाकर ये लोग लोगों को बुलाते हैं और इन नामों के नीचे बाज़ार की सबसे सस्ती सड़ी तरकारी, दाल का पानी, मोटा गीला भात, अँगीठी की झुलसी रोटी और अमचुर का कुचला खिलाकर ये लोगों के स्वास्थ्य को खूब ही मिट्टी में मिलाते हैं । मज़ा यह है कि शहर में जिस तरीक़े से यह रुपया कमाते हैं देहातों में भी उसका उसी प्रकार प्रयोग करते हैं ।’

यही सब सोचते-सोचते वह चला जा रहा था कि किसी ने कहा—“अचल बाबू !” वह घूम कर खड़ा हो गया । हलवाई

की दूकान वाला महाराज खड़ा हुआ पुकार रहा था। अचल बढ़कर उसके पास गया—“क्यों, क्या है भाई ?”

“बाबू जी आपने हमें उस रोज पानी पिलाने का पैसा देने के लिए इकम्मी दी थी और इकम्मी के पैसे मिले नहीं थे वह तीन पैसे ले लीजिए।”

अचल ने पैसे लेकर रख लिए और वहाँ से चल दिया। महाराज ने फिर कहा—“बाबू जी आजकल आप आते क्यों नहीं हैं ?”

“यों ही महाराज।”—अचल ने कहा और दुकान से जल्दी-जल्दी कदम बढ़ाए। वहाँ की चीजों की दृष्टि और सुगन्ध उसके भूखे मन को खराब कर रही थी। वह बड़बड़ाता चला जा रहा था—“दुनिया में इतना खाने का सामान दुकानों पर सजा हुआ रखा रहता है। इसे वही खा सकते हैं जिनके पास चाँदी या तँबे के चन्द टुकड़े हों। ऐसा क्यों होता है, यह कहाँ का तरीका है ? कुछ लोग भूखे मर रहे हैं और कुछ लोग खाने के सामान को इकट्ठा किए हुए बैठे हैं, वे पैसे वालों की उस पर नज़र नहीं डालने देते हैं। यह कहाँ का नियम है ? भूखे क्यों सब मिलकर इस खाने के सामान को छीन नहीं लेते ? क्यों ? क्यों ?”

एक पतली सी आवाज़ ने कहा—“बाबू जी।” अचल ने देखा एक दम ग्यारह बरस का लड़का एक पीतल की थाल में, लड्डू के नाम को बदनाम करने वाले आटे और गुड़ के बिना घी का सत्संग पाए हुए कुछ गोले रखे एक दुबला पतला गन्दा

सा लड़का है ।

“बाबू जी ये लड्डू आप खरीद लीजिए तो मैं घर जाऊँ बड़ी भूख लगी है । बड़े अच्छे लड्डू हैं बाबू जी । घर पर हमारा छोटा भैया भूख से रो रहा होगा, बाबू जी । आप खरीद लेंगे तो रोटी के सामान भर को पैसे हो जायेंगे ।”

अचल ने अपनी जेब से निकाल कर वह तीनों पैसे उसकी थाल में फेंक दिए और आगे बढ़ा । मन में सोचता था ‘इस बिचारे को इतनी छोटी उमर से ही यह चिन्ता सवार हो गई । दुनिया में वह भी बच्चे हैं जिनके ऊपर आठ-आठ-दस-दस नौकर रक्खे हुए हैं ।’ वह लड़का अपनी थाल के चारों लड्डू क्रागज में लपेटने लगा था, नज़र उठाई तो देखा वह बाबू आगे बढ़ चुके हैं । दौड़ कर उनके सामने पुड़िया कर दी और बोला — “यह तो ले जाइए बाबू जी ।”

अचल ने कहा—“इसका मैं क्या करूँगा तुम खालो । तुम्हें पैसे तो मिल गए ।”

“हम ये क्या खायेंगे बाबू जी नोन रोटी के खाने वाले । ये आप लेते जाइए, अच्छे हैं, ऐसे मैं पैसे कैसे ले सकता हूँ !”

अचल ने वह पुड़िया ले ली और चल दिया । पाके की घड़ी ने टन से एक बजाया । अचल एक बेंच पर बैठ कर वह लड्डू खाने लगा । पहले तो उनके टूटने में ही मुश्किल पड़ी और जब टूट गए तो दो टुकड़े के बाद गले में धँसना मुश्किल हो गया । मन में सोचने लगा — ‘लोग ये लड्डू कैसे खाते होंगे ।’ तीसरा टुकड़ा मुँह में रखा तो खाँसी आ गई, आँखों से आँसू निकल

आए । दौड़कर बम्बे पर पानी पिया तो जान में जान आ गई ।
पेट की आग ऐसी परेशान कर रही थी कि ये लड्डू भी छोड़ने
का मन न होता था और गला उनका वैसे ही विरोध कर रहा
था जैसे मद्रास के मन्दिरों के दरवाजे हरिजनों का । आखिर-
कार एक तर्कीब समझ में आई, पानी में भिगोकर उसने लड्डू
खाना शुरू किया और इस बार उसे किसी हद तक सफलता
भी मिली ।

X

X

X

लड्डू वाले दिन के बाद फिर दो दिन कहीं से पैसों का
इन्तजाम न हो सका, फल स्वरूप अन्न से भी भेंट न हुई । तीसरे
दिन सबेरे बिछौने से उठने का प्रयत्न किया तो हाथ पैरों ने
जवाब दे दिया । पड़े-पड़े साढ़े आठ बज गए । इसी वक्त राम-
लाल ने कमरे में कदम रखा । उसने दौड़कर अचल के दोनों
हाथ पकड़ लिए । उसकी आँखें डबडवाई हुई थीं ।

“क्यों क्या बात है ?” — अचल ने कहा ।

रामलाल ने भरे गले से जवाब दिया — “अचल मुझे माफ़
कर दो भाई । मेरी बहुत बड़ी गल्ती है । मैं क्या करूँ ? जब
से मैं यहाँ से गया हूँ मैं अमीनाबाद आ ही नहीं पाया । पेपर
मिल में हम लोगों ने मजदूरों से मालिकों के सामने कुछ माँगें
पेश करवाई थीं और उन बातों पर अड़ने को मजदूरों को
तयार कर रहे थे । काफ़ी उत्तेजना फैल गई थी कि मालिकों ने
लालच देकर सौ पचास आदमियों को भड़का कर भगड़ा
करवा दिया । मारपीट में बहुत से आदमी घायल हुए । मैं उन्हीं

की सेवा सुश्रूषा में लगा रहा । तीन आदमी तो बहुत ही ज्यादा चोट खा गए हैं । बाल-बच्चेदार आदमी बेचारे बच जायँ किसी तरह इसी कोशिश में लगा रहा । तीन रात से एक मिनट के लिए नहीं सोया, खाने का भी कुछ ढंग नहीं लगा; फिर भी मैं जानता हूँ मेरी गलती है मुझे माफ़ करो । तुम पर तो इन दिनों बड़ी बुरी बीती होगी ? 'उदय' में कुछ काम मिला था ?”

“नहीं कुछ नहीं मिला । इस वक्त पेट की सारी आँतों का सिकुड़ कर जैसे गोला बना जा रहा है । बड़ी जोर ऐंठन सी हो रही है । कोई कहता है कि कान का दर्द बुरा होता है कोई कहता है दाँत का—पर भूख का दर्द सब से विचित्र होता है । इससे भयंकर कोई दर्द नहीं डाक्टर वैद्यों ने इसकी कोई दवा नहीं निकाली । इसकी दवा उनकी समझ में रोटी ही आती है और रोटी है बड़ी महँगी चीज़ । मैं जाने कब से भूखा पड़ा चिल्लाया करता हूँ कि दूकानों पर रक्खे हुए इन खाने के सामानों को भूखों में बाँट दो पर कोई सुनता नहीं । गरीब की हाथ में अब कोई असर नहीं रह गया । भूखे चिल्लाते भी नहीं बनता है । जिनके पेट भरे होते हैं उन्हीं की आवाज़ का कुछ असर होता दुनिया में दिखाई देता है । भूखों की आवाज़ कोई नहीं सुनता, कोई नहीं !—” कहते-कहते अचल उत्तेजित हो गया ।

रामलाल ने उसे चुप किया—“खैर इन बातों को जाने दो । मैं तुम्हारे लिये अभी खाना ले आता हूँ । आज चाहे दुनिया में

आग लगे और चाहे बाढ़ आ जाय. मैं जब तक तुम्हारे लिए सब कुछ ठीक न कर दूँगा, आँख उठाकर न देखूँगा ।”

रामलाल ने जाकर भोजन भंडार में पेशगी रुपए अचल के नाम जमा किए और एक थाली खाना साथ लिवाता आया । अचल के बहुत जिद्द करने पर रामलाल ने भी साथ में खाया, तब दोनों घर से निकले । रामलाल ने कहा—“देखो, आज मैं तुम्हारी छुट्टी भर के लिये नौकरी भी कराए देता हूँ, जिससे फीस का कुछ इन्तजाम तो हो जाय ।”

अचल बहुत प्रसन्न हुआ । रामलाल ने एक किताब की दुकान पर उसे जुलाई भर के लिए नौकर रखा दिया । आज-कल किताब की दुकानों का सीजन आ रहा था । इस काम वाले इन्हीं एक दो महीनों की कमाई साल भर खाते हैं । इसलिए इन दिनों इन दुकानों में मेहनत भी खूब करनी होती है । काम करते-करते आदमी का तेल निकल आता है और वह रह भी खली ही ऐसा जाता है । सीजन भर के लिए जो आदमी रखे जाते हैं उन्हें तो जैसे आदमी समझा ही नहीं जाता । दुकान के बाकी लोग तो सालभर मक्खी मारते रहते हैं इस वक्त जैसा जो कुछ बनता है करते ही हैं, पर नए-नए काम सिखे लोगों के लिए तो बड़ी मुश्किल हो जाती है ।

ये सब मुसीबतें अचल को भी मेलनी पड़ीं । दुकान में काम करने का जैसे कोई वक्त ही तय नहीं है । उन लोगों को जैसे यह मालूम ही नहीं है कि आदमी के लिए आराम करना भी जरूरी होता है । पहले दिन अचल सवेरे सात बजे पहुँचा,

वैसे ही किताबों का एक बीजक खूब लम्बा चौड़ा उसे लिखाया गया । किसी किताब की दो सौ उन्हत्तर प्रति हैं तो किसी की तीन सौ सात हैं दाम किसी का सवा आठ आने हैं तो किसी का १० १० च आने । जोड़ते-जोड़ते तबीयत परेशान हो गई । जैसे ही उसने खतम किया, मालिक साहब ने मुलाहिजा फ़र्माने को माँगा ।

दूसरे क्षण ही उन्होंने कहा — “वाह भाई तुम तो खूब जोड़ते हो यह तीन सौ तिरासी किताबों के पौने तीन आने के हिसाब से क्या हुआ ? पैंसठ रुपए सवा तेरह आने कि पैंसठ रुपये सवा ग्यारह आने ? ऐसे जो दो दो आने का घाटा कराओगे तब तो ये दुकान खूब ही चलेगी । वाह भाई वाह ।”

दुकान के और नौकर हँसने लगे । एक मुँह-लगे ने कहा— “हम लोगों ने बाबूजी इन्ट्रेन्स छोड़ चार दर्जे भी पास नहीं किए, पर बीजक में मजाल नहीं है कि एक पाई की भी गल्ती निकल जाय । और ये तो इन्ट्रेन्स हैं ।”

अचल का मुँह उतर गया । वह सोचने लगा कि यह काम मुझसे होगा नहीं, फिर अपनी परिस्थिति को सोचकर जैसा का जैसा ही रह गया । दूसरे क्षण ही दूसरा बीजक मिला, वह दूसरा, फिर तीसरा, फिर चौथा । एक बजे मालिक साहब को गद आई तो बोले— “जाओ खाना खा आओ लेकिन जल्दी ही आना ।”

लौटकर अचल ने फिर हिसाब जोड़ना शुरू किया और

तीन बजे रात तक यह क्रम जारी रहा । दूकान बन्द करते वक्त मालिक साहब ने फर्माया—“छः बजे आ जाना, देर न होने पावे ।”

इस प्रकार का आमामनुषिक काम होते हुए भी ^{५/६} ^{५/६} गायी हिम्मत न हारा । दो चार दिन तो सिर में दर्द, पीठ में दर्द, बहुत परेशानी रही, मन बार-बार काम छोड़ने का होता था पर अचल लगा ही रहा ।

एक दिन अचल को अपने स्कूल के एक पंडित जी मिले । उनका वह बहुत प्रिय शिष्य था । वह उन अध्यापकों में थे जो लड़कों के वास्तविक हितचिन्तक होते हैं । अचल से हाल चाल पूछने पर उसने सब बताया । बेचारे सुनकर बिल्कुल द्रवीभूत हो गए और फीस के रुपए पूरे कर देने का पक्का वादा किया ।

कालिज खुलने पर पंडित जी की सहायता और नौकरी से कमाये रुपयों द्वारा अचल भर्ती हुआ । पंडित जी ने उसे दो ट्यूशन दिलवाये, फीस माफ़ करवाने में पूरी कोशिश की और इस प्रकार अचल की पढ़ाई चल पड़ी ।

कालिज जाना, अपना पढ़ना, लड़कों को पढ़ाना; अचल के वास्ते काम ही काम हो गया । कभी दम मारने की छुट्टी नहीं । फिर भी ‘मुश्किलें इतनी पड़ीं मुझ पर की आसाँ हो गईं’ वाली बात अचल के साथ हुई । परन्तु उसकी पढ़ाई चल रही थी इसकी उसे सब से अधिक खुशी थी ।

इसी तरह वह एफ० ए० पास हुआ, बी० ए० पास हुआ ।

घर के लोगों को भी अब कुछ उसके होनहार होने का गुमान हुआ । दो एक सदेसे घर के भी आये पर अचल ने उस कीचड़ में जाकर फँसना बिल्कुल बेकार समझा ।

इधर रामलाल भी उसे धीरे-धीरे अपने काम में ला रहा था । अचल अपने क्रान्तिकारी व साम्यवादी विचारों के आखिर कहाँ तक राख के नीचे पड़े रहने देता, उसने भी एक बार अपने मन में जलने वाली धधकती आग की शक्ति लोगों को दिखा ही देने की चाही ।

१३

थोड़े दिन मिल के इन क्वार्टरों के पास रह लेने पर विराग को मालूम हुआ कि मुरारी के कहने में आकर वह व्यर्थ ही इतनी दूर चली आई । जैसी हिम्मत घर छोड़ने के समय उसने दिखाई थी और बड़ी-बड़ी कमाई करने के सब्ज बाग दिखाए थे वह सब गप्प ही साबित हो रही थीं ।

मुरारी को खुद ही इस तरह अखाड़े से पैदायश करना न जँचा और वह धीरे-धीरे कुश्ती लड़ने की ओर से भी उदासीन हुआ जा रहा था । इसी बीच में इत्तफ़ाक से एक रोज़ एक कनपूरिए से जोड़ तय हो गई । मेहनत वगैरह कुछ ठीक से इधर होती न थी । नतीजा यह हुआ कि जोड़ तो खाई ही और हाथ घाते में उतर गया । इस धक्के से रहा-सहा उत्साह भी नष्ट हो गया । अब उसने अखाड़े जाना बिल्कुल ही बन्द कर दिया ।

लेकिन मुरारी तो ऐसा आदमी नहीं था कि वह शान्त बैठे या कोई ऐसा काम करे, जिसमें किसी प्रकार के लाभ होने की संभावना हो। उसे तो करने के लिए कुछ चाहिए ही फिर जो कुछ भी आँखों के सामने पड़कर दिमाग में धँस जाय वही ठीक है। मुरारी को इस बार घोड़े की सवारी सीखने की धुन सवार हुई क्योंकि एक दिन सिकन्दर बाग घूमने जाकर वह कुछ मेमों की लड़कियों को घोड़े पर सवार घूमते देख आया था। उसी रोज़ से उसके मन में यह इच्छा पैदा हुई थी कि वह घुड़ सवारी सीखकर इन लोगों से मेल-जोल करेगा।

घोड़े का इन्तज़ाम करने व घुड़सवारी सीखने में जो-जो कठिनाइयाँ हुईं सो तो हुईं ही, पर मुरारी का दिल उस समय बहुत छोटा हुआ जब घोड़े पर सवार होकर सैकड़ों बार सिकन्दर बाग में मिलने और उसके लाख प्रयत्न करने पर भी उन अंग्रेज़ छोकरियों ने उसकी ओर जरा भी ध्यान न दिया। इसलिए होता यह कि घोड़े पर चढ़ा हुआ निराश मुरारी—सिकन्दर बाग के पीछे जाकर सड़क पर पेड़ से घोड़े को बाँधकर—गोमती में अपने गरम-गरम पैर डालकर घंटों इधर-उधर की बातें सोचा करता था। अब वह लड़कपन की उमर पार करके जवानी की अवस्था में क़दम रख रहा था और उसका मन होता था कि कोई सुन्दर मुख उसकी आँखों के सामने रहे और उससे मीठी-मीठी बातें करे।

मुरारी का यह ज़मीन आसमान के कुलाबे मिलाने का सिलसिला जाने कितने दिन जारी रहता, जाने कितने दिन

सिकन्दर बाग जाकर उन सुन्दर मुखों को देख देख कर वह अपना मन दुःखित करता रहता यदि इसी बीच में एक बवाल उठकर खड़ा न हो गया होता ।

एक दिन शाम को मुरारी सात-साढ़े-सात बजे घूमकर आया तो उसके दाहिने पैर की पिंडली में मीठा-मीठा दर्द हो रहा था । वह खाना खाकर लेट रहा । ग्यारह बजे के करीब उसकी आँख दर्द के बढ़ जाने से खुली । थोड़ी देर तो वह यों ही पड़ा रहा पर जब रहायस न हुई तो उसने विराग को जगाया । वह बेचारी इतनी रात को शहर से दूर इस नई बस्ती में डाक्टर को कहाँ से लाती । बेबसी से आँसू बहाती हुई मुरारी का पैर अपनी गोद पर रखे वह बैठी रही ।

मुरारी का दर्द बहुत बढ़ गया । वह विस्तरे पर मछली की तरह तड़पने लगा । उसके कराहने, रोने और चिल्लाने से पड़ोस में रहनेवाले मिल के मजदूर जग गये । जिन दो चार की बोलचाल मुरारी से थी वे दरवाजा खुलवाकर अन्दर आये और उसे इतनी ज्यादा तकलीफ में देखकर सोचने लगे कि क्या किया जाय ।

एक ने कहा—“सुनो वो बाबूजी आके महीने भर से रहे हैं न पूरब की तरफ वाले क्वार्टरों में, जो मुफ्त दवाई बाँटते हैं उनको लाकर इन्हें क्यों न दिखाया जाय ?”

सब ने उसकी बात को पसंद किया । विराग से पूछा । उसने कहा—“भैया तुम लोगों की समझ में जो कुछ आवे वही करो मैं औरत जास्त तो किसी काबिल नहीं हूँ ।”

थोड़ी देर में वह मजदूर अचल को लेकर घर में दाखिल हुआ। विराग उसे देखकर रो पड़ी—“भैया तुम यहाँ कब से रहते हो ? मुझ अभागिन से तुम इतना क्यों ख़फ़ा हो कि इतने पास रहते हुए भी कभी भूलकर भी यहाँ नहीं आते ?”

अचल ने उसे संक्षेप में बताया कि उसने एम० ए० की थीसिस में, “लखनऊ के मजदूर और उनका रहन-सहन” विषय दिया है और इसी कारण उसे यहाँ आकर रहना पड़ा है। वह काम में बहुत फँस गया है इसी वजह से वह उसके यहाँ नहीं आ पाता। लगभग पाँच साल की गैरहाज़िरी का कारण इतने संक्षेप में बताकर अचल मुरारी को जल्दी से देखने पहुँचा। उसकी दर्द के मारे बड़ी बुरी हालत थी और वह पसीने से लथपथ खाट पर आँखें बन्द किए हुए पड़ा था। अचल ने उसकी दशा देखकर विराग से कहा—“मैं होमियोपैथिक दवा बाँटता हूँ और सो भी नौसिखिया आदमी। इसे तकलीफ़ बहुत है पता नहीं दवा कारगर हो या न हो इसलिए मैं जाता हूँ, मेरी जान पहचान के एक डाक्टर हैं उनको बुलाए लाता हूँ।”

एक बजे रात को अचल साइकल पर दौड़ा हुआ डाक्टर माथुर के घर पर गया। वे उसकी सेवाभाव और देशभक्ति की सच्ची लगन के कायल थे, बिना किसी प्रकार नाज़बंदारी करवाये वे अपना दवाइयों का बेग लेकर अचल को कार पर बैठाकर चल दिए।

मुरारी को देखकर वे ठीक-ठीक राय न क़ायम कर सके कि

उसके पैर में क्या हो गया है । फिर भी उन्होंने एक दर्द कम करने की दवा में थोड़ी सी ब्रान्डी मिलाकर दी जिससे कि मरीज़ को नींद आ जाय । थोड़ी देर वे बैठे देखते रहे । जब मुरारी सो गया तब उन्होंने अचल से जाने की इजाज़त माँगी । विराग ने फ़ीस देनी चाही तो उन्होंने बहुत नम्रता से हाथ जोड़कर इन्कार कर दिया और अचल को साथ लेकर चले गये ।

डाक्टर के यहाँ से लौटकर अचल रात भर मुरारी के सिरहाने बैठा रहा । विराग ने दो एक बार कहा भी कि “अब तो वह सो गया है जगने की कोई ज़रूरत नहीं है ।” पर उसने न माना, वह बैठा मुरारी के मुँह की ओर देखता रहा । विराग पास ही पड़ी चारपाई पर बैठी थी, थोड़ी देर में वह लेट गई और लेटते ही उसे नींद ने धर दबाया ।

सबेरा पूरी तौर से हो जाने पर उसकी आँख खुली तो देखा अचल वैसा ही मुरारी के सिरहाने बैठा है । उसे बड़ी शरम मालूम हुई, उसने उठकर कहा—“भैया, अब तुम जाकर थोड़ी देर सो लो नहीं तो तबियत खराब हो जायगी ।” इतने में मुरारी पर से ब्रान्डी का असर उतरा और वह होश में आते ही कराहने लगा ।

अचल डाक्टर माथुर के घर की ओर साइकल पर भागा । उन्होंने दवा दी, पीने की और पैर में मालिश करने की भी; लेकिन मुरारी को कोई फ़ायदा होता न दिखाई दिया । तीन दिन तक यही हालत रही । अचल रात भर बैठा रहता, टस-से-मस

न होता, उसको आँखों की नींद जैसे हवा हो गई थी, भूख जैसे उसे लगती ही न थी। पाँच साल तक उसने जिस मुरारी का मुँह न देखा था, जिस विराग के वह घर न गया था उनके लिए उसके हृदय के किस कोने में इतनी सहानुभूति संचित थी यह वह स्वयं न जानता था। वह मुरारी की जितनी सेवा सुश्रूषा करता था, विराग को जितनी सान्त्वना देने का प्रयत्न करता था उतनी ही उसके हृदय में उनके प्रति सहानुभूति जाग्रत होती जाती थी। उतनी ही प्रेम की आतुरता उसे मिलती। ज़रा सी देर को वह दवा लेने को जाता तो उसे यह चिन्ता होती कि पता नहीं मुरारी की कैसी दशा हाँ और विराग उसके कष्ट को देखकर व्याकुल हो रही हो।

आखिर चौथे दिन डाक्टर माथुर ने मुरारी के पैर का आपरेशन करने का निश्चय किया। सब लोगों को कमरे से उन्होंने निकाल दिया, विराग को पड़ोस के एक मकान में भेज दिया। सिर्फ अचल कमरे में रह गया, उनके साथ के एक डाक्टर और एक कम्पाउन्डर। मुरारी के पैर को पकड़ने के लिए अचल ने खुद कहा। मुरारी के मुँह पर कपड़ा डालकर उसे नीचे न देखने को कहा गया। तब उन्होंने आपरेशन किया। पिण्डली में एक ओर से दूसरी ओर तक चाकू चला गया, मवाद उस हिस्से में पूरी तौर से फैल गया था। मुरारी बड़ी जोर से चिल्लाया। विराग पड़ोस के घर में बैठी हुई भी इस आवाज़ को सुनकर तड़पने लगी और अचल अपने हृदय को पत्थर बनाये अपनी पूरी ताकत से मुरारी का पैर पकड़े बैठा

एहा । जिस वक्त घाव से मवाद का सोता सा बह निकला, अचल के मुँह से अनायास ही निकल गया 'हैं' ?

डाक्टर माथुर ने कहा—“अचल बाबू आप यहाँ से उठिए कम्पाउन्डर पैर पकड़ लेगा ।”

अचल ने कहा—“माफ़ कीजिए डाक्टर साहब, अब ऐसा न होगा ।”—और वह पत्थर की मूर्ति बना बैठा रहा । घाव ठीक से साफ़ करके डाक्टर ने बाद में बनने वाले मवाद के निकलते रहने के लिए उसमें रबर का एक ट्यूब डाला और उसके ऊपर रुई व गाज रखकर पट्टी बाँधी ।

जब डाक्टर चलने लगे तो विराग ने अचल को एक दस रुपए का नोट देकर कहा—“तुम डाक्टर साहब से कहो मेरी खातिर इसे मंजूर कर लें ।”

अचल ने कहा—“वह एक कौड़ी न लेंगे । हाँ मुझे कुछ सुनना बड़ा है वह तुम सुनवाओगी ।”

डाक्टर ने नोट देखकर कहा—“आपको क्या हो गया है अचल बाबू ! मैं जब एक दफ़े मना कर चुका हूँ तो आप मान क्यों नहीं जाते हैं, बहन जी से कह दीजिए कि आपकी दया से रुपए लेने को माथुर को बहुत घर मिल गए हैं, यहाँ न मिलने से वह भूखों नहीं मरा जाता है । जाइए रख दीजिए जाकर, इसे मरीज की सेवा सुश्रूषा में खर्च कीजिए ।”

आपरेशन के बाद मुरारी के पैर में पहले का सा दर्द तो न रह गया पर पिण्डली के आस पास किए गये छेद में पड़ा हुआ वह ट्यूब उसे चैन न लेने देता । नतीजा यह होता था कि वह

किसी और को भी चैन न लेने देता था। मरीज़ भी कई प्रकार के होते हैं—एक तो वे हैं जो अपनी तकलीफ को धैर्य से सहन करते हैं और इस बात का ख्याल रखते हैं कि उनकी सेवा करने वालों को उनकी वजह से नाजायज़ तकलीफ न पहुँचे और दूसरे वे जो इसके बिल्कुल विरुद्ध मनोवृत्ति के होते हैं। वे ज़रा सी तकलीफ में भी बहुत घबड़ा जाते हैं और अपने हितचिन्तकों को हलाकान कर डालते हैं। वे बच्चों की तरह रोएँगे, ज़िद्द करेंगे, डाक्टर की तजवीज़ के खिलाफ़ काम करेंगे, खुद दुखित होंगे और अपने अविभावकों को दुखित करेंगे।

मुरारी भी अन्तिम प्रकार का मरीज़ था। यह नहीं कि उसे तकलीफ़ नहीं थी, उसे तकलीफ़ बेहद थी पर वह धैर्य से बिल्कुल काम न लेता था। रात में वह अधिक नहीं ताँ सौ पचास दफे करवटें बदलता था। दिन भर का थकी माँदी विराग को अचल हठ करके सोने को भेज देता और आप रात भर मुरारी को गोद में उठा उठा कर कभी इस करवट लिटाता कभी उस। डाक्टर ने उसे पैर जहाँ तक सीधा हो सकता था रखने की हिदायत की थी पर उस तरह ज़रा पैर में तकलीफ़ होती थी इसलिए मुरारी अचल के लाख कहने पर भी पैर सीधा न रखता।

नतीजा यह हुआ कि हालाँकि घाव भरने लगा उसका पैर सीधा न होता था। डाक्टर साहब ने यह बात देखी तो वे बहुत चिन्तित हुए। उन्होंने कहा—“इस तरह तो इसका पैर छोटा पड़ जायगा और यह ज़िन्दगी भर के लिए लँगड़ा हो

जायगा । इसलिए आप इसे कल मेडिकल कालिज में भर्ती करा दीजिए । वहाँ स्प्रिंग से इसका पैर बाँध दिया जायगा, जो हर वक्त पैर को खींच-खींच कर उसे ठीक कर देगा ।”

दूसरे दिन मुरारी डाक्टर साहब के आदेशानुसार मेडिकल कालिज में भर्ती करा दिया गया । इससे अचल की चौबीस घंटे की हाज़िरी तो न रही पर उसकी परेशानी पहले से भी ज्यादा हो गई । वह दिन में दो बार खाना लेकर जाता, एक बार चार वजे से छः वजे तक विराग को लेकर मिलने जाता और मुरारी वक्त-बेवक्त कोई चीज़ मँगवाता तो उसे पहुँचाता । पहले दिन जब अचल मुरारी के जूठे बर्तन कालिज से लेकर आया तो विराग के पुराने विचारों को बड़ी ठेस लगी । उसने कहा—“भैया तुम ये जूठे बर्तन क्यों ले आए ? तुम्हें इन्हें वहीं छोड़ आना था, शाम को मैं जाती तो लेती आती ।”

अचल ने कहा, “बहन ! प्रेम में नेम नहीं होता, वह बड़ी विद्रोही चीज़ है, सारे बन्धनों को वह तोड़ती है । संसार के इन व्यर्थ आडम्बरों को तहस-नहस करने के लिए ही प्रकृति ने इसे मनुष्य को प्रदान किया है । तुम इस सब फेर में न पड़ो, मैं जो कुछ कर रहा हूँ, परिस्थिति के अनुसार ठीक ही कर रहा हूँ ।” विराग ने कहा—“उस जन्म में न जाने कौन से कर्म किए थे सो तो यह फल भोग रही हूँ इसीलिए डरती हूँ कि इस बार कुछ ऐसा न बन पड़े जो दूसरी जिन्दगी में भोगना पड़े ।”

अचल ने कहा—“नहीं तुम निश्चित रहो । मेरे किसी काम से तुम्हारा लोक-परलोक न बिगड़ने पावेगा ।”

धीरे-धीरे मुरारी का पैर ठीक होने लगा । घाव भी पूरा हो गया और पैर भी सीधा हो गया ।

मुरारी जिस दिन अच्छा होकर घर आया अचल और विराग दोनों को बड़ी ही खुशी हुई ।

उस दिन खाना-पीना खत्म करके, लगभग दो महीने बाद, अचल ने विराग से अपने कार्टर में जाने की इजाजत माँगी ।

विराग ने कहा—“नहीं भैया अब तुम्हें कहीं नहीं जाना है । तुम अब मेरे जीवन में पूर्णतया प्रवेश कर गए हो तुम अब मुझसे अलग नहीं हो सकते हो । कल जाकर अपना सामान यहाँ ले आओ ।”

अचल ने बहुत आनाकानी की, बहुत ऊँचा-नीचा समझाया, पर जब उसकी एक साथ रहने में पढाई में नुकसान होने की दुहाई भी विराग को अपनी बात से न टाल सकी तो अचल ने और कुछ कहना व्यर्थ समझा ।

रात में सोने जाने के पहले पानी पीने जाने के वक्त अचल ने देखा कि विराग अपने ठाकुर जी के सामने ज़मीन पर पड़ी हुई कह रही है—“भगवान तुम बड़े दयालु हो । इस विधवा को इतने बड़े कष्ट में तुमने अचल के रूप में आकर सहारा दिया है । भगवान ! उसी ने तो मेरे लाल को जिला लिया है प्रभु !”

१४

जब तीन महीने पहिले अचल काटन मिल के कार्टरों में आकर रहा था तो रामलाल को बड़ी आशा हुई थी, वह

समझता था कि अब अचल को वह देश के काम में खींच ही लायेगा। उसका ख्याल था कि जब वह मजदूरों की दशा का ठीक से अध्ययन करेगा, उनके दुखों को समझेगा तो वह अवश्य ही उनको दूर करने का प्रयत्न करेगा। पहले-पहल अचल ने भी बड़ा उत्साह दिखाया था लेकिन इधर कुछ दिनों से उसका कुछ पता ही नहीं लगता। मालूम नहीं वह किस फेर में रहता है, मिलता भी है तो अजब घबड़ाया हुआ और परेशान सा। उसका ठीक-ठीक पता लगाना चाहिए, इस प्रकार उसे छोड़ देना तो बहुत बड़ी गलती होगी।

दूसरे दिन वह अचल की तलाश में तालकटोरे पहुँचा। उसके कार्टर पर पहुँच कर मालूम हुआ कि उसने यह कार्टर भी छोड़ दिया है और अब किसी मुरारी बाबू के साथ रहता है। एक मजदूर के साथ वह उस जगह पहुँचा। अचल बैठा कुछ पढ़ रहा था। रामलाल ने शिष्टाचार के बाद कहा—“क्यों भैया। तुमने शहर के बाहर यह देश निकाला क्यों किया है यह मेरी समझ में ठीक-ठीक नहीं आया ?”

अचल ने रामलाल के प्रश्न के पीछे जो मतलब छिपा था वह समझ कर मुस्करा दिया। उसने कहा—“खैर, मेरे देश निकाले की वजह तो तुम बहुत अच्छी तरह जानते हो उसकी जानकारी न बताना तुम्हारा बनना है। जो तुम्हारा ठीक-ठीक सवाल है उसका जवाब मैं दिए देता हूँ। मामला यह हो गया था कि इधर दो महीने मैं अपने इन मित्र की बीमारी में बहुत परेशान रहा हूँ जिनके यहाँ मैं आजकल रह रहा हूँ। तुम तो

शायद जानते हो पहले अपने उधर ही रहते थे—मुरारी ।”

“वह रामजी का भाजा तो नहीं ?”

“हाँ, हाँ, वही । उसके पैर के अन्दर एक फोड़ा हो गया था, उसका आपरेशन हुआ, पैर टेढ़ा हो गया था मेडिकल कालिज ले जाना पड़ा, बड़ी परेशानी रही । डाक्टर माथुर ने बड़ी मदद की । बड़ी मुश्किल से लड़का अच्छा हुआ, बेचारा ।”

“अच्छा हो गया ! तब तो ठीक ही है । अब आप बताइए, आपका क्या इरादा है ? कुछ काम वगैरह करना है कि नहीं ?”

“नहीं क्यों ? मैं बिल्कुल तैय्यार हूँ । तुम्हें रास्ता बताना होगा ।”

रामलाल ने कहा—“अचल मैं तुमसे क्या कहूँ, मुझे एक साथी की कितने दिनों से ज़रूरत है जो मेरे साथ कन्धे से कन्धा मिला कर काम कर सके । यहाँ के मजदूरों की दशा तुम देखो कैसी खराब है ! न उनके खाने का ठिकाना है न रहने का, न कपड़ों का । मैंने हज़ारों बार उन्हें उसकाने की कोशिश की कि वे मिल मालिकों के सामने अपनी ज़रूरतें दिखाएँ और माँगे पेश करें पर उनमें जैसे जीवन ही नहीं है । मैं भी असल में कुछ निरुत्साह-सा हो गया हूँ क्योंकि मेरे पहले के प्रयत्न बहुत बुरी तरह असफल हुए हैं । तुम अगर मेरा साथ दोगे तो मैं समझता हूँ कि मैं एक बार उनमें जागृति फूँक दूँगा ।”

अचल ने हामी भरी । उस दिन से वह रामलाल के साथ सुबह शाम मजदूरों के कार्टरों में जाकर उनके रहन सहन का ठीक से अध्ययन करता । उनकी तकलीफों को ठीक से समझता और घर आकर अपनी थीसिस में उन्हें काट छाँटकर ठीक से रखता ।

अचल को पूछने से पता लगा कि मजदूरों को मजदूरी इतनी कम मिलती है कि बेचारे उसमें अपनी जरूरतों को ही पूरा नहीं कर पाते हैं । जिनका परिवार बड़ा है उनका तो यह हाल है कि एक वक्त भी भरपेट रोटी मिलने में मुश्किल पड़ती है । कुछ चने चबाकर ही गुज़र करते हैं । जिस दिन रोटी दाल से भेंट हो जाती है, सब लोग बड़े आनन्द-मग्न होते हैं । उनके रहने के कार्टर बड़े ही गन्दे और तंग हैं । मजदूरों के पास एक कोठरी है उसी में खाना बनता है, जो कुछ अंगड़-खंगड़ होता है वह रखा जाता है और उसी में परिवार के चाहे जितने व्यक्ति हों गीली, सील-खाई ज़मीन पर अपनी फटी कथरियाँ बिछाकर सोते हैं । कई जगह तो अचल को यह हालत देखने को मिली कि उसी कोठरी में एक ओर बैठा मजदूर खाना बना रहा है दूसरी ओर एक फटा पर्दा डाले उसकी पत्नी ज़च्चा की अवस्था में पड़ी है या कोई संक्रामक रोगों से ग्रसित बीमार पड़ा खाँस रहा है ।

बर्तन और कपड़ों की कमी देखकर तो उसका हृदय द्रवित हो गया । ज़रा अच्छी मजदूरी पाने वाले लोगों में जो मिछी वगैरह थे और जिन्हें दो कोठरियाँ रहने को मिलती थीं उसने

दूसरी प्रकार की दुरावस्था देखी। वे अपने साथी मजदूरों की शिकायतें और चुगलियाँ करके जो कुछ अधिक मजदूरी पा जाते थे ताड़ी, शराब और जुए में खोते थे।

अचल ने बहुत से मजदूरों की कोठरियों का निरीक्षण किया, सैकड़ों से वह मिला और उनमें जो उसे कुछ समझदार और अपनी परिस्थिति से असन्तुष्ट दिखाई दिए उन्हें अपने स्थान पर बुलाया। ऐसे लोगों के आने पर वह उन्हें उनकी वास्तविक स्थिति का ज्ञान कराता। कहता—“देखो तुम लोग हाथी के समान हो गए हो जो आँख छोटी होने की वजह से अपने शरीर के आकार को नहीं जान पाता अपनी शक्ति का अन्दाजा नहीं लगा पाता। तुम लोगों को यह बात जानना चाहिए कि संसार में तुम्हारी ही संख्या सब से अधिक है। आखिर यह मिल मालिक गिन्ती में कितने हैं? बहुत थोड़े। फिर तुम उनका अत्याचार क्यों सहते हो? क्या तुम देखते नहीं कि वे किस तरह ठाट-बाट से रहते हैं, उनके यहाँ के कुत्ते जो भोजन करते हैं वह तुम्हें अपनी जिन्दगी में कभी प्राप्त भी नहीं होता। उनके पास खाने की बढ़िया से बढ़िया सामग्री प्रस्तुत रहती है, अच्छे से अच्छे कपड़ों के ढेर के ढेर रहते हैं। वे एक कदम पैदल चलना नहीं जानते, दो-दो तीन-तीन मोटरों एक-एक के पास रहती हैं। यह सब किसकी बदौलत है? तुम्हारी ही। तुम्हीं अपने खून का पसीना बना बनाकर उनके मौज करने का सामान जुटाते हो और खुद भूखों मरते हो। तुम क्यों इसके विरुद्ध नहीं लड़ते हो? दूसरे देशों में यही हुआ

है। वहाँ के मजदूरों ने मिल मालिकों को उन्हें आराम से जिन्दगी बसर करने लायक मजदूरी देने पर बाध्य किया है, तुम चाहो तो तुम भी ऐसा ही कर सकते हो। तुम सब मजदूर एक हो जाओ। मिल मालिकों का ठीक-ठीक बता तो कि तुम कितनी मजदूरी पर काम कर सकोगे, कितनी देर काम कर सकोगे और अपने साथ कैसा बर्ताव चाहोगे। अगर वे तुम्हारी माँगें पूरी तौर से मंजूर करें और उसके अनुसार कार्य करें तो ठीक है, वरना मिल में काम करना बन्द कर दो। तुम देखोगे कि इस तरह तुम्हारी बात उनकी समझ में जल्दी आवेगी। क्योंकि उनका यह सब ठाट बाट है तो आखिर मिल ही की बदौलत। अगर तुम दो रोज़ में भूखों मरने लगोगे तो आखिर बीस दिन बाद उनके लिए भी तो यही नौबत आवेगी।”

अचल के दिल के अन्दरूनी हिस्से से निकली हुई ये बातें उन मजदूरों के मस्तिष्क में आग फूंक देतीं। वे अचल के आदेशानुसार इन बातों को जाकर दूसरे मजदूरों को बताते, धीरे-धीरे बहुत से लोग इन बातों के कायल हो गए। अब अचल ने इन मजदूरों का एक ठीक-ठीक संगठन कायम करने का निश्चय कर लिया।

अचल ने एक-एक आना महीना लेकर उन लोगों के रजिस्टर में नाम दर्ज किये। इस प्रकार खलनऊ के मिल वर्कर्स यूनियन (संघ) की शुरुआत उसने की। उनके समझदार मजदूर दूसरे मजदूरों से इकेले दुकेले में मिलकर अपने संघ का ध्येय वा

उमूल बताते और उनसे उसके सदस्य होने को कहते । जो भी ज़ारा समझ रखते थे वे इस पर सहमत हो जाते । नतीजा यह हुआ कि दो ही महीनों में इस संघ के लगभग चार सौ सदस्य हो गए । ये लोग इतवार-इतवार किसी न किसी जगह में इकट्ठा होते और अपनी शक्ति बढ़ाने का तरीका सोचते ।

आखिर ऊँट की चांगी छिपे-छिपे कब तक हो सकती थी, इन बातों की खाबर मित्त मालिकों को भी पहुँची, उन्हें जब संघ के सदस्यों की संख्या इत्यादि के विषय में मालूम हुआ तब तो उनके हाथ पाँव फूल गए । उन्होंने भी कुछ लोगों को बुलाकर उन्हें मजदूरी बढ़ाने का लालच देकर मजदूरों के इस संघ के खिलाफ़ आवाज़ उठाने का तैयार किया । लेकिन इस बार मजदूर कच्ची गोली न खेले हुए थे उन्हें अचल ने खूब ठोक-पीटकर ठीक कर दिया था; वे मित्त मालिकों के इन गुर्गों से बात तक न करते थे । नतीजा यह हुआ कि हालाँकि मालिकों ने अपना प्रयत्न जारी रखा पर यूनियन की ताक़त बढ़ती ही चली गई ।

मजदूरों ने एक रोज़ा इकट्ठा होकर अपनी मांगों की एक फ़ेहरिस्त अपनी आम सभा में तय्यार की और बड़े जोरदार शब्दों में उन्होंने इस बात का प्रण किया कि या तो उनकी यह शर्तें मित्त मालिक पन्द्रह दिन के अन्दर मान लें वरना सोलहवें दिन वे आम हड़ताल कर देंगे ।

१५

“तेरी समझ में क्या आवेगा !” विराग ने कहा—“किसी की भलाइ करना तेरी समझ में क्या आ सकता है, तुझमें अपना ही भलाई करने का दम नहीं। मैं उसको मजदूरों से बातें करते सुनती हूँ। वाकई उन लोगों को बड़ा कष्ट है। अचल उस दिन कहने लगा—मैं एक मजदूर की कोठरी में गया, आठ फुट लम्बी और इतनी ही चौड़ी थी वह। उसमें ही खाना बनाने की जगह थी। वहीं जच्चा अपने बच्चे को लिए पड़ी थी। और वहाँ दो बड़े लड़कें लड़की और उनके बाप सोते थे। भगवान-भगवान वे लांग कैसे बसर करते होंगे। अचल कहता था—उस दिन उनके घर में कुछ भी खाने को न रह गया था। दोनों बड़े बच्चे मुरझाए मुँह लिए चटाई पर पड़े थे और छोटा गोद में का बच्चा भूखी माँ की छातियों को नोच नोचकर दूध न पाने की वजह से गला फाड़-फाड़कर चिल्ला रहा था। वह ऐसे लोगों की तकलीफों को दूर करने में लगा हुआ है और तू कहता है—माँ मुझे अचल बाबू का इन सब भंभटों में पड़ना बहुत बुरा मालूम होता है। मेरी समझ में यह बिल्कुल ही नहीं आता।—आखिर तेरी समझ में उतना ही आवेगा जहाँ तेरी समझ के लायक होगा।”

“अब कहती ही चली जाना, रुकना नहीं। ओफ तुम्हें अचल मामा की संगत से इतनी लेक्चर-बाज़ी आ गई है यह मैं नहीं जानता था।”—मुरारी ने कहा।

“नहीं बेटा, लेक्चर-वाजी की बात नहीं है। मुझे इन मजदूरों की हालत सुनकर बड़ा तरस आता है। मेरे पास अगर इतनी दौलत होती कि मैं इन सब में बाँटकर इनका दुःख दूर कर सकती तो मैं ज़रा भी न हिचकिचाती। अचल इन्हीं लोगों के दुख दूर करने का प्रयत्न करता है, इसीलिए उसकी बातें मुझे बहुत अच्छी लगती हैं।”

“मेरी बात का तुम ठीक-ठीक मतलब नहीं समझी—” मुरारी ने कहा। “मैं यह थोड़े ही कहता हूँ कि ये बातें वास्तव में बुरी हैं। मेरा मतलब यह है कि ये बातें सरकार के कानून के खिलाफ पड़ती हैं। जो लोग इन सब में सहयोग देते हैं उनको मुजरिम समझा जाता है। जुर्माना होता है, सज़ा होती है...।”

“अच्छा !” विराग ने कहा और वह सोच में पड़ गई। अचल अब उसे बहुत प्रिय हो गया था, वह उसके हृदय के बहुत निकट आ गया था, उसके सुख दुख के विषय में अब उसे आठों पहर चिन्ता रहती है, इसी कारण उसके जेल जाने की सम्भावना जानकर ही उसके हृदय को धक्का लगा।

इतने में अचल आ गया।

“क्यों भैया अचल,” विराग ने पूछा—“यह मुरारी कहता है कि अचल मामा इन मजदूरों के झंझटों में पड़कर सरकार के खिलाफ काम कर रहे हैं; इसमें इन्हें सज़ा हो जायगी—क्या यह सच है ?”

अचल ने हँस दिया उसने कहा—“बहिन अच्छा तुम मुझे यह बताओ इन बेचारे तकलीफों में फँसे हुए मजदूरों को कष्ट से छुड़ाने की जो मैं कोशिश कर रहा हूँ यह अच्छा काम है या बुरा काम ?”

“बुरा इसे कौन कह सकता है भैया ।”

“तो फिर ठीक तो है । जो अच्छा काम हो उससे करने में चाहे जेल हो चाहे उससे भी बढ़कर कुछ हो, क्या पीछे हटना चाहिए ? हर्गिज नहीं । कम से कम मेरा ख्याल तो ऐसा ही है । तुम क्या समझती हो ?”

“ठीक है”—विराग ने कहा, पर उसके चेहरे पर उदासी की छाया बड़ी गहरी आगई । “अच्छा चलो खाना खाओ । उस वक्त कालेज से आकर नीचे ही नीचे तुम कब चले गए, मुझे पता भी नहीं चला । मैं पानी पीने को लेकर गई तो देखा कि तुम नदारत । आखिर दुनिया भर का बोझ तुम अपने सिर पर उठा लेना तो चाहते हो पर अपने पेट का भी तो कुछ ख्याल रखना करो नहीं तो तुमसे यह सब कैसे बन पड़ेगा ।”

अचल को अपने उत्साह में विराग की बातों में दुख की इस धारा के प्रवाह का अनुमान न हो सका ; वह खाते वक्त कहता गया—“बहन मिल मालिकों के मामले हमारे मजदूरों के संघ की ओर से जैव से शर्तें पेश की गई हैं वे लोग बड़े घबड़ाए हुए हैं । हम लोगों के मजदूरों को फोड़ने की कोशिश करते हैं पर यह नहीं जानते हैं कि इस बार उनका पाला अचल से पड़ा है । एक-एक मजदूर के मामले में उनको मुँह की खानी पड़ रही

है। अब सत्रह तारीख को असली मोर्चा है। उस दिन तक मिल मालिक या तो मजदूरों की शर्तें मान लें, नहीं तो एक मजदूर तो कारखाने में क़दम रखेगा नहीं। तब छठी का दूध याद आवेगा।”

×

×

×

जब सोलह तारीख तक मिल के मालिकों की तरफ़ से समझौते की कोई बात पेश नहीं की गई तो सत्रह तारीख को मजदूरों ने हड़ताल कर दी। मिल के सामने के मैदान में सब मजदूर इकट्ठा होकर जब—“दुनिया के मजदूरों एक हो जाओ”, “मिल मालिक मुर्दाबाद” “साम्राज्य शाही का नाश हो” के नारे लगाने लगे तो मिल के मालिकों की अपने जान-माल की हिफाजत करने का होश हुआ। पुलिस को फोन हुआ और थोड़ी देर में पुलिस की लारी भरी हुई मिल के सामने आ पहुँची।

इधर मिल मालिक कूट नीति से भी बाज़ नहीं आ रहे थे। कई सौ मजदूरों में जो दस बारह उनके पिट्टू थे वे बहुत देर तक मजदूरों को फोड़ने की कोशिश करते रहे। पुलिस के आ जाने पर उन्होंने मजदूरों से कहा—“अब हड़ताल चल थोड़ी ही सकती है, थोड़ी देर में फाटक खुल जायगा और सब लोग अपने-अपने काम पर जायेंगे। इन बहकाने वालों की बात कौन सुनेगा।”

नतीजा यह हुआ कि जब फाटक खुला और ये मिल मालिकों के पिट्टू मिल के अन्दर जाने लगे तो उनकी दखा-देखी

दो चार भोले-भाले मजदूर भी फाटक की ओर बढ़े ।

अब अचल से न रहा गया । उसने कहा—“इस तरह तो इतने दिन का किया-धरा सब मिट्टी में मिल जायगा ।” वह दौड़कर उन मजदूरों के आगे पहुँचा और उसने चिल्लाकर कहा—“भाइयों गुमराह न हों । ये चन्द मजदूर जो मिल के अन्दर जा रहे हैं, तुम्हारे सच्चे साथी नहीं हैं । ये वह लोग हैं जो मिल के मालिकों से इस दगावाजी के लिये रुपया पाते हैं । तुम एक बार अपने काम की मेहनत को देखो फिर अपनी थोड़ी सी मजदूरी को देखो । उसमें न तुम्हारे पेट को भरपूर सूखी रोटी के टुकड़े ही मिलते हैं न तुम्हारे तन ढकने को समूचा कपड़ा ही मिलता है । तुम्हारे घर इन मिल मालिकों के पैखानों से भी हजार गुने गन्दे हैं । तुम्हारी ...।”

अचल मिल के एरिया में लेक्चर दे रहा है, यह खबर बहुत जल्दी एक मजदूर ने विराग को दी । उसने कहा—“वहाँ लेक्चर देना नाजायज है और फौरन ही पुलिस उसे गिरफ्तार कर लेगी ।” यह खबर सुनकर वह फौरन ही घर से निकल आई । इधर वह मजदूरों के सामने निकलने ही लगी थी; आज अचल की गिरफ्तारी होने की बात सुनकर उससे न रहा गया ।

एक ओर खड़े होकर उसने सुना, अचल कह रहा था—“इस दयनीय अवस्था को सुधारने का अगर कोई तरीका है तो वह यही है कि तुम लोग इन मिल मालिकों से किसी प्रकार का सहयोग न करो । मिलों में काम न करना ही इनसे असह-

योग करना है। जब तुम मिलों में काम न करोगे तो इनको भी रोटियों के लाले पड़ जायेंगे और तब इनकी टोपियाँ तुम्हारे पैरों पर गिरेंगी। तब ये तुम्हारी शर्तें को मानेंगे और तुमसे मिल में काम करने को खुशामद करेंगे। तभी तुम्हारी जीत होगी; तब तुम्हें अपने इस संगठन का फल मिलेगा ...।”

पुलिस इन्स्पेक्टर ने कहा—“बाबू साहब, मैं आपको मिल एरिया एक्ट के मुताबिक यहाँ लेक्चर देने के जुर्म में गिरफ्तार करता हूँ।”

अचल ने मुस्करा कर कहा—“बहुत खूब, चलिए।” और वह लारी की ओर चल दिया। चलते हुए उसने कहा—“भाइयों अपनी बात पर अड़े रहना, जब तक तुम्हारी शर्तें मंजूर न हों जायें भूखों मर जाना लेकिन अपनी बात से न हटना।”

मजदूरों ने चिल्लाकर कहा—“कामरेड अचल बिहारी जेन्दाबाद !”

विराग के कानों में इन शब्दों ने पड़कर उसके रोम-रोम हो पुलकित कर दिया। पर पुलिस की मोटर की ओर उसे आते हुए देखकर विराग की आँखों से आँसुओं की झड़ी लगी गई। उसने अचल के नज़दीक जाकर भरे हुए गले से कहा—“अचल !”

अचल ने कहा—“तुम यहाँ आ गई बहन ! मैं जानता था कि तुम हम लोगों का साथ अवश्य दोगी। मैं तो जाता हूँ बहन ! तुम इन गरीबों की हड़ताल सफल करने में मदद देना। ये बेचारे बड़े दुखी हैं बहन। अच्छा चलता हूँ”—कहकर

अचल ने झुककर उसके पैर छू लिए ।

विराग जैसी की तैसी खड़ी रह गई, अचल मोटर में बैठ गया और मजदूरों की बड़ी भीड़ को चीरती हुई मोटर धूल उड़ाती घर घर करती रही । विराग के कानों में मजदूरों के यही शब्द गूँजते रहे—“कामरेड अचल बिहारी जिन्दाबाद !”

१६

रामलाल ने जब अचल को देखा कि वह मजदूर सभा के काम में पूरी लगन के साथ जुट गया है तो उसे बड़ी प्रसन्नता हुई और अचल का भरोसा करके मजदूर सभा का काम उसके जिम्मे छोड़कर वह स्वयं किसानों के संगठन में लग गया । कई दिनों से वह देहातों में ही था, लौटकर लखनऊ आया तो मालूम हुआ कि अचल सत्रह तारीख को गिरफ्तार हो गया है और मजदूर लोग विराग के नेतृत्व में तीन रोज से हड़ताल चला रहे हैं । अचल ने कई बार उससे विराग की तारीफ की थी और उसने समझा था कि वह कोई अच्छे स्वभाव की गृहस्थ महिला होगी । इस बात का उसे ख्याल भी न आया था कि वह कोई इतनी समझदार और काम करने वाली स्त्री है ।

वह विराग के घर पहुँचा और उसने अपना परिचय स्वयं ही देते हुए कहा—“मैंने पहले बहुत दिन इन मजदूरों में काम किया है और अचल भाई मेरी ही प्रार्थना से इस ओर आए थे । उनके इधर लग जाने से मैं कुछ निश्चिन्त सा हो गया था

और किसानों के संगठन में लग गया था। आज बहुत दिना बाद लखनऊ आया तो मालूम हुआ कि वह तो इस-इस प्रकार गिरफ्तार हो गए हैं और आपने मजदूरों का भार धारण किया है। मुझे उस समय बड़ी खुशी होती है जब मैं देखता हूँ कि हमारी माताएँ और बहनें हमारी आजादी की लड़ाई में हमसे पीछे नहीं हैं। मैं आपकी सेवा में हर तरह तैयार हूँ। जो काम आप मुझे बता देंगी उसके लिए मैं जी तोड़कर प्रयत्न करूँगा।”

विराग ने कहा—“आप तो मुझसे इन सब कामों में पुराने हैं। मैं तो अचल के उठाए हुए काम में कुछ सफलता मिल जाय, इसी ख्याल से इसमें लग गई। वर्ना इस ओर सूझ बूझ से बिल्कुल खारिज हूँ। आप आइए और जो काम आपको अपने उपयुक्त जँचे वही करने ललिए। यहाँ तो काम ही काम है, काम की कमी नहीं है, काम करने वालों की कमी है। हम लोगों को बस इस बात का ख्याल रखना है कि जब तक कोई समझदार आदमी इस काम को उठाने वाला न मिल जाय, जेल नहीं जाना है। क्योंकि अभी मजदूर इतने पक्के नहीं हो पाए हैं कि जब तक कोई आदमी उनको ठीक-ठीक राय देने वाला न हो वे अपनी हड़ताल जारी रख सकें।

दूसरे दिन से रामलाल भी आकर काम में लग गया। विराग ऐसे तरीके से हड़ताल को चला रही थी कि जैसे उसे वर्षों का तजुर्बा हासिल हो। मजदूर आन्दोलन में बड़े-बड़े नेताओं की समझ में जिन बातों से बचने का कोई तरीका न आया था उनकी उसने तरीके से सोच निकालीं।

उसने मजदूरों की करीब दो ढाई सौ औरतों का एक संगठन इन दो दिनों में कायम कर दिया था। ये औरतें मिल के काम शुरू होने के वक्त फाटक के सामने धरना देती थीं। जब पुलिस की ओर से वहाँ एक सौ चालीस दफा का एतान किया गया तो उसने अपनी स्वयंसेविकाओं को एक-एक गज के फासले पर लिटाया। मितमालिक विराग के प्रबन्ध और बुद्धि से परेशान हो गए थे। उनके मजदूरों को फोड़ने के सारे प्रयत्न बेकार होते थे क्योंकि मजदूर जब अपनी पत्नियों को ही भूखे प्यासे मिल के फाटक के सामने धरना देते हुए देखते थे तो मिल में जाकर काम करने का ख्याल ही उनके सिर को नीचा कर देता था। वे लोग मन में सोचते थे—जब हमारी स्त्रियाँ बिना किसी शिकायत के भूखे प्यासे रहकर हड़ताल को जारी रखने का प्रयत्न कर रही हैं तो क्या हमारी पेट की आग कुछ उनसे अधिक तीव्र है जो हम जाकर मिल मालिकों के सामने अपना सर झुकावें।

इधर विराग यह भी समझती थी कि मजदूरों के खाने पीने का कुछ न कुछ ठीक प्रबन्ध हो जाना चाहिए जिससे कि हड़ताल चाहे जितने दिन चले उन्हें कम से कम जीवित रहने का सहारा हो जाय। वह दोपहर के वक्त औरतों को लेकर घर-घर जाकर मजदूरों के लिए आटा-दाल और चन्दा इकट्ठा करती थी। मजदूरों की उचित माँगों को बताकर जनता की सहानुभूति भी उसने पूर्णतया मजदूरों के पक्ष में कर ली थी। नतीजा यह हुआ था कि अधिकाँश लोग कुछ न

कुछ देते ही थे । गृहस्थों के उन घरों में जहाँ उन्हें काफी सहाय-
भूति मिली थी, विराग ने पीपे रखवा दिए थे जिनमें अपनी
सामर्थ्यानुसार लोग पाव भर, आधा सेर, सेर भर आटा
डालते थे जिसे छः सात रोज़ बाद मज़दूर उठा लाते थे । कुछ
लोगों ने दो-दो, चार-चार मज़दूरों को भोजन देने का वायदा
कर लिया था । उनके यहाँ विराग कि चिट्ठी ले जाकर लोग
भोजन कर आते थे ।

शाम को अक्सर मज़दूर किसी आम जगह में इकट्ठा होते
थे । विराग ने उन लोगों को इस बात की बिल्कुल मनाही कर
दी थी कि वह इन सभाओं में विनाशकारी और सरकार की
निन्दा करने वाले भाषण न दें । वह कहती थी—“हमें अपने
मुँह से व्यर्थ बातें नहीं बघारना है, हमें कुछ काम करना है ।
जहाँ तक मज़दूरों में इस शासन और पूँजीवाद के खिलाफ
विचार पैदा करना है हम लोग यह सब अपने समझदार आद-
मियों के ज़रिए बिना हो-हुल्लड़ मचाए हुए भी कर सकते हैं ।
शाम की इन सभाओं में मज़दूर लोग अक्सर विराग की
बताई हुई तर्कों से अपनी हड़ताल को कायम रखने की बातें
सोचते थे । पुलिस भी इस प्रकार की मीटिंगों को या ऐसे
भाषणों को न रोक सकती थी । इस तरह विराग की शान्ति-
पूर्वक ठोस काम करने की नीति से परिचालित हड़ताल चलती
ही रही ।

अचल ने अपनी न ज़मानत ही किसी को करने दी न
मुक़दमे की पैरवी ही । जज के सामने उसने कहा, “हमारी

सरकार की कार्यविधि का सब से बुरा पहलू वह है जिसमें वह गरीब मजदूर और किसानों को कुचल करके पूंजीपतियों की मदद करती है। हम लोग इस पूंजीवाद का विरोध कर रहे हैं अगर इसमें सरकार हमें मुजरिम समझती है तो मजबूरी है।”

कोर्ट में खड़े हुए सब लोग उसके हृदय से निकलते हुए शब्दों, उसकी योग्यता और उसकी सच्ची लगन पर वाह वाह करते थे। जज ने हुकुम सुनाया। अचल को तीन महीने की सजा हुई। जनता इस प्रकार कटघरे की ओर दौड़ी कि जैसे वह अचल को जबर्दस्ती पुलिस के हाथ से छीन लेगी। अधिकारी वर्ग में हल चल-मच गई। अचल ने चिल्ला कर कहा — “भाइयो हमें शान्ति से काम लेना चाहिए। अपने इन भाइयों के प्रति जो गुलामी की जंजीरो में जकड़े हुए हैं हमें क्रोध की दृष्टि से देखने के बदले दया का वर्ताव करना चाहिए। इनका पेट इन्हें हमारे ऊपर अत्याचार करने को बाध्य किए हुए है। इलांकि यह कायरता है, क्षम्य नहीं है, हमें अपनी शक्ति इनसे लड़कर ज्ञाया नहीं करना है। हमारी लड़ाई उस ताकत के खिलाफ है जो इनको अपनी उँगलियों पर नचा रही है। अभी इमारा समय आजादी के लिए बलिदान करने का है हिंसा करने का नहीं। आप लोग शांति धारण कीजिए।”

जनता का सारा उत्साह भंग हो गया। विराग की ही मांति जाने कितनी स्त्रियों ने अपने आँसू आँचल से पोंछ डाले और अचल को आँखभर तीन महीने के लिए जैसे इकट्ठा ही

देख लेना चाहता। लोग रूँधे कंठ से जोश से पागल अचल की जय मनाते, उसकी मोटर को देखते रहे।

१७

हड़ताल सुचारू रूप से चल रही थी। मजदूरों ने अब मिल की ओर जाना ही बन्द कर दिया था। वे लोग इस ओर से जैसे बिल्कुल ही निश्चिन्त हो गए थे। बहुत से बड़े मजदूर लोग जो अपना मिल का काम छोड़ कर और कुछ काम न कर सकते थे वे तो अवश्य ही मजदूर सभा के पैसों से अपना गुजारा करते थे वरना अधिकतर लोग किसी न किसी काम में लग गए थे। कुछ तो देहात जाकर अपना खेती-बाड़ी का काम करने लगे थे, कुछ छोटे-मोटे उद्योग-धन्धों में लग गए थे। बहुतों ने अहमदाबाद वगैरह जाकर जहाँ के मिलों की दशा काफ़ी अच्छी थी नौकरी कर ली थी।

विराग आजकल इन लोगों के नैतिक उत्थान में लगी हुई थी। वह उनके घरों में जाकर उन्हें कम खर्च में सफ़ाई रखने का और ढंग से रहने का तरीका बताती। जिन लोगों की ताड़ी शराब या जुए की आदत पड़ गई थी उन्हें वह उनकी बुराईयाँ बताकर उनसे छुड़वाती। उसमें सबसे खास बात जो थी वह यह थी कि वह इन ग़रीब मजदूरों या उनकी पत्नियों से बात करते समय कभी ऊँची कुर्सी से न बोलती। उन लोगों को कभी इस का आभास भी नहीं मिलता था कि उनसे कोई उन्हीं

में का व्यक्ति नहीं बोल रहा है । विराग जिस समय उन लोगों की कोठरियों में पहुँचती तो सब बड़े प्रसन्न होते और अपनी-अपनी शिकायतें और फरियादें लेकर पहुँचते ।

रधिया कहती—“देखिए बहिन जी इन्होंने आपके सामने कसम खाई थी कि कभी ताड़ी में हाथ न लगाऊँगा कल यहाँ से मिट्टी के खिलौने बनाकर चौक के दुकानदार के पास बेचने को गए तो लौटे ही नहीं । मैं ग्यारह साढ़े ग्यारह बजे तक बैठी रास्ता देखती रही जब न आए तो मैंने महावीर को ढूँढ़ने को भेजा । वह बेचारा, भगवान उसका भला करे, बड़ी देर तक ढूँढ़ता रहा, तब ये वहाँ हौली में पड़े मिल । आए ती रात भर तबियत खराब रही और अपने जामे का होश तक नहीं रहा । अब इस वखत आप को देखा तो कोठरी में छिप गए । मुझसे कहने लगे कि तू बहिन जी से कहेगी तां तेरी बोटी-बोटी काट डालूंगा । मैंने कहा कि उनके सामने चल कर मेरी बोटी काटने को कहो तो जानूँ, तो बोले कि उनको कौन सा मुँह जा कर दिखाऊँ ।”

विराग रधिया की कोठरी में पहुँची । मतई बड़ा उदास अन्दर बैठा हुआ था । विराग को आते देख कर भाग जाने को हुआ तो विराग ने उसे आवाज दी । अब वह आगे न बढ़ सका । आकर उखके पैरों पर गिर पड़ा । कहने लगा—“बहिन जी मैं किस मुँह से आपके सामने आऊँ । मैंने आपके सामने गंगा की कसम खाई थी कि कभी नशा हाथ से न छुऊँगा, अब इस वखत तो ऐसा मन होता है कि जाकर डूब मरूँ ।”

विराग ने कहा—“खैर तुम्हें अपने किए का पछतावा है यह बहुत अच्छा है। तुम अपने मन में इस बात को पूरी तौर से तय कर लो कि मैं नशा हाथ से नहीं छोड़ूँगा, कसम खाने की कोई ज़रूरत नहीं है। जो एक बात अपने मन में ठीक तौर से तय कर लेते हैं फिर चाहे जान भी चली जाय वह अपनी बात से नहीं टलते। तुम इस बार भी पक्का इरादा कर लो कि मैं नशे की चीज़ को कभी हाथ न लगाऊँगा और उसे ज़िन्दगी भर निभाओ तो अभी भी क्या बुरा है।”

मतई ने कहा—“बहिन जी मैं आज से पक्का इरादा कर लेता हूँ कि चाहे जान रहे चाहे जाय कभी नशे की चीज़ हाथ से न छोड़ूँगा। अब मेरे इस प्रण को दुनिया की कोई बात नहीं ढिगा सकती।”

विराग ने कहा—“मैं तुम्हारी बात से बहुत खुश हूँ मुझे तुमसे ऐसी ही उम्मीद थी।”

रधिया की कोठरी के बाहर विराग निकली तो बुढ़ा राम बक्स खटिया से उठ कर दौड़ा, कहने लगा—“वाह बिटिया हमारा घर तुम भूले जाती हो। जिस बिगड़े घर को तुम्हीं ने बनाया, है उसकी तरफ से ऐसे आँखें फेरने से कैसे काम चलेगा।”

विराग हँसने लगी—“नहीं बाबा आप का घर भूल सकती हूँ, भला कैसी बातें करते हैं आप। कहिए आप अच्छी तरह तो हैं न।”

“हाँ बिटिया तुम्हारी दया से अच्छी तरह हूँ। गनेसी को

जब से आपने कागज़ के मील में लगवा के उसकी जुआ खेलने के आदत छुड़वा दी, तब से तो वह पारस हो गया। मेरी बड़ी खातिर करता है। जो कुछ कमा कर लाता है मेरे ही हाथ रखता है। इतना मज्दों में तो मैं जब खुद कमाता था तब भी नहीं था। हम लोगों के आपने एक एक आदमी को लेके ऐसा ढंग से काम में लगाया है कि मिल का बन्द होना हम लोगों का खलता ही नहीं है, बल्कि पहले से ज्यादा स्वतन्त्र हैं। कोई ताड़ के पंखे बनाता है, कोई सूत कातता है, कुछ लोगों ने मिल कर बाजा बजाना सीख कर एक बैंड कायम कर दिया है। जाने कितने जात पाँत का ख्याल छोड़ कर राजगीरी में लग गए हैं। यह सब आप ही के रास्ता दिखाने का फल है।”

विराग ने कहा—“हम लोग ईमानदारी से जो भी काम करेंगे सफल होगा। मिहनत करने पर पेट के लिए कमी न रह जायगी। जिस आदमी को इस बात का ख्याल होगा वह कभी भूखा न मरेगा।”

१८

आज अचल के छूटने की तारीख थी। सारा शहर मजदूरों ने बड़े ठाठ से सजवा रखा था। चारों ओर धूम-धाम थी। अचल जिस वक्त फाटक पर पहुँचा तो इतनी बड़ी भीड़ देखकर वह आश्चर्यान्वित हो गया। विराग अक्सर उससे जेल में मिलने जाया करती थी और अपने काम की विधि

वगैरह उसे बताती थी पर वह इस बात का अनुमान न लगा सका था कि जनता की इतनी बड़ी संख्या की सहानुभूति इन हड़ताली मजदूरों को मिल गई है। विराग का इस इतने बड़े कार्य का सम्पन्न करना देख कर अचल को बड़ी प्रसन्नता हुई और आगे काम करने की हिम्मत बँधी।

विराग ने उसके गले में फूलों की माला डाली और थोड़ी देर में वह फूलों से लद गया। जनता के बीच में उनकी जै जै के नारों में शहर की ओर चला, जहाँ एक बहुत बड़ी सभा का आयोजन था। सभा में उसके कार्य और त्याग की लोगों ने सच्चे दिल से प्रशंसा की।

रात में खाना खाते वक्त अचल ने कहा—“बहिन तुम्हारी बनाई हुई चीजों ने दिमाग बहुत खराब कर दिया है, जेल में पहुँच कर मेरे लिए तो थोड़े दिन खाना खाना असम्भव सा हो गया।”

विराग ने कहा—“भूठ न बोलो ऐसा मैं क्या बना के तुम्हें खिला देती हूँ जो मारे तारीफों के पुल बाँधे दे रहे हो।”

अचल ने कहा—“अच्छा न सही। यह तो बताओ इन मजदूरों में तुमने मुझे इतना भगवान क्यों बना दिया है। ऐसा सम्मान के लायक मैंने कौन सा काम किया है।”

“तुमने सम्मान के लायक नहीं किया तो किसने किया है। तुमने मुझे कहाँ से कहाँ लाकर खड़ा कर दिया। मुझे अपने मानसिक त्रास और अवृत्त वासनाओं से ही छुट्टी न मिलती थी। मैं सदा अपने मस्तिष्क में इन्हीं गुत्थियों को सुलझाने

का प्रयत्न किया करती थी; तुमने यह रास्ता दिखा कर मुझे आदमी बना दिया । मेरा जीवन सुफल हो गया ।”

“मेरा आधे बीच में छोड़ा काम तो तुमने ही ठीक तरीके पर लगाया और यश सब मेरे पल्ले मढ़ दिया ।”

मुरारी घर के अन्दर आता हुआ बोला—“नहीं आप लोग लड़िए नहीं । मैं माने लेता हूँ कि न आपने कुछ काम किया न इन्होंने । तारीफ़ के लायक जो काम किया है वह मैंने किया है ।”

अचल हँसने लगा । मुरारी उसी की थाली में आकर खाने बैठ गया ।

विराग बोली—“अब तुम दोनों का ब्याह हो जाय तो ठीक रहे ।”

मुरारी ने कहा—“पहले बड़ों से शुरू होना चाहिए ।”

विराग बोली—“सो तो होगा ही ।”

अचल ने कहा—“यह सब कुछ नहीं अब मुरारी का ब्याह होना चाहिए । तुम कह रही थीं न कि वह ज़रदोज़ी का काम सीख कर वहाँ कारखाने में काम करता है । अब भी वहाँ जाता है कि नहीं । इसका तो एक बात में लगना बड़ी मुश्किल बात है ।”

मुरारी ने हँसते हुए कहा—“नहीं आप लोगों ने इस बीच में बड़े-बड़े काम किए हैं तो मैंने भी एक शेर मारा है । जब से इस ज़रदोज़ी के काम में लगा हूँ किसी ओर मुँह उठाकर नहीं देखता हूँ । अब इसी में ज़िन्दगी बिताने का इरादा है । आदमी

ईमानदारी से काम करे तो उसी में बड़े वारे-न्यारे कर सकता है ।”

अचल ने कहा—“अब तो यह बड़ी समझदारी की बातें करने लगा है बहन ।”

विराग ने कहा—“क्या कहने है ।”

“तब तो इसका ब्याह कर देना ही ठीक है ।”

“और आप क्या अभी तक नासमझी की ही बातें करते आए हैं जो आपका ब्याह न हो और मेरा ब्याह हो जाय ।”

अचल ने कहा—“नहीं, इस मामले में मेरा तुम्हारा कोई बराबरी का सवाल नहीं है । मेरा क्षेत्र दूसरा है तुम्हारा दूसरा । मैं अभी अपने काम के ध्येय पर नहीं पहुँचा हूँ । फिर मेरा जीवन बड़ा अनिश्चित और लापरवाही का है । मैं अपने रहन-सहन को ही कुछ निश्चित और नियमानुकूल नहीं बना पाता हूँ । ऐसे में दूसरे आदमी को बन्धन में बाँधना गलत बात है । उसे मेरी इस अनिश्चितता में कष्ट पहुँच सकता है । इसके सिवाय मैं विवाह के मामले में पत्नीनिर्वाचन के किसी भी मौजूदा तरीके से सहमत नहीं हूँ । बिना जान-पहचान के किसी वर-बधू को भिड़ा देना जिनको एक दूसरे की शकल भी अच्छी न लगे—बड़ी लचर बात है, यह तुम जानते ही होगे । हमारे यहाँ के पढ़े-लिखे लोगों ने लड़की को देखना शुरू किया है । उसमें सिवाय रूप के वह लोग कुछ नहीं देखते और यह देवियां जब घर में आकर क्रान्ति मचाती हैं तो उनको अपनी गलती

का पता लगता है। पश्चिमी सभ्यता का कोर्टशिप वाला तरीका भी कुछ अच्छा प्रयोग नहीं सिद्ध हुआ। इतने रोज़ के परिचय के बाद विवाह करने पर भी उनके यहां तलाक़ सब से ज्यादा होते हैं। इसलिए तुम इस बात को समझ लो कि मेरा दिमाग़ इस मामले में बहुत उलझा हुआ है। तुम अच्छे लड़के की तरह ब्याह करके सुख से रहो, मेरी फिकर न करो।”

विराग का बात-चीत का सारा उत्साह जाता रहा। वह अपनी हथेली पर सिर रखके जाने क्या सोचने लगी।

१६

मिल मालिक बहुत दिन इसी ख्याल में तने रहे कि जब मजदूरों को खाने की तकलीफ़ होगी तब वे हार कर अवश्य हमारे पास आकर मिल खोलने की प्रार्थना करेंगे, लेकिन महीने पर महीने बीतते चले गए और मजदूरों के भुकने के कोई लक्षण न दिखाई दिए तो वे बहुत परेशान हुए। पता लगाने पर उन्हें मालूम हुआ कि लगभग सब मजदूरों ने अपने लिए कुछ न कुछ आमदनी का ज़रिया निकाल लिया है। जो बिल्कुल कुछ नहीं कर सकते हैं या जिन्हें कभी कोई काम नहीं मिलता है उनकी मजदूर सभा मदद करती है। यह परिस्थिति देखकर उन्हें मजदूरों के भुकने की संभावना बहुत कम जान पड़ी। वे आखिर करें तो क्या करें। उनकी भी आमदनी का ज़रिया तो मिल है। रुपया जितना है वह मिल की बिलडिंग और

मशीनों में लगा पड़ा है। बेचने का विचार करें तो मोहरों का माल कौड़ी के माल जायगा। आखिर को यही तय हुआ कि मजदूरों की शर्तें मान ली जायें।

मजदूर सभा की कार्यकारिणी को चिट्ठी लिखी गई। अचल, विराग और मजदूरों के कई प्रतिनिधि मिल मालिकों के साथ बैठे और उसमें जब मिल मालिकों से शर्तें पूरी करने का पक्का आश्वासन मिला तो मजदूर सभा ने मजदूरों को सातवें रोज तक मिल में आकर हाजिर होने व काम करने की विज्ञप्ति निकाली।

मिल खुल गया। मजदूर बड़ी मुश्किल से इकट्ठा हुए और फिर भी पहले से संख्या कम ही रही। मिल के काम करने के घंटे कम कर दिए गए थे और उनकी मजदूरी भी बहुत कुछ बढ़ा दी गई थी। मिल मालिकों ने मजदूरों के कार्टरों को ठीक-ठीक बनवा देने के लिए तीन महीने की मोहलत माँगी थी। मजदूर सभा की सहायता से मिल किसी प्रकार चल पड़ा। अब मिल के मालिकों का रुख बड़ा ही नम्र और विनीत हो गया था और मजदूर अपने अधिकारों के लिए बात-बात पर अड़ते थे।

अचल अपने घर पर बैठा हुआ मजदूर सभा के आय-व्यय का निरीक्षण कर रहा था कि एक मजदूर एक सज्जन को लेकर कमरे में आया।

“भाई साहब, देखिए ये बाबू जी आप से मिलना चाहते हैं।”

“आइए साहब, कहिए आप कहाँ से आ रहे हैं ?”

“मैं आसाम का रहने वाला हूँ। हमारे यहाँ मजदूरों की हालत बहुत ही खराब है, उन से मालिक लोग जरखरीद गुलाम से भी बुरा वर्ताव करते हैं। वे मालिकों की इच्छा के दास हैं, उनका अपना कोई अस्तित्व नहीं है, उन्हें अपने शरीर पर हक नहीं है। जैसे कि मालिकों ने उनका हृदय निकाल लिया है और अपनी शक्तियों से उनके शरीर के अवयवों को परिचालित करते हैं। इस पर भी उन्हें सब्र नहीं है वे उन पर तरह तरह के अत्याचार करते हैं। न उन्हें भर पेट भोजन देते हैं न मिनट भर चैन लेने देते हैं। हम लोगों ने एक यात्री से सुना था कि इस तरफ मजदूरों ने अपनी दशा बहुत अच्छी कर ली है, वे मालिकों पर हावी हो गए हैं। इस लिए मैं आप लोगों के पास आया था कि कुछ लोग हमारे देश में भी चलकर स्वतंत्रता की लहर फैलावें। हमारे देश के मजदूर भी कुछ अपनी वक्त को जान सकें और आदमियों की तरह जिन्दगी बसर करना सीखें। इस प्रान्त में देखता हूँ आदमी आदमी की ज़बान पर आपका नाम है। सब आपके और विराग बहन के गुणों का गान करते हैं। मैं चाहता था कि आप हमारे देश में चलकर कुछ दिन रहें और काम करें।”

“बात तो ठीक है, मैंने यह सुना है कि आपके यहाँ के ज़मींदार लोग उन लोगों से बहुत क्रूरता से पेश आते हैं जो मजदूरों में जागृति फैलाते हैं। यह बात कहाँ तक ठीक है ?”

“काफी हद तक, भाई साहब बिना कुछ बलिदान किए

और कष्ट सहे कुछ हासिल थोड़े ही हो सकता है। हमारे देश में काम करना मज़ाक नहीं है उसके लिए हिम्मत चाहिए और हाथ भर का कलेजा। यहाँ की तरह वहाँ काम करना हलुआ नहीं है। आप का मन भरे तो चलिए नहीं मैं कोई दूसरा द्वार खटखटाऊँ।” - आगन्तुक ने उत्तेजित होते हुए कहा।

अचल बहुत शायस्तगी से बोला—“आप बड़े भावुक आदमी मालूम होते हैं। मैंने वहाँ की हालत के बारे में पूछा आप इतने में ही खफ़ा हो गए। मैंने क्या आपसे कहा है कि मैं नहीं चलूँगा।”

आगन्तुक शमिन्दा हुआ और बोला—“क्षमा कीजिए, मैं जब से अपने काम के लिए निकला हूँ, मुझे सफलता के दर्शन भी न मिले। जिससे कहता हूँ वही वहाँ की परिस्थितियों का भयानक चित्र खींच कर कहता है—वहाँ जब ऐसी बुरी दशा है तो वहाँ कैसे जाया जा सकता है। और यह ठीक भी है। लोगों ने अभी तक देश सेवा को एक लेक्चर देने की, लम्बी चौड़ी हाँकने की या बहुत बड़े तो जेल यात्रा करने की सी आसान चीज़ समझ रखा है। लेकिन साहब देश सेवा तो है जान का सौदा; जो अपनी जान हथेली पर रख ले वही इस मैदान में आवे।”

अचल ने कहा—“लीजिए आप तो फिर चालू हो गए। अच्छा, आप टंडे होइए, मेरे चलने की बात आप पक्की समझिए। इस वक्त आप से बात-चीत करना मुझे कुछ ठीक

नहीं मालूम होता है ।”

आगन्तुक ने कहा—“आप धन्य है भाई साहब, मुझे आप से ऐसी ही उम्मीद थी । इसमें कोई शक नहीं कि हमारे देश में काम करना बड़ी जोखिम की बात है फिर भी हम लोगों के जीते जी आपका कोई बाल बाँका न कर सकेगा ।”

“खैर मुझे बाल बाँका होने से कोई डर नहीं लगता है । बात इतनी है कि मैं जब किसी काम को हाथ में लेने लगता हूँ तो उसके पहिले सोच विचार काफ़ी कर लेता हूँ, क्योंकि मेरी कोशिश यह रहती है कि जिस काम को हाथ लगाऊँ उसे पूरा करके छोड़ूँ । खैर हटाइए इस सब को, आप मुझे यह बताइए कि मुझे मोहलत कितने दिन की है ।”

“यह तो आपकी तबियत पर है । जितने वक्त में आपकी तय्यारी हो जाय ।”

“तय्यारी, क्या कोई मुझे वहाँ समान बाँध कर थोड़े ही चलना है । जो कुछ दो चार दिन की देर लगेगी, यहाँ के लोगों को काम समझाने में लगेगी ।”

२०

दूसरे ही दिन शहर भर में यह बात बिजली की तरह फैल गई कि अचल आसाम के मजदूरों को संगठित करने व वहाँ मजदूर आन्दोलन चलाने के लिए जा रहे हैं । शहर के पत्रों ने अचल के त्याग और साहस की प्रशंसा करते हुए, उसके

इस कार्य पर साधुवाद देते हुए, कालम के कालम लिख डाले । जहाँ कहीं भी अचल जाता उसके जाने की खबर उससे पहले ही वहाँ पहुँच जाती । लोग उससे तरह-तरह के प्रश्न करते, सबको बड़ा आश्चर्य था कि वह उन अत्याचारी ज़मींदारों के देश में, जो तेज़ आग की भयानक भट्टी के समान था, सहर्ष चला जा रहा है ।

अचल के जाने की यह खबर उड़ती हुई विराग के पास भी पहुँच गई । उसके बाद उससे और अचल से कई बार बात भी हुई और हालाँकि उसका हृदय अन्दर ही अन्दर मथता सा रहा । उसने मन में कहा—“दुनिया भर में खबर फैल गई और इसने मुझे न बताया । खैर, मैं भी नहीं छोड़ती देखती हूँ, कब तक नहीं बतलाता है ।”

इसी वक्त अचल बाहर से आया । विराग ने उसकी ओर स्निग्ध दृष्टि से देख कर कहा—“भैइया जब से तुम जेल गए हो यह खाँसी तुम्हारे पीछे लगी हुई है, दिन पर दिन शरीर कमज़ोर होता जाता है । मैंने कै बार कहा कि इसका लग के इलाज करो मगर तुम ध्यान ही नहीं देते हो ।”

“क्या होगा दवा करके बहिन ? बलि का बकरा मोटा हुआ तो, और दुबला हुआ तो, उसे तो अपनी जान से हाथ धोना ही है ।”

“इसका क्या मतलब ?”

“तुम्हें मैंने बताया नहीं बहन ? मैं आसाम में मज़दूर

छिपे-छिपे काम करते जाओ ठीक है, जिस वक्त ज़मींदारों के हाथ लग गए तब तो फिर मरना ही है ।”

“तब तो फिर ठीक ही है”—विराग ने काफ़ी उदासीनता दिखलाने की चेष्टा करते हुए कहा ।

“तुम तो जानती हो बहन, मैंने मजदूरों की दशा सुधारने का बीड़ा उठाया है । अगर इतने बड़े समाज को उठाने में एक व्यक्ति की जान भी चली जाय तो उसकी क्या वकत है ?”

“यानी व्यक्तित्व कोई चीज़ नहीं, क्यों अचल भाई ? समाज के लिए जो व्यक्ति है उसका व्यक्तित्व है । स्वतन्त्र व्यक्तित्व कोई वस्तु नहीं ?”

“हाँ बहन व्यक्ति को अपना अस्तित्व समाज में मिला ही देना चाहिए ।”

×

×

×

प्लेटफार्म पर तिल रखने की जगह न थी । कई हजार आदमी अचल को बिदा करने आए थे । कालिज के फैशनेबुल विद्यार्थी और प्रोफेसर, काँग्रेस के स्वयंसेवक और सफेदपोश नेता, सीधे-सादे गृहस्थ, गरीब काले कपड़े पहने कृश शरीर मजदूर—सभी तो अचल के प्रसंशक और उसके इस महत त्याग में सहानुभूति दिखाने के लिए आए थे ।

गाड़ी का वक्त हो गया था, कुछ ही मिन्टों की कसर थी । गज्रों से लदा हुआ अचल सब लोगों से जल्दी-जल्दी बिदा हो रहा था । विराग ने रो-रो कर आँखें सुजा लीं थी । अचल ने झुक कर उसके पैरों में जिस समय अपना सिर रक्खा तो

उसके भी नेत्र गीले हो आए। रुँधे कण्ठ से उसने कहा—
“बहिन, अब आज्ञा दो।”

विराग ने अपने को संयत करते हुए कहा—“जाओ भाई ! तुम्हारे ऐसे त्यागी वीर ने मुझे बहन कह कर पुकारा था, मुझे बहन की तरह ही स्नेह की दृष्टि से देखा था, यह मेरे लिए आजन्म एक गौरव की बात रहेगी। भगवान सब बहनों को ऐसे देश के लिए हथेली पर जान रख कर काम करने वाले भाई दे।”

इसके बाद उसकी हिचकी बँध गई। अचल का हृदय भारी हो गया। वह गाड़ी के दरवाजे पर चढ़ कर खड़ा हो गया। अखबारों के रिपोर्टरों और मित्रों ने अपने अपने केमरे सम्हाले। जनता हर्षोल्लास से अचल की जयध्वनि कर रही थी, पर बेचारे काले शरीर वाले मजदूर आठ आठ आँसू रो रहे थे।

विराग मन में सोचती थी—“इन दुनिया के लोगों को हर बात में तमाशा मालूम होता है। इनके लिए हर चीज़ में हुल्लड़बाजी ही है। यह जनता इतनी समझदार और उदार नहीं है कि वह इस बात से प्रसन्न हो रही हो कि एक व्यक्ति किसी अपरिचित स्थान के लोगों के दुख को जाकर दूर कर देगा। यह सब कहने की बातें हैं, मुलम्मेबाजी है। लोग तमाशबीनी के शायक हैं वे वही पाकर हर्षध्वनि करते हैं।”

गाड़ी चल दी। अचल ने हाथ जोड़े। विराग ने उसे एक बार आँख भर कर देखा। गाड़ी उसके हृदय पर जैसे अपने

भारी पहिए चलाते हुई चली गई और जब किसी ने कहा—
“चलिए न ।” तो उसने कहा—“हाँ चलो, चलना तो है ही ।”

२१

विराग के जैसे जीवन का सार निकल गया । यद्यपि उसका समय अचल के साथ बहुत थोड़ा कटा था । पर जिस दिन उसने अचल को पहले पहल देखा था उसका हृदय कह बैठा था उसने भगवान से ऐसे ही पुत्र की कामना तो की थी । फिर भगवान ने उसकी क्यों न सुनी । अरे यह सब गलत है । भगवान है ही कहाँ जो वह किसी की कामना पूर्ण करे । मुरारी अपने रक्त माँस का ही लोथड़ा था लेकिन वह तो कभी इतनी आत्मीयता न दिखाता था । अचल का हृदय तो उसके म्लान मुख को देखकर ही घबड़ा उठता था । अपने पुत्र को जितनी ममता न हो उतनी एक गैर को हो, कैसे आश्चर्य की बात है । लोग कहते हैं कुछ लोगों के पूर्व जन्म के संस्कार होते हैं जो उन्हें इस संसार में आकर पुनः सम्बन्धित कर देते हैं । यह सब कैसे संभव होता है कुछ समझ में नहीं आता ।

विराग को आजकल कुछ अच्छा न लगता था । मज्जदूर सभा के कामों की ओर जाने का उसका मन ही नहीं होता था । हर काम में उसे अपूर्णता का आभास होता था । दिन उससे काटते न बनता था । मुरारी का ब्याह हो गया था वह अपने राग-रंग में ही मस्त था उसे माँ का यह बेसुरापन कुछ अच्छा न लगता था ।

कमरे में लगे कलेण्डर की तारीख का पन्ना फाड़ते हुए विराग ने कहा — “आज अचल भाई को गए महीना भर हुआ है। मालूम होता है जैसे सालों बीत गए।”

एक मजदूर कमरे में आकर बोला—“बहिन जी यह अखबार देखिए कैसी भयानक खबर छपी है। कहीं ऐसा न हो यह हमारे अचल भाई के बारे में हो।”

विराग ने फौरन अखबार हाथ में लेकर पढ़ा :—

अपने निजी संवाददाता द्वारा हमें यह पता चला है कि आसाम में जमींदारों के अत्याचार बराबर बढ़ते चले जा रहे हैं। इधर कुछ दिनों से बाहर के प्रान्तों के नवयुवकों में इस प्रान्त के मजदूरों की दशा सुधारने की धुन बहुत जोरों में सवार हुई है। इस प्रकार इक्का दुक्का जाकर सुधार करने की इच्छा रखना बहुत बड़ी गलती है। अभी हाल ही में एक नवयुवक जो इस प्रकार की इच्छा से यहाँ आया था जमींदारों द्वारा गायब कर दिया गया है। बहुत मुमकिन है वह अब तक अपनी जान से हाथ धो बैठा हो इसलिए अब भी इस प्रकार का कार्य करना भावुकता से खाली न होगा।

विराग के मस्तिष्क में जैसे उथल-पुथल मच गई। उसे पूर्ण विश्वास था कि यह अचल हा की बात है। पर उसे यह जरूरी मालूम होता था कि वहाँ जाकर वह इस बात का पता लगावे। अचल के जीवित होने और मिलने का लालच भी कम न था। वह शाम की गाड़ी से जाने को तय्यार हो गई। मजदूर सभा का मतई उसके साथ जाने को बिना कहे ही तय्यार हो गया

और लाख समझाने पर भी न माना ।

मुरारी ने यह बात सुनी तो बहुत गुस्साया । कहने लगा—
“उनकी तो जैसे जैसे उमर बढ़ती जाती है अक्ल कम होती जाती है । एक साहब वहाँ जाके अपनी जान खो चुके हैं अब यह उनको ढूँढ़ने जाकर बलिदान देंगी ।”

किसी के यह कहने पर कि न हो आप साथ चले जाइए वह बोला—“मतई साथ जा तो रहा है, फिर मैं जाऊँ तो दुकान की क्या हालत हो । वहाँ का कुछ ठीक है कितने दिन में पता लगेगा फिर घर के लोगों को किस पर छोड़कर जाऊँ ।”

×

×

×

“बहिन तेरह दिन तो हम लोगों को इन जंगली बस्तियों में घूमते हो गए”, मतई ने कहा, “यहाँ तो कुछ पता ही नहीं लगता । फिर हम लोगों को कुछ मालूम भी तो नहीं है कि अचल बाबू यहाँ आकर देश के किस भाग में रहे थे कहाँ उन्होंने काम शुरू किया था । आखिर इस तरह कैसे पता चलेगा ?”

विराग ने कहा—“तुम्हारा वाकई में बहुत वक्त खराब हुआ मतई, तुम लौट जाओ मैं यहीं पता लगाऊँगी आखिर मुझे वहीं जाकर क्या करना है । आसाम की एक-एक इंच ज़मीन खान डालूँगी ।”

“नहीं बहन ऐसा न होगा । मैं आपको अकेला छोड़ कर न जा सकूँगा । आसाम के यह दुष्ट आदमी जैसे जान लेना /तो कोई चीज़ ही नहीं समझते हैं । अगर हम लोगों ने यह

आसामी मित्र न बना लिया होता तो हम अब तक जाने कब तक जहन्नुम पहुँच गए होते ।”

“मुझे जहन्नुम जाने की ही तो चाह है मतई, वहाँ हमारे ऐसे पापात्मा लोग बहुत होंगे । स्वर्ग के बनिस्बत वहाँ के लोगों से जल्दी मेल हो जायगी ।”

मतई विराग के इस निराशामय कण्ठ स्वर को जब सुनता तो वह कुछ भी न बोलता, बस उसका मुँह देख कर रह जाता । कहता—“भगवान पता नहीं इन्होंने अपने मन में क्या ठानी है ।”

फिर वे एक गाँव से दूसरे गाँव, एक जंगल से दूसरे जंगल को जाते । उनका आसामी साथी उन्हें अधिकारियों व शासक-वर्ग की आँखों से बचाता और हर बस्ती के मज्दूरों में अचल का पता लगाता । कहीं पता चलता कि एक बाबू यहाँ मज्दूरों से आकर मिला था वह उत्तर के गाँवों में चला गया । उत्तर के गाँवों में मालूम हुआ कि वह अक्सर जंगलों में मज्दूरों से मुलाकात करता था । एक दिन शाम को वह गया सो लौट कर नहीं आया । जमींदारों के लोग उसके मारने की घात में थे । पता नहीं वे उसे पा गए या वह किसी और तरफ के गाँवों में चला गया जहाँ किसी जंगली जानवर ने खा डाला ।

विराग को इन बातों से जैसे कोई निराशा ही नहीं होती । वह जैसे अपना एक यही काम याद रख पाई थी, अचल को खोजना और संसार की सारी बातें जैसे उसे भूल गई थीं !

रात के समय एक गाँव में मतई और विराग आराम कर रहे थे। पास के एक भोपड़े लगे हुए से मतई को जगा कर वह आसामी आया और घबड़ाया हुआ बोला—“तुम लोगों के पीछे जमींदार का आदमी मारने को तैनात कर दिया है। तुम लोग मेरे साथ भाग चलो नहीं तो आकर तुम्हें खत्म कर देगा। हम लोग सीमा के गांवों में हैं तुम लोग रात भर चलो तो मैं तुम्हें सबेरे रेल के स्टेशन पर पहुँचा दूँगा।”

विराग ने कहा—“मतई तुम भाग जाओ।”

मतई ने कहा—“बहन तुम्हें छोड़ कर न जाऊँगा। चाहे यहीं मर जाऊँ और मेरे बच्चे भीख मागें।”

आसामी ने विराग को कंडी में बैठा लिया और बे रात भर अंधेरे में भागते ही रहे। जाने कितना उन्होंने चला कुछ शुमार ही नहीं।

रेल के यात्री विराग को देखकर आश्चर्यान्वित थे। उसका चेहरा सूखे काठ के ऐसा हो गया था। बाल ऐसे रुखे और उलझे थे, मालूम होता था अपने हाथ से नोचने से ही इस दशा को पहुँचे हैं। चेहरा उसका शून्य की भांति भावहीन मालूम होता था। घड़ घड़ करके चली जाती रेल में खिड़की से आकाश में ही आँखें गड़ाए हुए वह पता नहीं क्या दूँद रही थी।

गंगा जी आई, लोगों ने पैसे डाले। मतई ने कहा—“बहन गंगा में कुछ छोड़ देओ।”

विराग ने गले की जंजीर, हाथ की अँगूठी और सोने की

चूड़ियाँ सब ढाल दी ।

मतई जैसे यह देखकर बौखला गया ।

एक स्टेशन पर एक बुड्ढे भिखारी ने आकर हाथ फैलाया, विराग ने अपने बटुए को सीधा उसके हाथ में उलट दिया । लगभग छत्तीस सैंतीस रुपये थे । मतई भिखमंगे से रुपए छीनने दौड़ा तो विराग ने उसका हाथ पकड़ लिया ।

२२

सन्ध्या का समय था । लाल लाल दीर्घाकार सूर्य आकाश को अपने रंग में रंग रहा था । घर के बच्चों के शोर ने विराग को और भी परेशान कर दिया था । वह कमरे की खिड़की के पास आकर बैठ के सूर्य को देखने लगी । यह सूर्य के अस्त होने का समय है । मेरा जीवन भी तो अब अस्त होने को है । लेकिन अस्त होने के पहले सूर्य जैसे पृथ्वी को इतना प्रकाश दे डालना चाहता है कि वह उसके पास बहुत समय तक चल जाय । थोड़ी देर से जो पृथ्वी निरन्तर अन्धकार की छाया से आच्छादित होती जाती थी वह एक बार फिर प्रकाश से चमक उठी । यह क्रियात्मक होने का सर्वोत्कृष्ट उदाहरण है । मनुष्य को भी चाहिए कि इसी तरह क्रियाशील रहे । जब तक शरीर में श्वास रहे कर्म का पल्ला न छोड़े ।

सूर्य की ओर उसने फिर देखा तो उसे ऐसा मालूम हुआ कि जैसे उस तेजोमय प्रकाशपुंज में अचल के कान्तिमय मुख की

आकृति है। और ध्यान से देखने पर उसे मालूम हुआ कि ठीक वही है। वह जैसे कुछ कह रहा है। विराग के कानों में अचल के वे एक बार कहे हुए शब्द फिर गूँज उठे—“समाज के लिए व्यक्ति अपनी बलि दे दे, उसमें अपना अस्तित्व मिला दे यही उसका कर्तव्य है।”

इसी वक्त दस बारह मजदूर कमरे के दरवाजो पर आ खड़े हुए। एक ने कहा—“बहन हम लोगों की दशा बड़ी खराब है। आप हम लोगों की सुध ही नहीं लेती हैं, मिल मालिकों को फिर जोर सवार हुआ है, वे कहते हैं—हमें आधुनिक प्रबन्ध में बहुत नुकसान है। पहले के इतने मजदूर भी नहीं रहे। जो हैं उनके काम करने के घंटे बहुत थोड़े हैं और मजदूरी ज्यादा है। मजदूर लोग मिल मालिकों से बहुत गुस्ताखी का व्यवहार करते हैं और बात बात पर हड़ताल करने की धमकी देते हैं। वे लोग कहते हैं—हम इस तरह का रोजगार नहीं करना चाहते जिसमें अपने नौकरों से दबकर रहना पड़े। हम लोग उनके अन्नदाता हैं, वे हमारे नहीं हैं। इधर मजदूरों का रवैया ही बदलता चला जाता है वे किसी की आधी बात नहीं सुनना चाहते। कहते हैं इसमें मालिक नौकर की क्या बात है हम तुम्हारी बात क्यों सुनें। तुम हमें रुपया देते हो तो हम उसका सवाया तुम्हें काम करके देते हैं।”

दूसरे मजदूर ने कहा—“सभा की दशा बहुत खराब हो गई है। कोई ठीक से चन्दा नहीं देता है और जो कुछ जोर-जबर करके मिलता है वह सभा के काम करने वालों के पेट में

चला जाता है । आजकल दो चार बाबू लोग तिरछी टोपी और चश्मा लगाय के मजदूर सभा में घुस आए हैं, बातें तो वे लोग बड़ी लम्बी-चौड़ी हाँकते हैं पर कामधाम कुछ नहीं होता ।”

पहला मजदूर बोला—“ये सब कहानी सुनावै से कौन मतलब । जो साफ-साफ बात है सो सुनो बहन जी ! हम लोगन ने यह तय किया कि मालिकों के नए कायदों में हम लोग हर्गिज हर्गिजा काम नहीं करेंगे और अगर मालिक लोग अपनी बात पर अड़ेंगे तो हम लोग हड़ताल करेंगे । इसके वास्ते हम लोगों को सब तय्यारी करनी है । आप की राय हो तो इस काम की शुरूआत आज एक सभा करके करें ।”

विराग की दृष्टि अभी सूर्य की और से न हटी थी । उसने अपने हृदयस्थित ज्योतिर्मय अचल के मुख को सूर्य में भेली भाँति पहचानते हुए खड़ी होकर कहा—“चलो मैं तय्यार हूँ ।”

क्षितिज पर के उस सूर्य ने पृथ्वी को एक बार फिर अपनी लम्बी किरणों से प्रकाशमय कर दिया ।



